# आत्मिक साधन

सितम्बर 2009

Life Publishers International

## वि ष य - सू ची


1. **सुसमाचार में समाया तरस जो परिवर्तन लाता है** 3
   *द्वारा: बेरौन क्लाउस*
   *क्या सुसमाचार बिना उन समस्याओं पर गौर किये बगैर निरन्तर प्रभावशाली हो सकता है जिनका लोग अपने सामाजिक जीवन में सामना करते हैं? पुराने ज़माने का प्रश्न (और उसका जबाब) जिसमें कैन की आवाज़ आज भी गूँजती है। ''क्या में अपने भाई का रखवाला हूँ?''*

2. **परमेश्वर लोगों की परवाह करता है: लूका/प्रेरितों से पिन्तेकुस्टल दृष्टिकोण** 8
   *द्वारा: क्रेग एस कीनर*
   *हम सुसमाचार की शिक्षाओं का अध्ययन करके जो प्रारम्भिक कलीसिया की मार्गदर्शक थी, प्रारम्भिक कलीसिया की तरसपूर्ण मौलिक जीवन शैली को तथा हमारी जीवनशैली कैसी होनी चाहिए, को बेहतर समझ सकते हैं।*

3. **यहाँ से वहाँ पहुँचना: अपनी मण्डली में तरस की सेवकाई प्रारम्भ करना** 12
   *द्वारा: हेईडी रोनाल्ड उन्रुह व फिलिप एन ओल्सोन*
   *किस प्रकार की तरसपूर्ण सेवकाई आपको करनी चाहिए, और क्या आपकी कलीसिया इस काम में आपकी सहायता करेगी? जबकि कम्पैशन सेवकाई के लिए कोई सरल कदम नहीं है, यह व्यवहारिक लेख आपकी सही दिशा में अगुवाई करेंगे।*

4. **मेरे पासबान को जाने दो—कम्पैशन सेवकाई के लिए कलीसिया को बनाना और तैयार करना** 16
   *द्वारा: ब्रैड स्मिथ*
   *सैकड़ों उन्नत कलीसियाओं के बारे में अध्ययन करने के पश्चात्, तीन मुख्य सिद्धान्त सामने जाते हैं कि लोगों को तरसपूर्ण सेवा के लिए तैयार व विकसित किया जाए।*

5. **प्रचारकार्य व शिष्यता का चक्र: एक अनन्त प्रक्रिया** 20
   *द्वारा: रैन्डी हर्स्ट*
   *सुसमाचार प्रचार और शिष्यता एक ऐसा अनन्त चक्र है जिसके तहत उन लोगों तक पहुँचना व उन्हें प्रभु में बनाये रखना शामिल है, जो मसीह के अनन्त राज्य के नागरिक बनते हैं।*

6. **तरसपूर्ण सुसमाचार प्रचार** 22
   *द्वारा: जॉन लिन्डेल*

7. **मिश्रितकर्ता पात्र में जीवन: मिश्रित परिवारों की जरूरतों में सेवा निभाना** 23
   *द्वारा: डोनाल्ड आर पार्टरिज*
   *समाज के अन्दर बहुत कम ऐसे लोग हैं जो एकाभिभावक व पुन:विवाहित परिवार के सदस्यं की जरूरतों को पूरा करने में उपयुक्त साबित हो। क्या आपकी कलीसिया एकाभिभावक व पुन:विवाहित परिवारों में सेवा करने को प्राथमिकता देगी?*

8. **एक बनरबास बने, एक पौलुस को खोजें, एक तीमुथियुस को प्रशिक्षित करें** 28
   *द्वारा: पौल और मार्टिन*
   *खोजें कि किस प्रकार से सेवकाई में नये नियम से तीन-विकासशील सम्बन्ध पतित होते हुए सेवकों के बीच मुख्य कुँजी का काम करते हैं।*

एक किसान और उसका सोलह वर्षीय बेटा खेत को जोत रहे थे और अचानक किसान को घर से तुरन्त आने के लिए किसी ने पुकारा। अतः पिता ने ट्रैक्टर के द्वारा बेटे से अकेले ही खेत जोतने के लिए कहा। जाते वक्त किसान ने बेटे को स्पष्ट निर्देश दिये और कहा, ''बेटा खेत सीधी रेखा में जोतने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि खेत में किसी चीज़ को अपना निशाना मानकर सीधा उसी दिशा में ट्रैक्टर चलाना शुरू कर दो।''

पिता जब बीस मिनट के बाद वापस आया तो खेत में रेखाओं या मुंडेरों को देखकर परेशान हो गया। और बोला, ''बेटा, मैंने तुमसे कहा था कि सीधी रेखा में खेत जोतने की सही तरकीब यह है कि खेत में दूर रखे हुए किसी चीज़ को लक्ष्य बनाओ और फिर उसी दिशा में ट्रैक्टर चलाओ।''

उस लड़के ने रोते हुए जवाब दिया, ''पिताजी जैसा आपने मुझसे कहा मैंने ठीक वैसा ही किया, परन्तु खेत में खड़ी गाय एक जगह पर खड़ी ही नहीं हो रही थी।''

हो सकता है कि आप जवानों के साथ में सही चीज़ को निशाना बनाकर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई महसूस करते हों। आगे बढ़ने और ऊँचाई को छूने के प्रयास में आप सबसे बेहतर परमेश्वर को बता सकते हैं कि प्रभु हमारी आँखें आप पर लगी हैं और हमें आपकी कृपा की आवश्यकता है। वह कोई दूर रखी हुई वस्तु नहीं, बल्कि उसकी उपस्थिति हमारे नज़दीक पायी जाती है। अपनी दृष्टि को कठिन परिस्थितियों से हटाकर परमेश्वर पर लगायें।

**जॉर्ज ओ वुड**
*आपके हृदय में एक भजन*


# लाईफ पब्लीशर्स इन्टरनैशनल


© Copyright Life Publishers 2009


लाईफ पब्लीशर्स, स्प्रींगफील्ड, मिसोरी, यूएसए, द्वारा प्रकाशित


सर्वाधिकार आरक्षित।


अब आप ऑनलाइन 'आत्मिक साधन' को १२ भाषाओं में प्राप्त कर सकते हैं। 'आत्मिक साधन' की वैबसाइट तक पहुँचकर उचित झण्डे को दबाएं। आप अपनी मनचाही भाषा का चुनाव १२ भाषाओं में से कर सकते हैंः तमिल, बंगाली, मलयालम, हिन्दी, फ्रैंच, रूसी, रोमानिया, हग्रेन, क्रोटिएन, जर्मन, स्पैनिश, या यूक्रेन।

आप 'आत्मिक साधन' को ऑनलाइन पर पढ़ने का अवसर पा सकते हैं या आप अपनी सुविधानुसार फाइलों को डाऊनलोड भी कर सकते हैं। आप निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं: http://www.enrichmentjournal.ag.org

किसी प्रश्न के जवाब या अतिरिक्त जानकारी के लिए सम्पर्क करेः
EnrichmentJournal@lifePublishers.org.

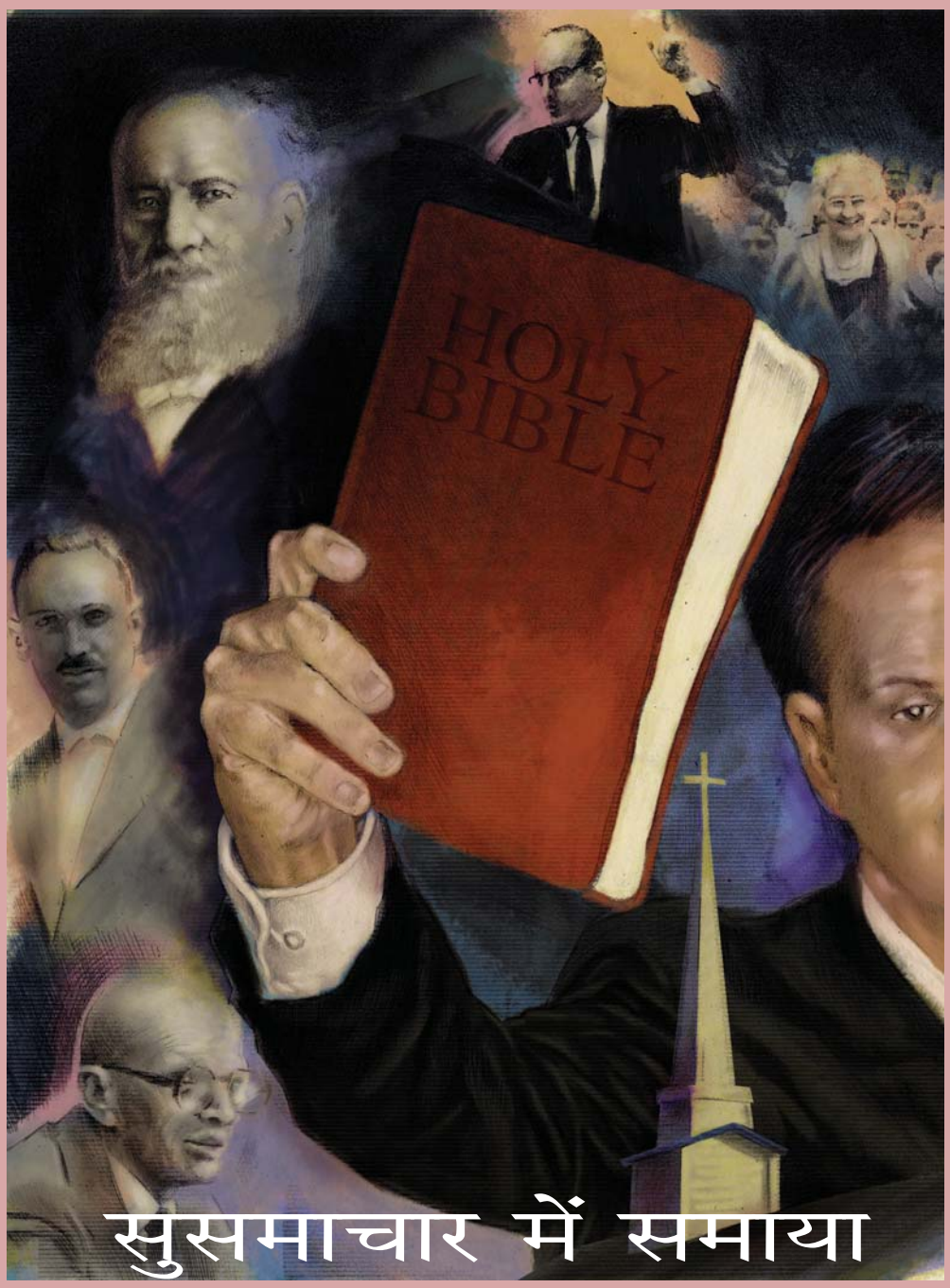


## सुसमाचार में समाया

# तरस जो परिवर्तन लाता है

द्वारा बेरौन. डी. क्लाउस

वर्तमान में सामने आनेवाली दुर्घटनाओं की सच्चाई को जो संसार को अत्याधिक प्रभावित कर रही हैं, इनको नज़रअन्दाज़ या इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। आँकड़े दर्शाते हैं कि सन 2005 तक, 160 लाख बच्चे अफ्रीका में एड्स के कारण अनाथ हो चुके हैं। लगभग 35,000 बच्चे महज़ जानकारी या पर्याप्त ज्ञान के अभाव के कारण, जैसे स्वच्छ पानी पीना, साफ–सफाई के कारण, रोकी जा सकने वाली बिमारियों की वज़ह से प्रतिदिन मर रहे हैं। एक बड़ा देह व्यापार गैर–पश्चिमी जगत के गरीब लोगों को अपना निशाना बना रहा है, जहाँ पर अभिभावक अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए अपनी सन्तानों को वैश्यावृति के लिए बेच देते हैं। अगले वर्ष में लाखों लोग इथोपिया में भूखे मर जायेंगे, इस तथ्य के विचार से ही एक मनुष्य होने के नाते हमारा हृदय टूट सकता है, लेकिन एक पिन्तेकुस्त मसीही होने के नाते हमारा सामुहिक तौर पर सहानुभूति दिखाना ही काफी नहीं है। हमारे सामने एक ऐसे अर्थपूर्ण व बाइबल आधारित प्रतिउत्तर की चुनौती है जो एक पिन्तेकुस्त होने के नाते हमारे इतिहास को ईमानदारी व सम्पूर्ण चेतना, और अमेरिकी मसीहियत की बड़ी तस्वीर में हमारे स्थान को प्रगट करता हो।

## हमारा ऐतिहासिक केन्द्र

प्रारम्भ से ही, एसेम्बली ऑफ गॉड ने खुद को 'संसार में महानतम सुसमाचार प्रचार कार्य के लिए समर्पित किया है'। हमको दिन ही दिन में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है क्योंकि ... जल्द ही वह रात आने वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 9:4)। क्योंकि हम यीशु मसीह के जल्द वापस आने पर विश्वास करते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के सशक्तिकरण तथा यीशु मसीह के पुन: आगमन पर विश्वास ने असेम्बली ऑफ गॉड के मिशन प्रयासों को स्थानीय कलीसियाएं स्थापित करने के लिए केन्द्रित किया।

***यह कहना चाहते हैं कि जिन लोगों ने संसार भर में सुसमाचार फैलाने के लिए अपने आप को समर्पित किया, वे गरीबी के शिकार होने के कारण, आत्माओं के प्रति तरस रखने में सुस्त हो गये, और यह अन्याय एक ऐतिहासिक गलती है।***

प्रारम्भिक पेन्टिकोस्टल लोग इस मुख्य केन्द्र बिन्दु के बारे में स्पष्टता से बताते हैं। सन् 1920 में जे. रोजवेल फ्लोवर ने *पेन्टिकोस्टल इवैन्जल* में लिखा कि ''पेन्टिकोस्टल आज्ञा केवल गवाह, *गवाह* और गवाह बनने के लिए है... अपने आप में भले कार्यों को करने के लिए अपने आपको उपलब्ध कराना आसान है, परन्तु जिन कार्यों का *स्तर पेन्टिकोस्टल* है उन्हें करना सहज नहीं है।''

असेम्बली ऑफ गॉड के मिशन रणनीतिज्ञ, एलिस ल्यूस, संक्षेप में पेन्टिकोस्टल केन्द्र बिन्दु के बारे में बताते हैं: जब हम सम्पूर्ण सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाहर जाते हैं तो, क्या हम दूसरे डिनोमिनेशन मिशनरियों के जैसे अनुभव प्राप्त करने की अपेक्षा रखते हैं, या हमें चिन्ह और चमत्कारों के होने की अपेक्षा रखते हैं, या हमें चिन्ह और चमत्कारों के होने की अपेक्षा करनी चाहिए?''

यह स्पष्ट है कि संसार में सुसमाचार सुनाने के लिए पेन्टिकोस्टल प्रयास उस तरह के प्रचारकीय कार्य पर केन्द्रित था जो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में होकर कलीसियाएं स्थापित करते हैं। यह तथ्य ऐतिहासिक रूप से भी समझने योग्य था कि क्यों यह सेवकाई का केन्द्र इतना मर्मभेदी था। 19वीं शताब्दी को लोग 'मसीही शताब्दी' के नाम से भी जानते हैं। 19वीं शताब्दी ने आधुनिक मिशन आन्दोलन को देखा और कार्यगति प्राप्त की तथा सफलता पायी। इसलिए इस महान मिशनरी प्रयास को, जिसने बड़ी ऊचाईयों को छुआ दुनिया भर में नई बस्तियां बसाने वाले सम्राज्य के रूप में देखा जाने लगा। दुनिया भर में कार्यरत इस मिशनरी प्रयास का मुख्य कार्य लोगों, को 'नागरिकता' प्रदान करना था जो लोगों को ''मसीहीयत'' में लाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा था। इस कारण, पुराने समय में स्कूल तथा अस्पताल की सेवाएं प्रदान की जाती थीं जो इस प्रक्रिया के पूरक थे।

जब ल्यूस ने 'सम्पूर्ण सुसमाचार' प्रचार करने के सम्बन्ध में अपने विचारों को जाहिर किया तो वह स्पष्टता से उन्नीसवीं शताब्दी के तरीके या रणनीति को बदलने अर्थात ''इमारतें बनाकर लोगों को बसाने'' के बजाय पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर व उसके द्वारा होने वाले चिन्ह व चमत्कारों पर भरोसा करके प्रभु के कार्य को पूर्ण करने हेतु आग्रह कर रही थीं।

पेन्तिकोस्तल लोगों ने मिशन प्रयासों के लिए इस 'मौलिक रणनीति' का स्वागत किया, कि मसीही शताब्दी छोटी हो गयी है। स्वर्गीय जे. फिलिप होगान ने कलीसियाओं की स्थापना के सम्बन्ध में कहा: बहुत से अनुभव हमें इन दिनों में यह शिक्षा देते हैं कि संसार की सफलतम प्रचारकीय कार्य करने वाली एक मात्र इकाई कलीसिया ही है। इसके साथ-साथ कलीसिया के कन्धों पर संसार भर में सुसमाचार प्रचार करने की जिम्मेदारी व आज्ञा भी है। कोई भी ऐसा खर्चा जिसका मूल या अन्तिम लक्ष्य कलीसिया या गवाह ठहरने के लिए कलीसिया की इमारत तक नहीं पहुँचता वह परमेश्वर की इच्छा नहीं है।

होगान के द्वारा कहे गये ये वाक्य न केवल पवित्र आत्मा के ईश्वरीय क्षेत्र में स्थापित स्थिति को दर्शाता है बल्कि अमेरिकन मसीहियत की बड़ी तस्वीर को भी प्रगट करता है। 19वीं शताब्दी के आखिरी वर्ष वह काल था जब यूरोपीय धार्मिक विचार अमेरिकी कलीसियाओं में प्रवेश किये। जिसे आगे चलकर ''आधुनिकीकरण/मूल विचारक'' के रूप में जाना गया, और जिस पर काफी वाद-विवाद चला। मसीहियों के मूल सिद्धान्त व विश्वास जैसे बाइबल का पालन, कुँवारी मरियम से जन्म, मसीह की ईश्वरीयता, मानवजाति के बदले प्रायश्चित तथा मसीह का पुनरुत्थान जैसे सिद्धान्त यूरोपीय शिक्षाओं के प्रभाव द्वारा नष्ट हो गये। इन चर्चाओं के परिणामस्वरूप, जो मसीही आत्माओं को जीतने पर अपना ध्यान लगाना चाहते थे तथा जो मसीही सामाजिक कार्यों व मिश्नरी प्रयासों के द्वारा सुसमाचार को फैलाना चाहते थे उनके बीच विचारों में फर्क आ गया था। अमेरिकन मसीहियों के बीच एक बड़ी क्रान्ति अपने पांव पसार रही थी जिसका आरम्भ स्कूप मन्की मुकद्दमे के दौरान 1925 में टेनिसी में हुआ था। आधुनिकवाद का आरम्भ बजाव पक्ष के वकील क्लेरेन्स डारो के द्वारा प्रारम्भ हुआ, जिनके लेख व बचाव की स्पष्टता के साथ सरकारी स्कूलों में शिक्षा प्रदान की गयी। मूल विचारकों/फन्डामैन्टलिस्ट की स्थिति पर विलियम जेनिग्स ब्रायन ने दलील दी, जिनके द्वारा न्यायालय में पेश की गयी दलील बिली सण्डे की सुसमाचार सभा जैसी सुनाई दी। पूरे राष्ट्र की निगाहें इस मुद्दे पर लगी थीं क्योंकि इसके द्वारा एक नये धार्मिक संगठन का आरम्भ होने पर था और जिसने सुसमाचार प्रदान व सामाजिक कार्यों के बीच संघर्ष को सबके सामने लाकर रखा जो अनोखा अमेरिकी अनुभव था। न्यायालय ने अमेरिकन मसीहियों के लिए उन पंक्तियों पर गौर किया और उसके मजबूत कदम उठाए, और यह तब तक नहीं हुआ था जब तक कि कार्ल एफ.एच. हेनरी ने 1947 'आधुनिक फण्डामैन्टालिज़्म के असमान्य विचार' को नहीं लिखा कि बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीही विस्तारपूर्ण तरीके से सुसमाचार का इस्तेमाल करने के लिए उत्साहित थे।'

## एक ईमानदार मूल्याँकन

अत: इस संक्षिप्त इतिहास सम्बन्धी अध्याय असेम्बली ऑफ गॉड तथा पेन्टिकोस्तल चर्च के लिए क्या मायने रखता है? सर्वप्रथम, हमें यह समझना जरूरी है कि हमारे मिशन का केन्द्र उन सुधारों के बीच में निर्माण किया गया

था जिन्हें परमेश्वर अपने प्रभुत्व में कलीसिया को देते हैं। एक 'मौलिक रणनीति' जो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर आधारित होती है, संसार भर में सुसमाचार प्रचारकार्य को सशक्त करने के लिए अति आवश्यक है। 20वीं शताब्दी उन बातों की गवाह है जिन्हें इतिहासकार वास्तव में ''1 पेन्तिकोस्तल शताब्दी का दर्जा देते हैं।'' 1900 ई. में, सम्पूर्ण संसार के मसीहियों में से केवल 5 प्रतिशत गैर-पश्चिमी थे। वर्तमान में संसार के मसीहियों में करीब दो तिहाई मसीही गैर-पश्चिमी हैं। किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाये तो पेन्टिकोस्टल रणनीति, जिसकी चर्चा एलिस ल्यूस ने की थी, सर्वाधिक प्रभावशाली रही।

हमें यह भी जानना जरूरी है कि हमारी ''मौलिक रणनीति'' अमेरिकी मसीहियों के बीच चल रहे वादविवाद के बीच प्रत्यक्ष में आयी, जबकि पेन्टिकोस्टल-वाद अपने प्राम्भिक दौर पर था। आधुनिक वाद-मूल धारणा रखने वालों के बीच विवाद का परिणाम, सुसमाचार की रणनीति व सामाजिक कार्यों में बँट गया। क्योंकि हमारे सिद्धांतिक विचार मूल मसीहीयत से मेल खाते थे, तो यह समझा जा सकता है कि असेम्बली ऑफ गॉड ने ज़्यादा ध्यान प्राथमिक तौर पर सिद्ध शिक्षाओं, तथा आत्मा द्वारा शक्ति प्राप्त प्रचारकीय कार्यों के प्रयास से लोगों के उद्धार पर दिया।

हाँलाकि, यह कहना चाहते हैं कि जिन लागों ने संसार भर में सुमाचार फैलाने के लिए अपने आप को समर्पित किया था वे गरीबी के शिकार होने के कारण इन आत्माओं के प्रति तरस रखने में सुस्त हो गये, और जो अन्याय उन लागों के साथ हुआ वह एक ऐतिहासिक गलती है। अमेरिकन सिविल युद्ध के पश्चात बहुतायत से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग शहरी क्षेत्रों में तब्दील होने लगे। पश्चिमी व उत्तरी युरोप से बहुतायत से लोगों के स्थानान्तरित होने के कारण, आर्थिक जगत का औद्योगिकरण व लोगों के आगमन से शहरी इलाकों की हालत दयनीय हो गयी। इग्लैण्ड के सैलवेशन आर्मी के तरीके का अनुसरण करते हुए, इवैन्जलिकल्स सेवकाइयों ने अमेरिकन झुग्गियों में काम करना शुरू कर दिया और उन्होंने मुसीबत में पड़े लोगों की सामाजिक स्तर पर सहायता करना व उनके लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना शुरू कर दिया। जो उस समय की सच्चाई थी। उन्होंने पियक्कड़ों के लिए वैश्याओं के लिए, तपैदिक से पीड़ित लोगों के लिए घर बनाये। सण्डे स्कूल ने उन बच्चों की देखभाल की जिनके माँ बाप सप्ताह में सातों दिन काम किया करते थे और कारखाने इन क्षेत्रों की मज़बूती का आधार थे।

प्रारम्भिक प्रभावशाली लोगों में से एक, जिसका प्रभाव असेम्बलीऑफ गॉड पर पड़ा वह ए.बी. सिमसन और उनका मसीही और मिश्नरी संगठन था। सिमसन ने न केवल पेन्टिकोस्टलो को अपने चहुँमुँखी-सुसमाचार के संदेशों से प्रभावित किया बल्कि उन्होंने उत्साहित सुसमाचार, ईश्वरीय चंगाई की पुष्टि, तथा यीशु मसीह के शीघ्र पुन: आगमन के बीच सम्बन्ध को भी प्रगट किया। सिमसन नें जिन आत्मिक सभाओं का पूर्वी अमेरिका में संचालन किया था, ये बाइबल के बुनियादी तत्व उस आत्मिक सभा की सामाजिक जरूरतों को पूरा करने हेतु जान बूझकर जोड़े गये थे। सन् 1893 में सिमसन ने सुसमाचार प्रचार के अनोखे मिश्रण और ''तरस की सेवकाई'' को आपस में यह कहते हुए जोड़ा कि ''केवल परमेश्वर की आराधना करने के लिए, व्यवस्था की सच्चाई बयान करने के लिए, और खोये हुए को सुसमाचार सुनाने की ही नहीं परन्तु मानव प्रेम व मनुष्य लाभ के लिए प्रत्येक व्यवहारिक पहलू पर कार्य करने के लिए स्थान है। इसे परमेश्वर की कलीसिया की प्रतिष्ठा या गरिमा को बनाये रखा कहा जा सकता है; भूतकाल में बहुसंख्य लोगों या अलग-अलग घटनाओं में किये गये आक्रामक कार्य ने हर स्तर के पापी मनुष्यों का खुले रूप से स्वागत किया; यीशु मसीह के नाम से बीमारों के लिए चंगाई की संवकाई निभाई गयी, सामाजिक सेवा के तौर पर लोगों के लिए अति उत्तम संसाधनों का इन्तज़ाम किया गया, बेरोज़गारों के लिए कार्यस्थल खोले गये, अनाथों के लिए घर, असहायों के लिए स्थान बनाये गये। और इससे बढ़कर और कोई काम परमेश्वर को महिमा नहीं दे सकता कि एक कलीसिया आगे बढ़कर ऐसे कार्यों को अपने हाथ में ले और उसे सम्पूर्ण करें।''

प्रारम्भिक पेन्टिकोस्टल सेवकाइयों ने ए.बी. सिमसन की प्राथमिकताओं को अपनी सेवकाइयों में स्थान दिया। बहुत सी पहली पेन्टिकोस्टल महिलाएं जो 19 वी शताब्दी के अन्त में पवित्रता आन्दोलन के दौरान मिश्नरी के रूप में बुलाई गयी थी जोश से भरी हुई अविवाहित स्त्रियाँ थी। उन्हीं में से एक मिनी अब्राहम थी जिन्होंने भारत में सेवा की। उसने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त होने के पश्चात एक छोटी पुस्तिका लिखी जिसका नाम ''पवित्र आत्मा और आग'' में बपतिस्मा था और जिसने जिले में पवित्र आत्मा के मतलब को जड़ पकड़ने में सहायता की। उनकी मृत्यु तक अब्राहम का कार्य, विधवाओं, अनाथों के साथ-साथ अनछुए लोगों तक सुसमाचार पहुँचाना रहा।

लिलिअन ट्रेशर ने अपना सारा प्रौढ़ जीवन मिस्र में वहाँ की विधवाओं और अनाथों की सेवा करते हुए बिता दिया। उनकी 50 वर्षों की सेवकाई के दौरान वह ऐसिआउट अनाथालय में खोयी हुई आत्माओं को जीतने तथा हज़ारों लोगों की तरस के साथ सेवा करने में लिप्त थी। फ्लोरेन्स स्टीडल ने लाइबीरिया में कुष्ठ रोगियों की देखभाल की। सुसमाचार प्रचार, तरस, तथा आर्थिक रूप से सशक्तिकरण प्रदान करने को मिलाकर स्टीडल ने असेम्बली ऑफ गॉड के इतिहास में प्रभावशाली सेवकाईयों में से एक सेवकाई की स्थापना की। जौर्ज व कैरी जूड मोन्टगोमेरी की सेवकाई में सुसमाचार प्रचार के साथ चंगाई, अनाथों की सेवा व लड़कियों के लिए एक मुक्ति का स्थान शामिल था।

आत्मा और दैहिक कार्यों को मिश्रित कर सेवा निभाने के सबसे वर्तमान उदाहरण कोलकाता में मार्क और हयूल्डा बन्टैन और लगभग वैसे ही ''लैटिन अमेरिकन चाइल्ड केयर'', जिसके संस्थापक जौन व लोइस बूइनों हैं, कहे जा सकते हैं।

फिर भी प्रश्न अपनी जगह पर स्थिर हैं कि असेम्बली ऑफ गॉड के महत्व को कहाँ स्थान दिया जा सकता है। सम्पूर्ण संसार में सुसमाचार प्रचार करने का हमारा ऐतिहासिक समर्पण, सार्वभौमिक रूप से हमारे मिशन और सेवकाई के प्रयासों का केन्द्र बिन्दु रहा है। फिर भी बहुत से ऐसे पेन्तिकोस्टल लोगों के उदाहरण हैं जिन्होंने स्वयं को सुसमाचार प्रचार व सामाजिक सेवकाइयों हेतू अमेरिकन ऐतिहासिक मत विभाजन से दूर रखा। अत: हमें ऐसे वास्तविक व सच्ची बातों का लेखा रखना चाहिये, ऐसे विश्व-व्यापक चुनौतियाँ जो आज एक दशक के पश्चात् हमारे सामने खड़े हैं।

फसल के सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर ने एक पेन्तिकोस्तल जागृति को लाकर 19 वीं शताब्दी के मिश्नरी आन्दोलन में एक सामर्थी संशोधन किया, जिसकी वजह से 20 वीं शताब्दी तक मसीहियों में ऐसी उन्नति होती रही जो अभूतपूर्व है। अकाल, एड्स की महामारी, आर्थिक मार, लड़ाई, और झगड़ों के बीच में फसल के स्वामी पिता परमेश्वर को पेन्तिकोस्टल कलीसियाओं से और अधिक प्रभावशाली ठंग से सेवा करने के लिए क्या कहने की आवश्यकता थी?

गैर-पास्वांत्य संसार में पवित्र आत्मा के बपतिस्में की सामर्थ्य ही, बहुत से लोगों के जीवन में योग्य जीवन के निमित्त आशा व सम्भवता का सोत्र बनी है। हमें उन पेन्टिकोस्टल भाई व बहनों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिये

जिनकी सशक्तिकरण को लेकर समझ, जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे में समायी हुई थी और त्रासदियों, गरीबी, अन्याय और निराशा के बीच और ज़्यादा शुद्ध व प्रभावशाली होती चली गयी। प्यूरटो रिको से एक असेम्बली ऑफ गॉड के विद्वान एल्विन विलाफेन संक्षिप्त में कहते हैं: ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसी भी मनुष्य को अपने हियाव द्वारा दूसरे विश्वासी की सेवा करने के लिए, अति उच्च स्तर पर व्यक्तिगत कराने के लिए प्रगट होता है। पेन्टिकोस्टल कलीसियाओं के पास अपनी ज़िन्दगी में उठने वाले प्रत्येक संघर्ष का सामना करने हेतु संसाधन उपलब्ध होते हैं। यदि आत्मा में बपतिस्मा का उद्देश्य मसीह के मिशन (कार्यों) को पूरा करना है तो, हमारे सामने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की कार्य रुपी व भविष्यसूचक भूमिका को अपनाने की चुनौती है।'' साधारण रूप से कहें तो, विलाफेन का कहना है कि हम हमारे जीवन की अति विकट परिस्थितियों में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे पर आधारित हो सकते हैं। किसी भी ज़रूरत के स्तर की या आशा में बाधा की परवाह किये बगैर हम पवित्र आत्मा की सामर्थ पर भरोसा कर सकते हैं जो हर चुनौती के दौरान राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की सामर्थ में उपलब्ध हैं।

एक भारतीय पेन्टिकोस्टल अपने दृष्टिकोण से इस प्रकार से कहते हैं जिन जगहों पर सामाजिक समस्याएं आम ज़िन्दगी का हिस्सा है वहाँ पवित्र आत्मा सशक्तिकरण प्रयाप्त मात्रा में होना चाहिये। वह कहते हैं कि ''पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में एक साधारण व्यक्ति एक धर्मी समाज की, जो मानवीय प्रेम से भरा, शान्तिमय, व धार्मिक होता है, निर्माण करने का आत्मविश्वास प्राप्त करता है। यदि हम भारत को मसीह के लिए जीतना चाहते हैं, तो हमें अपनी कमर कसकर संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा। आइये हम अछूतों, पिछड़े लोगों, वैश्याओं व उनके ग्राहकों, उन बच्चों के लिए जिनका बचपन छिन गया है, लड़ाई लड़ें। इस समय की ज़रूरत ऐसे सामाजिक तौर पर सक्रिय मसीही है जो संसार द्वारा हम पर थोपी गयी पीड़ाओं की चुनौतियों को स्वीकार कर सके।''

हम पेन्टिकोस्टल लोगों अलग-अलग सेवकाइयों का सामाजिक पहचान धारण करते देख सकते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि इन भाई या बहनों के प्रकाशन हम अमेरिकियों के लिए भविष्यसूचक वाणी हो?

## 21 शताब्दी की चुनौतियों का मार्गदर्शन करने हेतू बुनियाद

पेन्टिकोस्टलों ने स्पष्ट समझ व सेवकाई की बुनियादी बातों के लिए हमेशा बाइबल का सहारा लिया है। सुसमाचार विशिष्ट रूप से व्यक्तिगत है, क्योंकि हर जन का परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत रूप में सामना करना तथा उसे स्वीकार या अस्वीकार करना अति आवश्यक है। परन्तु जब सुसमाचार किसी व्यक्ति को परिवर्तित करता है; तो उसमें कुछ बदलाव होते हैं जो सामाजिक हैं। हर एक मनुष्य सामाजिक परिस्थियों का एक हिस्सा है, और बाइबल भी इस बारे में स्पष्ट कहती है कि 'अपने साथ रहने वाले भाइयों को नफ़रत करते रहने के साथ-साथ परमेश्वर को प्रेम करना असम्भव है' (1 यूहन्ना 4:20, 21)। सुसमाचार के द्वारा हुआ परिवर्तन सामाजिक होता है, क्योंकि परमेश्वर की उद्धार देने वाली दया सामाजिक परिस्थितियों में प्रगट होती है, उससे अलग नहीं। इस संगम को सुसमाचार में समझने के लिए कोई ''सामाजिक सुसमाचार'' नहीं है। यह पापी मनुष्य का उद्धार करने व बहुतायत से क्षमा करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है (इब्रानियों 7:25)।

इसके अलावा भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में हमें स्पष्ट होना चाहिये, हमें परमेश्वर के राज्य के बाइबलानुसार सन्दर्भ व अन्त समय (ऐस्काटोलोजी) के बीच सम्बन्ध को लेकर स्पष्ट होना चाहिये। क्रोआटेन पेन्टिकोस्टल पीटर कुज़मिक इन विषयिक दुविधाओं पर प्रकाश डालते हैं। कुज़मिक का कहना हैं कि इवैन्ज़लिकलस (जिसमें पेन्टिकोस्टल भी शामिल हैं) की पुश्तैनी मानसिकता है कि वह किसी भी पेचिदा विषय को कुछ ज़्यादा ही आसान बना देते हैं जिसमें परमेश्वर के राज्य को लेकर यीशु मसीह की शिक्षा भी शामिल है। कुज़मिक हमें सलाह देते हैं कि वर्तमान और भविष्य को अलग न किया जाय। जबकि हम ऐसे समय में रहते हैं जो ''पहले ही पूर्ण हो गया'' और ''जो अभी तक नहीं हुआ है'' यीशु मसीह का प्रथम आगमन सुसमाचार की एक निश्चित शिक्षा है। यीशु मसीह में ही भविष्य का आरम्भ हुआ और जिसका अन्त निश्चित है। कलीसिया की एक ऐसे स्थान के रूप में स्थापना के साथ जहाँ आत्मा निवास करती है, मसीह की विजय ने एक इस बन्धुता संसार के अन्दर छुटकारा पाये हुए लोगों ने एक इस बन्धुवा संसार के अन्दर छुटकारा पाये हुए लोगों की तस्वीर को प्रदर्शित किया है (2 कुरिन्थियों 5:17-20)। कुज़मिक कहते हैं कि पहाड़ी उपदेशों के मूल अभिप्राय या अन्य नैतिक जीवन से सम्बन्धित अन्य बाइबल के अनुच्छेदों को नज़रअन्दाज करना, सुसमाचार की पूर्ण सामर्थ्य व उसके वर्तमान इस्तेमाल के बीच दरार डालने का प्रयत्न करता है। अर्जेन्टीना के एक इवैन्जलीकल विद्वान रेने पाडिल्ला की बात का हवाला देते हुए, कुज़मिक तर्क देते हैं कि ''अगर हम बाइबल की शिक्षाओं के आधार पर देखें तो हमारे 'दूसरी सांसारिकता' का कोई स्थान नहीं है जिसका परिणाम, पड़ोसी के प्रति मसीही समर्पण नहीं होता, जो सुसमाचार में जड़ पकड़ा है। ऐसे किसी आकड़े या गणना के लिए कोई स्थान नहीं है, कि कितने लोग प्रति मिनट मसीह के बारे में जाने बगैर ही मर जाते हैं, यदि वे इस बात का लेखा नहीं रख सकते कि मरने वालों में से कितने लोग भूख की वजह से मर जाते हैं। ऐसे प्रचार की ज़रूरत नहीं है जैसा कि उस कहानी के आधार पर माने कि एक आदमी यरीहो के मार्ग पर चोगे द्वारा घात किया हुआ पड़ा है और प्रचारक उसके अन्दर केवल आत्मा को ही देख पाता है कि वह कैसे भी उद्धार पाये परन्तु वह उस आदमी को नज़रअन्दाज कर देता है।''

भविष्य के प्रति हमारा दृष्टिकोण वर्तमान में हमारी जीवनशैली पर प्रभाव डालता है। मसीह का राज्य हमारे वर्तमान सांसारिक स्थान व पद की सभालोचना करते हुए हमें छुड़ाए गये लोग करके बुलाता है, ताकि वह हमें दिखा सके कि हमारा आनेवाला भविष्य कैसा होगा। इसके बजाय आइये हम तरस और सुसमाचार के मुद्दे को इस भय के साथ देखें कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा ऐतिहासिक प्रचारकीय समर्पण उदासीन न हो जाये, मैं दूसरे शब्दों में इस बात को इस आशा से देखूंगा सुसमाचार प्रचार करने की सेवा और अधिक प्रभावशाली हो सके। सार्वभौगिक तौर पर दबाव डालती हुई ज़रूरतों व समाज की स्वाभाविक गिरावट हमें अपने प्रयासों को और चमकाने की इच्छा से नम्रतापूर्वक परमेश्वर के सम्मुख आने को मज़बूर करती है। क्षितिज को लेकर आलोचनात्मक प्रश्न। क्या सामाजिक कार्यों पर ज़्यादा ध्यान देने से हमारा प्रचारकीय कार्य उदासीन हो जाएगा? क्या प्रचारकीय कार्य तब भी लगातार प्रभावशाली बना रह सकता है यदि हम समाज के लोगों पर पड़ने वाली रोजमर्रा की समस्याओं पर ध्यान न दें? पुराने समय में पूछा गया कैन का प्रश्न आज भी तीखा है: क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ? (उत्पत्ति 4:9)। क्या मसीहियों को उन्नति मसीहियों को सम्पूर्ण संसार में विद्यमान मानव-जाति के प्रति अधिक ज़िम्मेदार होने के लिए बुलाती है? क्या विश्वास पर आधारित संस्थाएं अपनी सेवकाई व सरकारी संगठनों के कानूनों के प्रति, जिनसे उन्हें आर्थिक मदद मिलती है सच्चे बने रह सकते हैं? जिस तरह से सैकड़ों वर्षों पूर्व हमारे पेन्टिकोस्टेल

प्रवर्तकों ने अनेकों मुश्किल सवालों का सामना किया, जैसे, किस तरह आत्मा के बपतिस्मे, आत्मा की सामर्थ्य में सेवकाई, तथा उस समय की आपातकालीन परिस्थितियों ने संसार के प्रचार कार्य पर प्रभाव डाला, ठीक उसी तरह आज हमें वर्तमान मुद्दों पर उठने वाले प्रश्नों का जवाब गम्भीरता के साथ धार्मिक ज्ञान के प्रकाशन के अन्तर्गत देना चाहिये।

हमने फायदे के साथ पुन: मूल्याँकन में प्रवेश किया है। संसार भर में असेम्बली ऑफ गॉड की प्रत्यक्ष बढ़ौतरी ने बढ़ौतरी का बड़ा हिस्सा पिछले लोगों व दो तिहाई संसार के शिकार बने लोगों के बीच देख है। हम गरीबों के बीच सेवा करने वाली कलीसियाएं रहे हैं, और हमारी स्थानीय कलीसियाएं स्थानीय लोगों की उनकी समस्याओं को दूर करने में उनकी ज़रूरतों को पूरा करने में भरसक प्रयत्न करती रही हैं। असेम्बली ऑफ गॉड ने गरीबों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को कभी नहीं त्यागा। स्वर्गीय श्री. जे. फिलिप होगान ने संक्षिप्त में हमारे स्थान के बारे में कहा: ''हमने करोड़ों डॉलरों और अनगिनत समर्पित लोगों को निराहारों को भोजन खिलाने, गरीबों को कपड़ा देने, बेघर लोगों को घर देने, बच्चों को शिक्षा देने, अयोग्य प्रौढ़ों को शिक्षा देने तथा सभी आयु के लोगों स्वास्थ्य सम्बन्धी सहायता देने के लिए समर्पित कर दिया है। हमने हमेशा प्राकृतिक त्रासदियों से संघर्ष करने वाले विदेशियों की जैसे, भूकम्प, बाढ़ या प्रचंड चक्रवात, सहायता बढ़ चढ़ कर की है। फैलोशिप ओवरसीज़ एफर्ट का डायरेक्टर होने के नाते, मैं संसार को यह बताना चाहता हूँ कि हम इन कामों को इसलिए करते हैं क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने भी इन कार्यों को किया है। हम लोगों को इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि यीशु मसीह ने उन्हें प्रेम किया। हमारे पास इसके अलावा और कोई मकसद नहीं है। हमारे सहायतार्थ प्रयास कभी सुसमाचार की गवाही से अलग नहीं हो सकते।''

जैसे हम पुन:शुद्धिकरण के इस काल में प्रवेश करते हैं, आदरणीय मेल्विन होग्स की सिद्ध बातें ध्यान योग्य हैं। स्पष्ट रूप से असेम्बली औफ गॉड के सर्वाधिक माने हुए मिशन कार्यों को अन्जाम देने वाले, वह सामान्य तौर से स्थानीय व स्वाधीन कलीसियाओं को शुरू करने व निर्माणकार्य में संलग्न है। फिर भी, होज़ जिन्होंने सेन्ट्रल अमेरिका में पी सैन्ट राजद्रोह के समय गरीबों के बीच जीवन व्यतीत किया और कार्य किया, इन वाक्यों के द्वारा सामाजिक जगत पर गहरा प्रभाव डालते हैं कि ''मसीही लोग स्वाभाविक रूप में धार्मिकता से प्रेम करते तथा अधर्म से घृणा करते हैं। इसलिए हर एक लायक काम को करने के लिए वे महारथी होंगे और मानवजाति में भले कार्यों को प्रगट करने का भरसक प्रयत्न करेंगे।'' होज़ इस वाक्य को अधिकतर कहा करते थे ''लोग केवल कान वाली आत्माएं नहीं हैं।''

कलीसियाओं की शिक्षा व उसके मिशन में, होज़ ने सामाजिक कार्य व देखरेख के लिए नियम स्थापित किये। उन निर्देशों में से कुछ निम्नलिखित हैं:

- अपनी योग्यता के अनुसार हमें लोगों में परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करना है व उनकी सहायता करनी है। परमेश्वर चाहता है कि हम परमेश्वर के फलदायक प्रेम को प्रकट करें।
- स्थानीय कलीसिया सारी सामाजिक गतिविधियों व सेवा का मुख्य केन्द्र है।
- सामाजिक तौर पर की जाने वाली कोई भी सहायता या कार्य, लोगों को मुख्य संदेश अर्थात यीशु मसीह के लहू के द्वारा छुटकारा है की ओर मार्गदर्शन करता हो।
- हमारी सामाजिक सेवकाई अस्वीकारिय नहीं होनी चाहिये। हमें निश्चित करना कि हमारी सेवकाई सच्ची ज़रूरतों को पूरा कर रही है। हमें असाम्प्रदायिक संगठनों से किसी प्रकार की प्रतिस्पर्द्धा में नहीं फंसना है।
- हमें लोगों की खुद की सहायता करने में सहायता करनी है।
- हमें हमेशा यह बात याद रखनी चाहिये कि केवल वही कार्य जो हम मानवजाति के छुटकारे के लिए कर रहे हैं; अनन्तता तक स्थिर रहेंगे।

सामाजिक सेवा के लिए होज़ की एक संक्षिप्त घोषणा थी कि ''यह बात प्रमाणिक है कि इवैन्जलिकल्स सब मनुष्यों के लिए चिन्ता या ख्याल करते हैं। फिर भी, मनुष्य की आत्मिक ज़रूरत को प्राथमिकता दी गयी है क्योंकि इसके द्वारा मनुष्य की आशीष के सारे द्वार खुल जाते हैं। इवैन्जलिकल यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रवचन व कार्यों द्वारा, लोगों तक पहुँचाने को अपना उद्देश्य मानते हैं, अत: उनके 'प्रकाश को और चमकने दो' ताकि लोग उनके भले कार्यों को देखकर मसीह की ओर खिच सकें।''(मत्ती 5:16)

असेम्बली ऑफ गॉड के मिसियोलोजिस्ट डोउग पीटरसन ने 'न तो बल से न शक्ति से' नामक पुस्तिका लिखकर लैटिन अमेरिका के गरीबों में अपने कार्य का इस्तेमाल किया। उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति जो इस तरस की सेवकाई में शामिल होना चाहिये, जो कि सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित करने वाला सामना होता है और जिसकी वजह से कोई भी मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार चलने वाला बन जाता है। यह आत्मिक मौलिक बदलाव, जो मनुष्य के जीवन में होता है, मनुष्य को पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरे हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में धकेल देता है ताकि वह विश्वासियों के स्थानीय समाज द्वारा, गरीबों की ओर से ज़िम्मेदार भूमिका निभा सकें। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, परमेश्वर के अनुग्रह को प्रगट करता है, जिसके तहत एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ मुलाकात के मतलब को लोगों के बीच बताने के योग्य हो जाता है। सामाजिक सन्दर्भ में कार्य करने वाले पेन्टिकोस्टल विश्वासी अपने आप को, अपनी ज़रूरतों को न बताने के स्थान पर पाते हैं, दूसरे शब्दों में यह अतिरिक्त सुन्दर बनाने का स्थान है जहाँ पर सुसमाचार की बदलने वाली सामर्थ्य पेन्टिकोस्टल समुदाय के द्वारा प्रत्यक्ष रूप में, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण साक्षी के द्वारा, या आत्मा से परिपूर्ण कार्यों के द्वारा जो अनन्तता, व हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवन परिवर्तन करने वाले सुसमाचार को प्रगट करते हैं। कष्ट सह रहे लोगों की पीड़ा को कभी नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता है। परन्तु क्या जाने यह हमारे लिए एक सुन्दर खुला अवसर हो जिसमें हम जीवन की सड़क पर पीछे छूटे हुए लोगों को यीशु मसीह का जीवन परिवर्तन करने वाला अद्भुत संदेश सुना सकें? यदि हम उस राज्य के सम्पूर्ण नियमों के अनुसार जीवन जीते हैं, जिसके अधिकार में हम बातों व चिन्हों द्वारा जीते हैं- तो हम लगातार उस सर्वोत्तम सुसमाचार प्रचार कार्य को देखते रहेंगे जिसे संसार ने अभी तक नहीं देखा। ■

**बेरौन. डी क्लाउस,** D. Min.
असेम्बली ऑफ गॉड थिओलोजिकल सेमिनरी, स्प्रिंग फील्ड, मिसूरी के अध्यक्ष हैं।

# परमेश्वर लोगों की परवाह करता है:

## लूका/प्रेरितों से पिन्तेकुस्तल दृष्टिकोण

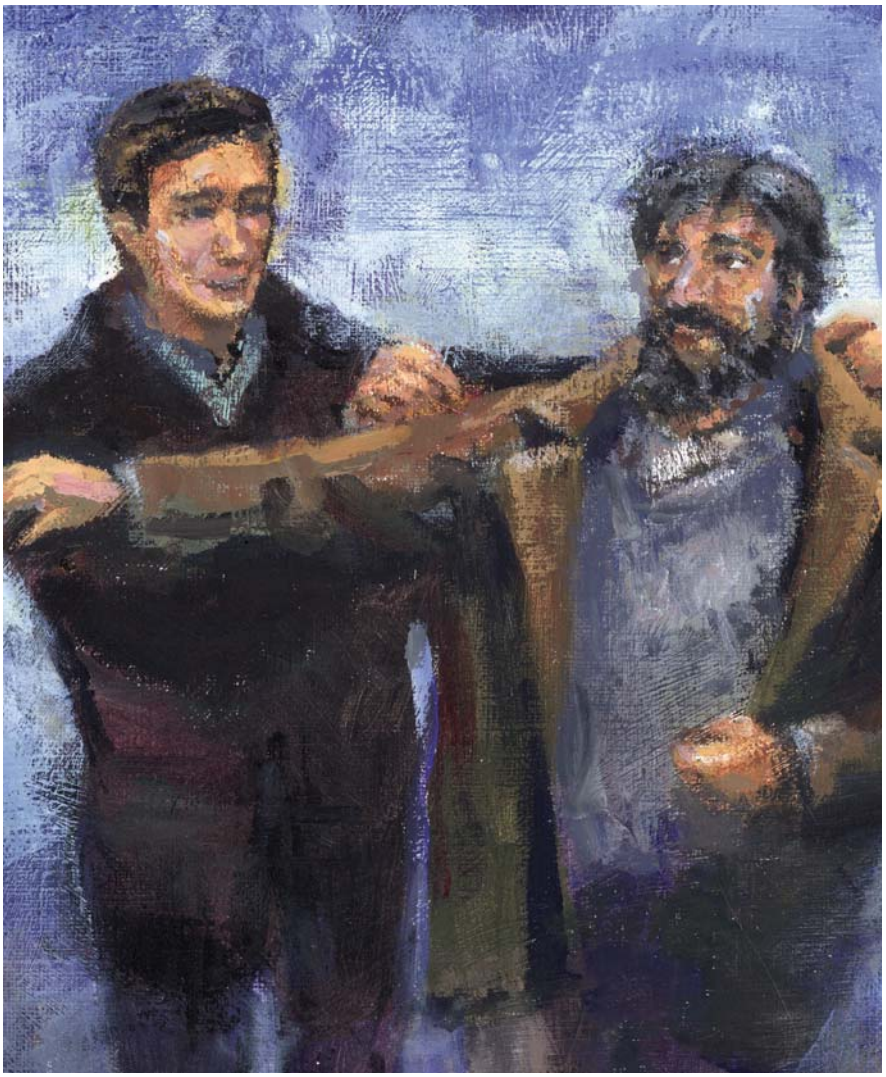

*एवरेस्ट और ऐस्तरकुक पश्चिमी अमेरिका से सेवानिवृत पेन्तिकोस्टल चर्च स्थापित करने वाले थे। मैं उनसे तब मिला जब वह ब्रदर कुक की पेंशन के द्वारा स्प्रिंगफील्ड (मिसूरी) विक्ट्री मिशन चला रहे थे। उन्होंने बहुत से सेन्ट्रल बाइबल कालेज के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया, जिसमें मैं भी एक हूँ। मैंने मिशन कार्य में सहायता की, उन बातों को व्यवहार में लाते हुए जिन्हें मैंने बाइबल और शैन सिल्डर के लेख 'भूख के दौर में धनी मसीही' से सीखा था।*

**द्वारा- क्रेग एस. कीनर**

पिन्तेकुस्त के दिन के प्रारम्भ से लेकर—गरीबों के बीच में सेवा करने पर पिन्तेकोस्टल विश्वासियों का खास ध्यान रहा है। परमेश्वर की आत्मा के उण्डेले जाने तथा पतरस के पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार करने के पश्चात, मसीही लोग आत्मा के चलाये जीवन व्यतीत करने लगे (प्रेरितों 2:41-47)। इस जीवन में केवल चिन्ह और चमत्कार, सामूहिक प्रार्थना प्रेरितों की शिक्षा के प्रति भक्ति ही नहीं परन्तु आपस में बातों का आदान-प्रदान तथा सेवा करने की मौलिक रूप से परिवर्तित जीवन शैली शामिल थी। क्योंकि ये मसीही लोग अपने संगी भाइयों को अपनी सम्पत्ति से ज्यादा प्रेम किया करते थे इसलिए वे अपने भाइयों की ज़रूरत को पूरा करने के लिए अपनी सम्पत्ति को भी बेच देते थे (प्रेरितों 2:44)। जब कोई जरूरतमन्द होता, तो जिन लोगों को पास अपनी जरूरत से बढ़कर हुआ करता था, वे उसे बेचकर दूसरे की जरूरत को पूरा किया करते थे (2:45)। जब हम प्रेरितों 2:42 में *कोईनोनिया* (संगति) के बारे में पढ़ते हैं, हम बहुत सी बार सोचते हैं कि इसका अर्थ केवल कलीसिया की सभा समाप्त हो जाने के पश्चात बातें करना है (जो असल में अच्छा भी लगता है) परन्तु प्रारम्भिक कलीसिया की संगति मात्र बात चीत से बढ़कर लोगों के जीवन व उनकी जरूरतों में गहराई से शामिल होना थी। यूनानी भाषा में कोईनोनिया शब्द पुराने समय के व्यापारिक दस्तावेजों में आर्थिक सहभागिता या आपस में बाँटने के तहत नज़र आता है, और कुछ इसी तरह के मायने हम नये नियम में भी देख सकते हैं (2 कुरिन्थियों 8:4, 9:13)। पौलूस साधारणत: सम्बन्धित क्रिया का इस मायनों में इस्तेमाल करता था (रोमियों 12:13; 15:27; गलातियों 6:6; फिलिप्पियों 4:15)।

कलीसिया ने सताव सहने के पश्चात, परमेश्वर से चिन्ह व चमत्कारों की पुष्टि करने के द्वारा हियाव देने के लिये प्रार्थना की, और परमेश्वर ने अपना ताज़ा आत्मा उन पर उण्डेला। परमेश्वर द्वारा आत्मा उण्डेलने का एक खास कारण यह भी था कि वे लोग अपने बीच में पाये जाने वाले जरूरतमन्द लोगों का ख्याल करने वाले थे (4:31-37)। गरीब लोगों की देखभाल

करने का सिलसिला प्रेरितों की पुस्तक में लगातार चलता रहा (उदा. 9:35, 39), उन्होंने उसी शहर में रहने वाले दूसरे मसीहियों की सेवा करने हेतू उन्होंने संस्कृति की सीमाओं को लाँघा (6:1-6) तथा भौगोलिक रूप में दूसरे स्थानों पर रहने वाले मसीहियों पर अपनी सेवा निभाने हेतू वे अपने शहरों से बाहर गये (11:29,30; 24:17)। यद्यपि इस सेवा को प्रेरितों में प्राप्त सहकर्मियों के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए था, फिर भी इस प्रकार की सेवा बिना किसी रूकावट के प्रेरितों के काम की पुस्तक से कहीं आगे गयी (उदा. याकूब 5:4,5, आमोस 2:1)। दूसरी शताब्दी के आते आते धनी पागानी लोग मसीहियों का न केवल अपने गरीब लोगों की देखभाल करने, बल्कि पागानियों की भी देखभाल के लिए मज़ाक बनाने लगे। जबकि धनी पागानियों ने यह शिकायत करना प्रारम्भ किया कि कलीसिया उनके गरीब लोगों का धर्म परिवर्तन करके उनके समाज को आघात पहुँचा रहे हैं।

प्रारम्भिक मसीहियों ने इस तरह से एक दूसरे की सेवा करना कहाँ से सीखा, आत्मा ने उन्हें शक्ति दी कि वे परमेश्वर के राज्य के लिए बलिदान कर सकें। हमारे जीवन में उसके फलों में सबसे महत्वपूर्ण फल प्रेम है (गलातियों 5:22)। परन्तु यीशु की शिक्षाओं और उदाहरण ने उन पर यह प्रगट किया कि किस तरह से प्रेम को प्रगट किया जाना चाहिए, और लूका का सुसमाचार इन बातों का विस्तृत विवरण करता है। क्योंकि लूका ने अपने सुसमाचार व प्रेरितों के काम की पुस्तक को एक साथ पढ़ने के लिये लिखा, अत: हम उसके सुसमाचार से मिलाकर पढ़ते हुए प्रथम कलीसिया के सेवा के परिवर्तित जीवन शैली को बेहतर समझ सकते हैं।

## गरीबों के लिए यीशु का मिशन

आधुनिक लेखकों के समान ही, पुराने ज़माने के लेखक अपने लेखों की विषय वस्तु व मुख्य केन्द्र बिन्दुओं को संक्षेप में लेख के प्रारम्भ में ही लिख दिया करते थे। अधिकतर विद्वान लूका 4:18-27 को लूका की पुस्तक का सार मानते हैं, और ठीक इसी प्रकार से प्रेरितों 1:8 और 2:17-21 को प्रेरितों के काम पुस्तक की विषय वस्तु मानी जाती है। इस अनुच्छेद का विषय (जैसे, यीशु मसीह की पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक, प्रेरितों 4:27; 10:38) लूका-प्रेरितों के काम की पुस्तक में बाद में नज़र आता है। भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रारम्भ में किया गया यीशु मसीह द्वारा विधवा व कोढ़ी पर सेवकाई निभाये जाने का जिक्र केवल लूका रचित सुसमाचार में (उदाहरण: लूका 5:12,13; 7:12) उसकी अपनी सेवकाई को ही चित्रित नहीं करता बल्कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्यजातियों के बीच कलीसिया की सेवा को भी चित्रित करता है। यीशु ने यशायाह की नबूबत को पूरा किया कि वह गरीबों में सुसमाचार प्रचार करेगा (लूका 6:20-25) और उसने यूहन्ना को बताया कि राज्य के चिन्हों में गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाना शामिल है (लूका 7:22)।

लूका की पुस्तक में प्राप्त यीशु का मिशन हमें किस रीति से प्रभावित करता है ? क्योंकि यीशु का आत्मा में बपतिस्मा तथा लूका की पुस्तक में प्राप्त मिशन, प्ररितों में हुए अनुभवों और कलीसिया की सेवा को प्रगट करता है, उसका आदर्श और मिशन आज भी उसके अनुयायियों के लिए सार्थक है। यद्यपि लूका की पुस्तक का दूसरा चरण विशेषकर सर्वजाति में पवित्रात्मा से परिपूर्ण सुसमाचार प्रचार करना है (मिशन; प्रेरितों 1:8) परन्तु पवित्रात्मा से युक्त गरीबों के बीच सेवकाई इस बात को प्रगट करती है कि इस विषय पर विशेष ध्यान आज भी वर्तमान कलीसियाओं के लिए वैध है (प्रेरितों 2:44, 45; 4:32, 34)। सर्वप्रथम हम लोग संसार भर में सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाये गये हैं; परन्तु इसके साथ-साथ हम इसलिए भी बुलाये गये हैं कि सुसमाचार प्रचार किये गये जगत की देखभाल भी कर सकें।

यीशु मसीह ने यशायाह के वचनों पर आधारित होकर अपने मिशन/कार्य की धोषणा की (यशायाह 61:1,2 का हवाला लूका 4:18, 19 में)। उसके अनुयाशी यशायाह की पुस्तक को अवश्य ही जानते हैं, अत: वे गरीबों की देखभाल करने, और समाज में न्याय स्थापित हेतू यशायाह के विचार को समझते हैं। यदि इस्राएली इन बातों को नज़रअन्दाज कर देते हैं तो उनके धार्मिक कार्य, व रीतियाँ कभी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते, और वह उनकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा (यशायाह 1:11-17; 58:5-7)। यशायाह, गरीबों को दबाने वाले लोगों को हाय बोलता है (उदाहरण: यशायाह 10:2), जो केवल अपने लिए ही इकट्ठा करने की चिन्ता करते हैं (यशायाह 5:8); वह समाज के उन अगुवों पर हाय बोलता है जिन्होंने और अधिक ज़िम्मेदारी के साथ न्याय को स्थापित किया होता (यशायाह 3:14; 15)। अन्य नबियों ने भी न्याय की माँग करी, जिसमें यशायाह का समकालीन नबी, आमोस भी शामिल था (उदाहरण: अमोस 2:6-7)। यशायाह के समान आमोस ने भी इस बात को सामने रखा कि बलि चढ़ाना या बाहरी धार्मिक कार्य सब बेकार हैं यदि हम मौलिक रुप से समाज में परिवर्तन लाने, तथा जिन लोगों पर सेवा निभाई जा रही है उनके लोगों को न्याय दिलाने का कार्य नहीं करते हैं (आमोस 5:21-24)। यीशु मसीह के द्वारा सर्वप्रथम सुनने वालों के समान हम भी भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के अनुच्छेदों से परिचित हैं; उदाहरण के लिए ज़रुरतमंदों के अधिकारों के लिए खड़े होना परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों को दर्शाता है (यिर्मयाह 22:16); सदोम के पापों में गरीबों को नज़रअंदाज़ करना शामिल था (यज़ेहकेहल 16:49) यहाँ तक कि पागानियों का राज्य काल भी ग़रीबो पर दया दिखाने के द्वारा आगे बड़ा (दानिय्येल 4:27)।

आराधनालय में बैठे हुए यीशु के दर्शक भी व्यवस्था में के पुराने वचनों को अच्छी तरह से जानते थे जिसे खुद यशायाह ने वर्णन किया। यशायाह के द्वारा कहा गया वचन बन्धुओं के लिए आज़ादी और परमेश्वर का वर्ष (यशायाह 61:1,2), (लैव्यव्यवस्था 25) में प्राप्त जुबली के वर्ष की शिक्षा को पुन: प्रगट करते हैं। क्योंकि पुराने समय में इस्राएल की अर्थव्यवस्था, फार्म अर्थव्यवस्था थी जो जमीन जायदात पर आधारित थी; इसलिए जिन लोगों के पास जमीन थी वो ही अच्छे जीवन निर्वाह की उम्मीद कर सकते थे। पुराने जमाने में जब लोग अपना कर्ज अदा नहीं कर पाते थे तो उन्हें उनके कर्ज के बदले गुलामी करने के लिए बेच दिया जाता था, या उनकी उस ज़मीन को बेच दिया जाता था जिस पर वे निर्भर होते थे।

जबकि इस्राएल के अन्दर भी इसी प्रकार की रीति पायी जाती थी फिर भी परमेश्वर के पास उनका न्याय करने की अलग योजना थी: प्रत्येक पीढ़ी में एक बार लोगों के सारे कर्ज़ माफ किये जाते थे। इसका मतलब यह था कि हर एक पीढ़ी नये तरीके से अपने जीवन की शुरुआत व जीवन निर्वाह कर सकता है। जिससे गरीबी पीढ़ियों से पीढ़ियों तक चलने वाला चक्र नहीं बन सकी जिसके तहत लोग हमेशा के लिए एक तबके और स्तर में कैद हो जाते हैं। हम लोग किसी ज़मींदारों वाले समाज में जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं; आज ज़्यादातर लोगों के ज़मीन के काम से ज़्यादा, कम्प्यूटर, शिक्षा और अन्य स्रोत कमाई के अधिक कारगर माध्यम बने हुए हैं। परन्तु अपने पड़ोसी के लिए न्याय हेतू वही आधारभूत सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है।

यीशु मसीह ने इस वचन का हवाला इसलिए दिया क्योंकि यह वचन उसके मिशन को दर्शाता है। यशायाह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बोलता है जो उसके मिशन के लिए आत्मा द्वारा अभिषिक्त है, और यीशु मसीह ने अनुभव किया। बपतिस्मों के समय पवित्र आत्मा यीशु पर उतरा (लूका 3:21, 22) और फिर उसकी मरुस्थल में जाने (4:1) और बाहर आने में अगुवाई की (4:14) जहाँ पर उसकी परीक्षा हुई। यीशु मसीह ने उन लोगों में अपनी सेविकाई निभाई जिसका वर्णन यशायाह ने अपनी सुची में किया था: गरीब, बन्धुवे (लूका 13:15, 16), अन्धे

(7:21, 22; 18:35-43) तुच्छ समझे जाने वाले (हर प्रकार से)। इन समूहों में से लूका का सुसमाचार विशेषकर गरीबों पर ज़ोर देता है। यीशु के दृष्टान्तों व उदाहरणों में, ज़रुरत मन्दों की देखभाल करने पर ज़ोर दी जाने वाली शिक्षाएं बखान करती हैं कि आखिर क्यों पिन्टेकोस्ट के पश्चात् मसीही लोग यह जानते थे कि कैसे उनके मिशन को पूरा किया जाए।

## लूका रचित सुसमाचार में प्रचार करने हेतु शिक्षाएं

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जिसने यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार किया, पश्चाताप को आनेवाले राज्य के लिए तैयारी के रूप में प्रचार करता रहा (लूका 3:3, 8) और ठीक वैसा ही प्रचार पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन भी किया (प्रेरितों 2:38)। व्यवहारिक जीवन में, इस पश्चाताप के अन्दर कौन सी बातें शामिल हैं? जब भीड़ ने यूहन्ना से यही प्रश्न किया, तो उसने जवाब में कहा कि जिसके पास दो अंगरखे हों तो वह एक अंगरखा उसे दे दे जिसके पास पहनने को एक भी वस्त्र न हो (लूका 3:10, 11) जिन किसानों ने यूहन्ना की बातों को सुना उनमें से कुछ के पास मात्र एक जोड़ा कपड़ा था, परन्तु बहुत से लोग ऐसे थे जिनके पास दो से अधिक जोड़े वस्त्र थे। हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि इस बलिदान की माँग से वह खुश नहीं हुए।

अधिकतर आधुनिक पाठक अनुच्छेद का बढ़ा चढ़ा कर मतलब निकालने लगते हैं (उदाहरण: किसी विषय पर अतिशयोक्ति कर देते हैं)। और यह सम्भव है कि हम इस अनुच्छेद को अतिशयोक्ति के रूप में पढ़े, परन्तु यदि हम केवल अपने मन में यह बात रख सकें, कि अतिशयोक्ति का मतलब मूल विषय का अर्थ प्रकट करना है, न कि उसे अतिशयोक्ति कहकर उसके बिन्दू या अर्थ को खारिज करना।

यूहन्ना की शिक्षा का मतलब यह है कि हमें अपनी चीज़ों से कहीं ज़्यादा दूसरों की देखभाल करनी चाहिए, यदि हमारे पास ज़रूरत से कम चीज़े हैं।

ऐसी संस्कृति में जहाँ लोग अपनी बराबरी या उनसे अधिक आदरणीय लोगों को भोज या जेवनार में बुलाना पसन्द करते थे, यीशु ने मेज़बानों से गरीबों और अयोग्य लोगों को आमन्त्रित करने के लिए आग्रह किया, जो मेज़बानों को बदलने में कुछ नहीं दे सकते (लूका 14:13, 21)। जब वस्तुओं को गरीबों में बाँटा जाता है वह स्वर्ग में खज़ाना इकट्ठा करने के जैसा है (लूका 12:33, 34), इस प्रकार से भोजन में आमन्त्रण देना उस प्रतिफल से कहीं अधिक बड़ा प्रतिफल प्राप्त करता है जो धरती पर मिलता है। यीशु ने कहा, तुम उन्हें आमन्त्रित करो जो तुम्हें कभी वापस न करे सकें; और परमेश्वर तुम्हें न्याय के समय प्रतिफल देगा (14:14)। जब यीशु ने अपने चेलों को सर्वप्रथम मिशन दौर पर भेजा, उसने उन्हें बीमारों को चंगा करने तथा, साधारण रूप से यात्रा करने के लिए निर्देश दिये, और कहा जिस तरह के गरीब लोगों में वह सेवा करने जाए उन्हीं के समान रहें (लूका 9:3, 10:4)। गलील के 70 से 90 प्रतिशत लोग दरिद्र किसान थे। मछुवारे लोग तकनीकी रूप से अमीर या धनी नहीं थे परन्तु उनकी हालत फिर भी दूसरे लोगों की तुलना में बेहतर थी। वे अपने काम से मतलब रखा करते थे। उन्हें नाम या स्तर की परवाह नहीं थी।

***यीशु का गरीबों की देखभाल करने के सन्दर्भ में शिक्षा देना हमें कामों के द्वारा धर्मी नहीं ठहराता : बल्कि बाइबल स्पष्ट कहती है कि हम केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरते हैं।***

यद्यपि यीशु ने ज़रुरतमन्दों पर तरस खाया और अपने पापों का अंगीकार किये हुए लोगों का स्वागत भी किया, फिर भी वह सामाजिक व धार्मिक तौर पर आत्म-सन्तुष्ट लोगों के प्रति लड़ा रुख रखते थे। जब मैं अत्यधिक सन्तुष्ट होता हूँ तो मैं बहुत आलसी हो जाता हूँ और मुझे अपना ध्यान देने के लिए बहुत कठोर शब्दों की ज़रुरत पड़ती है। मेरे विचार से इसी तरह अधिक लोगों का जीवन आराम पाने पर खतरे में पड़ जाता है। यीशु ने आलसियों की डाँट लगाते समय कुछ भी शब्दों को नहीं रख छोड़ा। उसने उन्हें एक मूर्ख धनी का किस्सा सुनाया जिसने अपना धन लोगों की सेवा में लगाने के बजाये इकट्ठा करता, वह अपना सारा धन नरक में जाते समय सब पीछे छोड़ गया (लूका 12:16-21), यीशु मसीह ने हमें विशेष रूप से यह नहीं बताया कि दूसरा धनी व्यक्ति ने लाजर को अपनी देवड़ी पर कष्ट सहने दिया जिससे वह मर गया (पद 25)। यीशु ने इस दृष्टांत को कुछ बिना उद्धार पाये हुए लोगों के लिए भी कहा जो पैसे से प्रेम किया करते थे (16:14)। अगर कोई इतना गरीब हमारी चौखट पर आकर नहीं बैठता तो इसका मतलब यह नहीं हम सब बातों से बच गये। हमारा समाज इतना जटिल व इतना शानो-शौकत से पूर्ण हो गया है जहाँ पर इस प्रकार के कंगाल लोग को रुकने की अनुमति नहीं है; लेकिन, यदि हम इस प्रकार के ज़रुरतमन्द लोगों को जानते हैं, तो हम उसके लिए ज़िम्मेदार ठहरते हैं।

यीशु मसीह द्वारा गरीबों की देखभाल करने हेतू उत्साहित करने का अर्थ यह नहीं कि हम इन कामों की वजह से धर्मी ठहर सकते हैं: बाइबल इस बारे में स्पष्ट करती है कि हम विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहरते हैं। परन्तु हम जानते हैं कि बहुत से नामधारी ईसाई जिस तरह का जीवन जीते हैं उस प्रेम को नहीं दर्शाता है। नये नियम के लिए, सच्चा विश्वास जैसे सच्चा मसीही तरस, ठोस तरीके से प्रगट होना चाहिए।

याकूब को चेतावनी देता है कि कर्म बिना विश्वास मृतक है (याकूब 2:14)। उसके उपरान्त वह इस बात को एक दृष्टान्त के द्वारा समझाता है कि यदि कोई बहन नंगे उधाड़े हो और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो, पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें ने दें तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। (याकूब 2:15-17)

न ही यीशु की शिक्षाओं का मतलब यह था कि वह धनी लोग के खिलाफ़ था। मुद्दा यह नहीं था कि किसी व्यक्ति के पास कितना धन है परन्तु यह कि वह व्यक्ति उस धन से क्या करता है। यीशु मसीह ने अपना बहुमूल्य समय चुँगी लेने वालों के साथ बिताया। हालाँकि चुँगी लेने वाले सामाजिक व नैतिक तौर पर कम आँके जाते थे परन्तु आर्थिक स्तर पर वह किसी से कम नहीं थे। कई बार वे रोम या हेरोद अन्तिपास द्वारा गरीबों से वसूले गये कर या लगान का हिस्सा अपने पास रख लेते थे और वे धन उगाने व कर लेते समय अत्यधिक निर्दयी थे। कई बार वे बूढ़ी स्त्रियों को पीटा करते थे ताकि वे जान सकें कि उनका कर्ज़दार बेटा भागकर कहाँ गया है। कर लेने वालों का नाम इतना खराब हो गया था कि मिस्र के बहुत से गाँवों के लोग कर्ज न चुका पाने की दशा में, यह सुनते ही कि चुँगी लेने वाले आ रहे हैं अपने घरों को छोड़कर दूसरी जगह भाग गये और वहाँ नया गाँव बनाकर रहने लगे। चुँगी लेने वाले उन अमीरों में से एक थे जो गरीबों किसानों पर अत्याचार करते थे और यीशु जिन पर सेवा निभा रहे थे, परन्तु यीशु ने इन चुँगी लेने वालों को भी शिक्षा दी।

यीशु मसीह ने कहा कि एक धनी का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना ऊँट का सूई के छेद में से पार हो जाने के बराबर है। (हाँलाकि आधुनिक लेखक इस बारे में अपने उन्नत मतों को रखने का

प्रयास करते हैं, परन्तु इस स्थान पर सुई के नाके का मतलब जैसा आज है, वैसा ही उस समय पर भी था क्योंकि यरूशलेम में सूंई के नाके वाले गेट का निर्माण मध्यकाल तक नहीं हुआ था।)

शायद यीशु यहाँ पर अतिशयोक्ति का इस्तेमाल कर रहे थे क्योंकि सुनने वालों में बहुत से लोग धनी थे।

चुँगी लेने वाले जक्कई ने अपनी आधी से ज़्यादा सम्पत्ति गरीबों में बाँट दी तथा जिस किसी का धन धोखे से लिया, उसे चार गुना वापस करने का वायदा भी किया। (जिससे उसके दूसरे भाग का अनुपात बिल्कुल कम हो जाता है; लूका 19:8)। अरिमतिया का धनी यूसुफ जो यीशु का नया चेला था अपने समर्पण से भी आगे गया और सीधे पिलातुस से यीशु के शव को माँग लिया। सार्वजनिक रुप से किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अपना सम्बन्ध प्रगट करना जिसे देशद्रोह (अपने आपको यहूदियों का राजा बताने) के अपराध में क्रूस की सजा मिली हो, अपने प्राण का जोखिम उठाने जैसा था, चाहे वह व्यक्ति कुलीम ही क्यों न हो।

## सारे चेलों से यीशु की अपेक्षा

हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि यीशु की माँगें केवल धनी लोगों से ही थीं। कई बार हम यीशु की शिक्षाओं व बातों को बिना सोचे समझें ही पढ़ लेते हैं। जैसे डाइटरिच बोने हेफर ने कहा, कि जब यीशु ने एक धनी से अपना सब कुछ कंगालों में बाँट देने के लिए कहा (लूका 18:22), हम अपना अधिकतर समय मात्र यह समझाने में लगा देते हैं कि वह बातें यीशु ने उस धनी व्यक्ति से कही थीं परन्तु यह नहीं सोचते कि उन वचनों से हमें क्या शिक्षा मिलती है। बोनेहेफर एक धर्मविज्ञानी थे जो हिटलर के खिलाफ अपने मत को रखने के कारण मार दिये गये। जिस तरह साहस से वे जिएं वैसे ही उन्होंने बाइबल को पढ़ा, और उन्होंने यह शिकायत की कि अधिकतर धर्म वैज्ञानिक हमें यीशु की शिक्षाओं का पालन करने में मदद करने से ज़्यादा यीशु की शिक्षाओं के करीब ले जाने में मदद करते हैं।

जैसा हम सोचते हैं उसके विपरीत यीशु ने न केवल धनी व्यक्तियों से बल्कि अपने सभी चेलों से भी यह कहा, कि वे अपनी सारी धन सम्पत्ति को बेचकर स्वर्ग में धन इकट्ठा करें (लूका 12:33)। यीशु ने कभी नहीं सोचा जैसा बहुत से दावा करते हैं कि धन बुरा होता है; बल्कि जो अनन्त धन-विनियोग हम इसके द्वारा दूसरों के जीवन में कर सकते हैं उसकी तुलना में इस धन का कोई महत्व नहीं है (लूका 16:9-13)। उसने यह वायदा किया है कि यदि हम उसके राज्य की खोज करेंगे तो वह हमारी सारी ज़रुरतों को पूरा करेगा (12:22-32) और उसमें हमें अपने राज्य के लिए आमन्त्रित किया है कि हम अपने साधनों को देने के द्वारा अपने आप को तैयार कर सकें (12:33-40)।

चार्ल्स फिन्नी, जो 19वीं शताब्दी का एक ऐसा प्रचारक था जिसने करीब 5 लाख लोगों की प्रभु यीशु में अगुवाई की, ने बोस्टन की धनी कलीसिया में लूका 14:33 से प्रचार किया। इस वचन के अन्दर यीशु के राज्य की कीमत से प्रचार किया। इस वचन के अन्दर यीशु के राज्य की कीमत का बखान करते हुए चेतावनी देते हैं कि जब तक कोई अपना सब कुछ नहीं त्याग देता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। पास्टर लेमैन बीचर ने अपनी को यह दिलासा दिलाते हुए संदेश को समाप्त किया कि परमेश्वर उनसे कभी भी उनकी सम्पत्ति छोड़ने के लिए नहीं कहेगा; वरन उन्हें अपनी इच्छा से इसे देने वाला होना चाहिए। फिन्नी ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा, परमेश्वर जो चाहे वह हमसे माँग सकता है; हम प्रभु को अपने जीवन में ग्रहण करते समय अपनी सम्पत्ति न ही खोते परन्तु अवश्य ही हम उसका मालिकाना हक खो बैठते हैं। फिन्नी ने असल से समझ लिया था कि यदि यीशु सच में हमारे जीवन का प्रभु है, तो वह हमारी सारी वस्तुओं का भी प्रभु है।

हम में से बहुत लोगों के पास ठीक उसी प्रकार के क्षमताओं से भरे हुए व्यवसाय थे जैसे यीशु के प्रथम चेलों के पास जो मछुवारे थे; जिन्होंने प्रभु की बुलाहट के लिए सबकुछ छोड़ दिया; हमने इस बात को जाहिर किया है कि हम राज्य को सांसारिक धन से अधिक महत्व देते हैं। फिर भी यह हमारे लिए सेवा के क्षेत्रों में कष्ट उठाने से कहीं ज़्यादा आरामदायक रहता है।

कुछ आँकड़ों के अनुसार प्रत्येक दिन 35,000 बच्चे और ठीक हो सकने वाली बीमारियों के शिकार होकर मर जाते हैं। परन्तु यह आंकड़े इतने चेतना शून्य और अव्यवहारिक होते हैं कि हम इन्हें भावनात्मक रूप से नहीं पकड़ सकते। इन आँकड़ों को और अधिक घनिष्टता से देखें तो हम न्यु यॉर्क सिटी टॉवर में 3000 लोगों के मारे जाने से क्रोधित है। परन्तु इससे दस गुना ज़्यादा 35,000 बच्चे प्रतिदिन मर रहे हैं। दूरी के कारण तरस की भावना खत्म नहीं हो जाती। पौलुस संसार के एक तरफ रहने वाली कलीसिया से संसार के दूसरी ओर रहने वाली कलीसिया की देखभाल करने का आग्रह करता है (रोमियों 15:26; 2 कुरिन्थियों 8:13, 14)।

हमारे देश के आँकड़े भी इस मामले में कम भयानक नहीं हैं, बल्कि हज़ारों अनाथ लोग जिनमें वैसे युवा भी शामिल हैं जो भाग कर वैश्यावृत्ति में पड़ जाते हैं, यहाँ पर भी नियमों व बातों को मानने पर कोई तबज़्जो नहीं दी गयी। चाहे जितना भी लाभकारी आँकड़े हों, परन्तु परमेश्वर का वचन और हमारा लोगों तक उनकी ज़रुरतों में शामिल होना हमें किसी भी आँकड़े से आगे ले जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे हृदयों में अपने प्रेम को डाला है। वचन हमें याद दिलाता है कि यीशु ने हमारे लिए अपनी जान को दे दिया, तो हम कैसे अपने मसीही भाई व बहनों की देखभाल करने से इनकार कर सकते हैं (1 यूहन्ना 3:16, 17)।

स्प्रिंग फिल्ड मसूरी में सेवकाई के प्रारम्भिक वर्ष तथा हाल की सेवकाई के दिन जिसमें मैं दरिद्रों और मादक पदार्थों से पीड़ित लोगों की परियोजनाओं में संलग्न था के दौरान मैंने जीवन के उस चेहरे का सामना किया जिसे मैं आँकड़ों के समान कभी नज़रअन्दाज नहीं कर सकता हूँ। यीशु हमें अपने राज्य के लिए जीवनों को कुर्बान करने के लिए बुलाते हैं: जिसका अर्थ उसके राज्य के निमित्त ज़रुरतमन्दों की ज़रुरतों को पूरा करना है; क्योंकि अन्त में केवल लोग ही बचेंगे, चाहे वे लोग मसीह में हमारे भाई बहन है या फिर जिन्हें परमेश्वर चाहता है कि वे हमारे भाई बहन बने (अर्थात् हर एक जन 1 तिमूथी 2:4, 1 पतरस 3:9)।

जिस प्रकार से कोलकाता मिशन ऑफ मर्सी के युवा कार्य करते हैं उसी प्रकार हमारे तरस भरे कार्य संसार भर के लोगों का ध्यान हमारे स्वामी की ओर खीच लेते हैं।

प्रभु करे कि परमेश्वर की आत्मा आज हमें, प्रथम पेन्तिकोस्त के दिन के समान, उसके हृदय को संसार के सामने प्रगट करने की सामर्थ्य प्रदान करे। ■

**क्रेग एस.कीनर.** Ph. D.
पलमर धर्मविज्ञान सेमिनरी में नये नियम के प्रोफेसर हैं। वाइनवुड; पेन्सिलवानिया तथा अन्य दस पुस्तकों के लेखक हैं जिसमें से दो पुस्तकों ने वर्तमान में मसीहीयत पुरस्कारों को जीता है: The IVP Bible Background Commentary: व New Testament (की 1,50,000 प्रतिया प्रिंट के लिए तैयार है) भक्ति की पुस्तक पर लिखी जा रही Commentary कार्यरत है।

# यहाँ से वहाँ पहुँचना

## अपनी मण्डली में तरस की सेवकाई प्रारम्भ करना

द्वारा: हेईडी रोनाल्ड उन्रुह व फिलिप एन ओल्सोन

*आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर टूटे जीवनों को जोड़ना तथा पड़ोसियों के साथ संकट में पड़े सम्बन्धों को इस तरह के सुसमाचार प्रचार के द्वारा पुनःस्थापित करना चाहता है जिसमें प्रचार व गरीबों की सहायता मिली हो। आप चाहते हैं कि आपकी कलीसिया एक ऐसा पात्र बन जाए, जो समाज में चंगाई व परमेश्वर की उपस्थिती को ला सकें। परन्तु ज़रुरतों को देखकर भाव विभार होना जितना आसान है, उतना ही कलीसिया को इस सेवकाई के लिए उत्साहित करना निराशाजनक है। सवाल उठता है: कि हमें किस प्रकार की सेवकाई करनी चाहिये? क्या मण्डली इस कार्य में हमारी सहायता करेगी? हमें आर्थिक सहायता व काम करने वाले लोग कहाँ से मिलेंगे? हम शुरु कैसे करेंगे? कौन से कदम हमें दूसरे स्तर तक ले जाएंगे?*

प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार के लिए दर्शन, उद्देश्य और योजना बनाने की आवश्यकता होती है। दर्शन वह आभास है जो बताता है कि परमेश्वर कलीसिया को एक विशेष दिशा की ओर बुला रहा है। उद्देश्य कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य के चारों ओर एकत्र करता है। योजनाएं उन कदमों का निर्माण करती है जिससे वह दर्शन पूरा किया जा सके। कैसे एक कलीसिया इन आवश्यक बातों को प्राप्त करती है? कोई भी कलीसिया प्रचारकीय कार्यों में एक समान रास्ता तय नहीं करती। हर एक मण्डली अलग स्थान से अपनी यात्रा शुरू करती हैं, उनकी शैली व चरित्र अलग होता है और वह अपने समुदाय के सन्दर्भ में अलग ढंग से कार्य करते हैं। जबकि कम्पैशन सेवकाई में 1-2-3 जैसे सरल चरण नहीं हैं फिर तीन ऐसे स्तर हैं जिसका अनुभव प्रत्येक कलीसिया अपने मार्ग में करते हैं और प्रत्येक स्तर पर पाँच क्रियाएं शामिल होती हैं। हर एक खण्ड में कुछ बिन्दू हम क्रम में आते देखेंगे और कुछ धीरे-धीरे अपनी छाप छोड़ेंगे।

जब आप निम्नलिखित बातों को पढ़ते हैं, तो खुद से पूछें: इस प्रक्रिया में मेरी कलीसिया किस स्थान पर है? हम किन बातों में सामर्थी और किन बातों में कमज़ोर हैं? यह आपका मार्ग दर्शन करेगा कि आपका अगला कदम क्या होना चाहिए?

## स्तर-1 : बुनियाद डालना

अपनी कलीसिया की कल्पना एक बगीचे के समान कीजिए (देखें 1 कुरिन्थियों 3)। आपको बीज बोने के लिए ध्यान से ज़मीन को तैयार करना चाहिए। इसी प्रकार से दिया या कृपा पूर्ण सेवकाई तभी फलवन्त होगी जब कलीसिया तैयार होगी। किसी आवश्यक ज़रुरत का सामना करते ही, ज़्यादातर कलीसियाओं के मन में एक बात आती है कि एक कार्यक्रम बनाया जाए। परन्तु यदि कोई भी कार्यक्रम कलीसिया के मुख्य उद्देश्य से अलग हो जाता है तो वह अपनी आत्मिकता को छोड़ सांसारिक बन जाता है।

कम्पैशन (तरसपूर्ण) सेवकाई यदि किसी सहायक व स्वस्थ मण्डली से जुड़ी हुई नहीं है तो वह कम प्रभावशाली होगी तथा उसे स्वयं ही खींचना पड़ेगा। अत: सर्वप्रथम मुख्य चरण यह है हम अपना कदम सामाजिक सेवकाईयों का विकास करने में बढ़ाने के बजाय विश्वासियों की देह के रूप में कलीसिया की पहचान में लगायें जो मसीह के समान सेवा करने तथा परमेश्वर के प्रेम का सम्पूर्ण संसार में प्रचार करने के लिए, उसके आदर्श का अनुसरण करती है। कलीसिया की सेवकाई उसके विश्वास के केन्द्र बिन्दू से आगे बहनी चाहिये। परिपक्व अगुवाई की बुनियाद पर सेवकाई का निमार्ण करने, कलीसिया के सदस्यों को प्रेम करने, आत्मिक अगुवों को प्रेम करने, तथा समाज की ज़रुरतों व ज़मीन, सम्पत्ति की जानकारी रखने के द्वारा, सुसमाचार सुनाने हेतू अपनी कलीसिया के समर्पण को और मज़बूत करें।

**अगुवों के एक दल को तैयार करें।**
सेवकाई के लिए सबसे उपजाऊ भूमी ऐसे पासबानों व अगुवों का दल हैं जो आत्मिक चाहत, स्थानीय मिशन के लिए एक ही विश्वास में समर्पण, और सकारात्मक कार्यरत सम्बन्धों के भागीदार होते हैं। सी.गेने विल्कस अगुवाई के सन्दर्भ में यीशु पर लिखते हैं: अगुवाई तब प्रारम्भ होती है जब परमेश्वर द्वारा प्रगट मिशन लोगों के हृदय में बस जाता है। कलीसिया के अगुवों की इस सन्दर्भ में तब सहायता प्रारम्भ होती है जब लोगों को शिक्षा, प्रशिक्षण, आदर्श दिया जाता है या उन क्षेत्रों में महारथ प्राप्त सेवकाइयों को दिखाया या उनसे मिलाया जाता हैं। मिशन से सम्बन्धित किसी मुद्दे पर दल के बीच में कार्य करें। प्रार्थना के साथ उन लोगों को नियुक्त व उनके लिए प्रार्थना करें जो नये प्रयासों की ज़िम्मेदारी सम्भाल सकें।

**अपनी मण्डली को पहचाने।**
जो कुछ आपकी कलीसिया करती हैं वह आपके गुणों पर आधारित होकर आपकी अलग पहचान पृष्ठभूमी व निर्भरताओं को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना चाहिये। मण्डली का आत्म-अध्ययन कलीसिया की वर्तमान योजनाओं का मूल्याँकन करके नये साहसिक कार्य हेतू कलीसिया की ताकत व कमज़ोरी को प्रगट कर सकता है। एक अध्ययन कलीसिया की आत्मिक परिपक्वता सुसमाचार प्रचार हेतू समर्पण, तथा बदलाव के लिए खुलेपन, जिससे प्रशिक्षण की विशेष ज़रुरत सामने आ सकती हैं, कि असलियत को सामने ला सकता है। समूह के साथ एक ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करें जिसके तहत मण्डली के लोगों की पहचान, इतिहास, पृष्ठभूमि, सदस्यता, धर्म विज्ञान, कार्यक्रमों, अगुवाई, संगठन, स्रोतों, आत्मिक जीवन, आपसी सम्बन्ध, तथा सहभागिता के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। अध्ययन के माध्यम में साक्षात्कार, विशेष मुद्दों पर सामूहिक चर्चा, और/या सर्वेक्षण शामिल होता है। (सर्वेक्षण करने का एक नमूना www.network935.org से डाउनलोड किया जा सकता है। तथा उसके साइडबार में आत्म-अध्ययन से प्राप्त प्रश्नों को देखें)

**मण्डली को तैयार करें।**
हो सकता है सुसमाचार प्रचार करने के दर्शन को मण्डली का हर एक जन स्वीकार न करे। प्रशिक्षण देने के द्वारा ऐसी ज़मीन को तैयार करे जिसमें सुसमाचार प्रचार व सामाजिक सेवा (तरस) के मूल आत्मिक आधार को समझाया जाये। इन कार्यों में संदेश देना, सण्डे स्कूल कक्षाएं, प्रशिक्षण, तथा अलग-अलग जगहों पर सदस्यों के साथ भ्रमण करना शामिल है जिससे उन्हें उत्तेजनापूर्ण अवसरों से रू-ब-रू होने का मौका मिल सके। मण्डली के आत्मिक जीवन तथा स्वस्थ सम्बन्धों को और मज़बूत बनाए।

**समाज की बनावट या रूप को पहचाने।**
प्रभावशाली सेवकाई समाज के सही रूप की जानकारी हासिल करने पर निर्भर करती है। मूल्याँकन करने से उस जगह की समस्याओं या ज़रुरतों पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है जिनसे परिवर्तन की ज़रूरत है, तथा इसके साथ उन कार्यों का भी पता चल जाता है जो परमेश्वर वहाँ पहले से ही कर रहा है। सबसे पहला कार्य अपने समुदाय को परिभाषित करना क्या विशेष प्रकार का पड़ोस, वर्ण-जाति का समूह, या किसी प्रकार ज़रुरतमन्द जनसंख्या वहाँ पर रहती है। वहाँ के लोगों की सामाजिक स्थिति, संस्कृति, रीतियों, आँकड़ों व ज़रुरतों से परिचित रहें। प्रार्थना भ्रमण या प्रार्थना यात्रा का आयोजन करें, जनसंख्या बढ़ौतरी पर नज़र रहे, घर घर जाकर सर्वेक्षण करें, साक्षात्कार करें तथा समूहों पर ध्यान केन्द्रित करें। (साइडबार में सामुदायिक अध्ययन के लिए औज़ार को देखें)। दूसरे समुदाय या समाज को लोगों से मिलने जुलने के द्वारा, आप सेवाओं को व्यर्थ होने से रोकते हैं, एक दूसरे को समझने व आदर देने के द्वारा सम्बन्धों को मज़बूत करें, और सहभागिता के लिए बीज को बोयें।

**सुसमाचार प्रचार करने के समर्पण का पोषण करें।**
आज कलीसियाओं के अन्दर सबसे बड़ी रुकावट, जिस पर हमें विजय प्राप्त करनी है वह धारणा है कि कलीसिया केवल अपने सदस्यों की देखभाल करने के लिए है। परिवर्तन के लिए अगुवों को मिशन-से पूर्ण कलीसिया होने के लिए मार्गदर्शन करना चाहिये। इसका अर्थ है कि मण्डली अपने विश्वास व आराधना को ज़ाहिर करने के लिए, कलीसिया की चार दिवारी से बाहर निकलने को तैयार है।

जाति, धर्म, स्तर योग्यताओं की बाधाओं को पार करने के लिए प्रशिक्षण व अन्य गतिविधियों का आयोजन करें, जो आपकी मण्डली को समुदाय से अलग कर सकती हैं।

## स्तर-2 : दर्शन का खुलासा करना

दर्शन भविष्य की वह तस्वीर है, जिसके लिए आपकी कलीसिया को बुलाया गया है कि वह उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से पूरा कर सके। इस स्तर पर कलीसिया तरसपूर्ण सेवकाई के लिए एक विशेष दर्शन को प्राप्त करती है और उस काम को पूरा करने की उचित व्यवस्था करती है। स्वैच्छिक रूप से परमेश्वर के प्रेम को शब्दों व कार्यों में प्रगट करने के लिए यह दर्शन आपके समुदाय की ज़रुरतों को पूरा करने या उनकी ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिए आपकी मण्डली पर निर्भर करता है। एक बार आपकी कलीसिया में आत्मा द्वारा अभिषिक्त सेवकाई पर ध्यान लग जाता है, तब आप उस कार्य को पूरा करने के लिए रणनीति को बना सकते हैं।

**सेवकाई के लिए परमेश्वर के दर्शन की खोज करें।**
क्षमताशील सेवकाइयों के विचार की एक सूची बनायें। (साइडबार में देखिये आपका चर्च क्या कर सकता है ?) क्या कोई ऐसा विशेष क्षेत्र है जिसके प्रति सेवा करने को आपका चर्च तत्पर महसूस करता है- दोषपूर्ण, परिवार, जोखिम में पड़े जवान, परिवारों की भलाई, प्रवासियों में ? कमी कहाँ पर है ? इस समय पर कौन से द्वार खुले नज़र आते हैं ? अपना ध्यान एक या दो बिन्दुओं पर केन्द्रित करें। दर्शन के प्रति एक वाक्य का निर्माण करें जो उन लक्ष्यों को दर्शाता है जिसे सेवकाई या कलीसिया आने वाले वर्षों में पूरा करने जा रही है। (साइडबार में देखें दर्शन के वाक्य बनाने में सहायक कदम।) इस बात का निर्णय ले कि इस दर्शन के लिए नयी योजना की ज़रुरत है, या कलीसिया में विद्यमान कार्यक्रम को पुन:प्रारम्भ करने की ज़रुरत है या फिर किसी दूसरे संगठन या कलीसिया के साथ भागीदारी करने की ज़रुरत है।

***तरसपूर्ण सेवकाई यदि किसी सहायक व स्वस्थ मण्डली से जुड़ी हुई नहीं है, तो वह कम प्रभावशाली होगी और उसे स्वयं ही खींचना पड़ेगा।***

**मण्डली के साथ दर्शन को बाँटे।**
एक बार दिशा प्राप्त हो जाती है, तो कलीसिया को दर्शन को अपनाने के लिए उत्साहित करें। दर्शन को बार-बार, स्पष्ट व रचनात्मक रूप से समुदाय के सामने रखें। इस काम को करने में: एक वाक्य जिसमें दर्शन की सम्पूर्ण बातें समा जाती हैं; एक निशान या चिन्ह जो आपके मिशन का निचोड़ हो, मुख्य कार्यक्रम जैसे आराधना उत्सव, मिशन सम्मेलन, विदाई, सुसमाचार प्रचार पर केन्द्रित कार्यक्रम, शिक्षा सम्बन्धित कार्यक्रम जैसे रविवारीय श्रृंखला जो उन मुद्दों पर आधारित हो जिसे कलीसिया सामने लाना चाहती हैं; या समुदाय से किसी को मुख्य वक्ता के रूप में बुलाना या किसी अन्य सेवकाई से किसी मुख्य व्यक्ति को आदर्श के रूप में अपनी जीवन गाथा बता सके। उदाहरण के लिए यदि आपकी कलीसिया को घेरों की ज़रुरतों में सेवा निभाने की अगुवाई होती हैं तो सप्ताह के दौरान मानवीय कार्यों हेतु निवासस्थान का आयोजन करें जा अनाथालयों में यात्रा करने की योजना बनायें।

**सेवा के लिए व्यवस्थित हो।**
एक विस्तृत विवरण करती योजना को विकसित करें (सेवकाई में कौन कौन से कार्य होंगे, कितने भागीदार व किन स्रोतों या साधनों की आवश्यकता पड़ेगी, इसे कैसे व्यवस्थित व संचालित किया जायेगा) और उन कार्यों को पूरा करने के लिए कदम भी उठाने पड़ेंगे (प्रस्ताव रखने के बाद इसकी देखभाल कौन करेगा, यह कब शुरु होना चाहिये, किस प्रकार कलीसिया के लोग और तरीका प्रभावित होगा)। इस बात का फैसला करें कि इसका संचालन सीधे कलीसिया द्वारा होगा या फिर कोई गैर लाभकारी संगठन इसकी बागडोर सम्भालेगा। अपनी योजनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए अभ्यास से सीखें, गलतियों को बार-बार ने दोहराये। इसके अतिरिक्त, इस बात का भी ध्यान रखें कि कलीसिया का वर्तमान ढाँचा सेवकाई की योजनाओं की सहायता करता है जो रुकावट डालता है।

**साधनों व सहभागियों को इकट्ठा करें।**
आपके आत्म-अध्ययन में उन साधनों को अवश्य ध्यान में रखा जाये जो कलीसिया को उस कार्य के लिए देने है- धन, स्थान, कार्यकर्त्ता (कर्मचारी व स्वयं सेवक) और आपको किसी विशेष यन्त्र की आवश्यकता पड़ सकती है; और इसके अलावा हम बाहर से किन साधनों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

पेशाधारी पत्र लिखने वालों तथा धन-अर्जित करने वालों को किराये पर लेना अच्छी जगह पैसा लगाना होगा। कोशिश करें के सुरक्षा कर्मी आपको मिल सके। कार्यकर्त्ताओं व निरिक्षकों को काम पर लगाने का तरीका बनाये। ऐसे समूहों (लोगों से जान पहचान बढ़ायें जो सामान्य/सामाजिक कार्यों में अपना हाथ बटाते हैं, जिसे समुदाय का मुल्यांकन करने पर पता किया जा सकता है।) जो लोग समाज में पहले से ही भले कार्य कर रहे हैं, आप उनके साथ किस तरह जुड़ सकते हैं ?

**मण्डली को एकजुट करना।**
कलीसिया के सदस्यों को नियुक्त व तैयार करें ताकि वे व्यवहारिक रूप में सुसमाचार प्रचार की योजना से जुड़ सकें। ज़ोर दें कि प्रत्येक सदस्य सेवकाई के लिए बुलाया और वरदान प्राप्त किया हुआ है। रणनीति, कहानियों, वचन, सिद्धान्तों तथा आग्रहों को जो सदस्यों के हृदयों पर छा कर काम करवाये, आपस में मिला दें। आपकी मण्डली में सेवकाई के लिए क्षमताओं की जागरुकता लाने हेतू आत्मिक वरदानों का मूल्यांकान/खोज करना एक आवश्यक औजार है। सदस्यों के वरदानों, उनकी रुचियों, सेवकाई तथा जीवन के अनुभवों के आधार पर उन्हें व्यक्तिगत रूप से शामिल होने के लिए आमन्त्रित करें। उन्हें उनका कार्य स्पष्टता से बता दें। प्रशिक्षण से स्वेच्छा से कार्य करने वालों को निष्क्रियता, अनुभवहीनता तथा असुरक्षा की बाधओं को पार करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार के सुसमाचार प्रचार के प्रशिक्षण का इन्तज़ाम करें जो स्वयं सेवकों को आत्मविश्वास के साथ अपना विश्वास बाँट सकें।

## स्तर-3 : दर्शन को बनाये रखना

एक सेवकाई के कार्य योजना शुरू हो जाने के बावजूद भी मिशन का लक्ष्य पूरा नहीं होता है। एक सेवकाई के दर्शन को बनाये रखने के लिए कड़े प्रयासों की ज़रुरत होती है, ऐसा न हो कि दर्शन कलीसिया के जीवन में एक भावनात्मक सनक बनकर रह जाए। परमेश्वर का कार्य हमेशा एक कलीसिया को बुलाता है, सी.एस. लेविस की आखरी पुस्तक नार्निया का इतिहास में असलन के अनुसार; बढ़ने का अर्थ और ऊँचाई तथा और गहराई है। जिस प्रकार से पवित्र होने के लिए हमारी व्यक्तिगत बुलाहट हमारी शुद्धिकरण की जीवन यात्रा में

अगुवाई करती हैं, किसी मकसद के लिए परमेश्वर का कलीसिया को बुलाया जाना एक परिवर्तन लाने वाले प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसके तहत परमेश्वर अपने उद्देश्य के लिए अपने लोगों को परिपक्व शुद्ध व छाँटने का कार्य करता है।

**भरा व कण्डों का सामना करें।**
दार्शनिक अगुवे विरोधात्मक परिस्थितियों को बदलने के लिए उनका सामना करते हैं। किसी भी नये कार्य को प्रारम्भ करने की चेष्ठा चिन्ता व मतभेद को जन्म में सहायता करे। सुसमाचार प्रचार व आराधना, शिष्यता तथा संगति के बीच स्वस्थ सन्तुलन बनाने से कलह में कमी आ सकती है। कष्टों व चिन्ताओं का सामना सकारात्मक रूप से करे, दुविधाओं का इस्तेमाल कलीसिया को अपनी प्राथमिकताओं व आयामों का पुन:अवलोकन करने के लिए करें। हम लोगों से जिन हैरिंगटन, माइक बोनम, व जेम्स एच फुर द्वारा लिखित पुस्तक मण्डलीय बदलाव की अगुवाई करना; जो कि परिवर्तन यात्रा की मार्गदर्शक है जिसके भीतर एक मण्डली को मकसद की ओर बढ़ाने की प्रभावशाली प्रक्रिया का विस्तृत विवरण किया गया है।

**उत्तरदायित्व को विकसित करें।**
मूल्याँकन करने की विधि के प्रयासों का विकास करे। क्या सेवकाई प्रभावशाली ठंग से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पा रही है? क्या साधनों का इस्तेमाल ठीक ठंग से किया जा रहा है? क्या सेवकों और सेवा गृहण करने वालों के बीच में सम्बन्ध मज़बूत हो रहा है? क्या लोग नये या पुन:नये विश्वास में आ रहे हैं? मण्डली, समुदाय व शिक्षकों से पूछताछ करके पता करो कि सेवकाइयाँ आपकी बुलाहट के अनुसार पवित्र, प्रभावशाली, और विश्वास योग्य है या नहीं। जितने भी कार्य आपकी मण्डली के द्वारा यीशु मसीह के नाम में किये जा रहे हैं उन्हें सबके सम्मुख लाये (2 कुरिन्थियों 9:12)। एक वार्षिक आराधना सभा का आयोजन करे जिसमें आप अपनी कलीसिया में उत्पन्न कम्पैशन सेवकाई के फलों के लिए परमेश्वर को महिमा दे सकें।

**नये अगुवों को विकसित करें।**
नये अगुवों को पहचानने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने के द्वारा थके हुओं को नज़र अन्दाज करें। जवानों के साथ कार्य करके व समय गुजार के नयी पीढ़ी में धीरे-धीरे मिशन केन्द्रित मन को उत्पन्न करें। वर्तमान में योग्य वह क्षमताशील समीति के सदस्यों से जान पहचान को बढ़ाये।

**दर्शन की ताज़गी बरकरार रखें।**
मण्डली व समुदाय के सन्दर्भ के बदलाव के साथ निरन्तर अपनी प्राथमिकताओं और कार्यों को बदलते रहें, परन्तु अपने मूल मकसद को मज़बूती से थामे रहें। जो लोग शामिल हैं, उनको आत्मिक कार्यों के लिए अवसर प्रदान करने के द्वारा अपने कार्यों के साथ-साथ अपने विश्वास को मिलाने का अवसर दें। लगातार सेवकाई को प्रार्थना में रखें और लगातार पवित्र आत्मा से अभिषेक प्राप्त करने के लिए उसकी खोज करें। दर्शन को नाश होने से बचाने के लिए ज़रुरत के हिसाब से ऐसे योजना बनाये कि समीति के सदस्य व अन्य कार्यकर्त्ता भी कलीसिया के लक्ष्य को आलिंगन कर सकें।

**लगातार बढ़ते रहें।**
अपनी सेवकाई को अगले स्तर तक ले जाने के लिए नये नये रास्तों की खोज करें। यदि आपकी कलीसिया गरीबों को भोजन देने वाली रसोई की जामिन है तो यह स्थान बावर्ची के स्कूल में तब्दील हो सकता है जहाँ लोगों को खाना पकाने की नौकरी के लिए तैयार किया जा सके। शायद एक शिक्षा देने का कार्यक्रम किसी पब्लिक स्कूल से हमारे सम्बन्धों का सार्थक बनाने में हमारी मदद करे। प्रवासियों के बीच में कार्य या सेवा करने से शायद, नियमित कार्य शुरू किया जा सके। इसके साथ-साथ आप अपने सम्बन्धों और आत्मिक गहराई में भी बढ़ते रहे। जो लोग परमेश्वर के प्रेम को बांटने की सेवा में है उनके लिए अधिक से अधिक अवसरों का प्रयोजन करें; उदाहरण: बाइबल अध्ययन, प्रार्थना चक्र, तथा मित्रों में प्रचार कार्य। दूसरे चर्चों व समान विचारधारा की कलीसियाओं से भी सम्पर्क करे जो आपकी कलीसिया को सलाह, विशेषज्ञता, तथा प्रोत्साहन प्रदान कर सके।

## निष्कर्ष

यदि ज़रुरत पड़े तो छोटी ही शुरुआत करो, मगर शुरुआत करो। जब तक मण्डली के सारे लोग दर्शन को गृहण न कर लें तब तक दर्शन को न रोके रहें। यदि आप मण्डली में अपने विचारों को प्रज्जवलित करना चाहते हैं, तो एक पासबान ने सलाह दी कि कार्य ही जीवन है। प्रार्थना करें और आगे बड़े। इस प्रक्रिया के दौरान आपकी मण्डली किसी के लिए जीवन दायक वचन दे सकती है या फिर किसी ज़रुरत व्यक्ति को परमेश्वर की दया से छू सकती है। मसीह में हर एक कलीसिया फल लाने के लिए अभिषिक्त है... जो फल सदैव स्थिर रहेगा (यूहन्ना 15:16)। होने दें कि तरसपूर्ण सेवकाई की यात्रा में यह वायदे आपकी मण्डली के विश्वास को बनाये रखे। ■

**हेइडी रोलान्ड उनरुह** पहले मण्डली, समुदाय और सै.डेविस, पेन्सिलवानिया व ईस्टर्न विश्वविद्यालय में अगुवों के विकास योजना की सह-डायरैक्टर थी, वह विश्वास पर आधारित समुदायो में की जाने वाली सामाजिक सेवकाइयों की योजनाओं का मूल्याँकन करने वाली विशेषज्ञ थी। वह कलीसियाए जो परिवर्तन को लाती है: शुभ समाचार व भले कार्यों के साथ अपने समुदाय तक पहुँचना साइडर व फिलिप एन. औल्सन (वेकर बुक्स 2002) के साथ सह लेखिका भी है। वह और उनके पति जिम, फेथ मेनोनाइट चर्च, हचिनसन, केनसास में पासबानी करते हैं।

**फिलिप एन. औलसन** पहले कलीसिया के सम्बन्ध, इवैन्जलिकल फौर सोशल एक्षन के उपाध्यक्ष व 9:35 नेटवर्क के डायरेक्टर थे, जो FBOs तथा कलीसिया के लिए साधन एकत्र करने वाली व सम्बन्ध बनाने वाली सेवकाई थी। वह वेनेवुड, पेन्सिलवानिया में रहते हैं।

# मेरे पासबान को जाने दो

## कम्पैशन सेवकाई के लिए कलीसिया को बनाना और तैयार करना

**ब्रैड स्मिथ के द्वारा**

एक मित्र पासबान ने कुछ ही समय पहले एक विशाल, लम्बे समय तक चले इमारत के काम को, जो एक कलीसिया के अन्दर उसके जीवन का लम्बे समय तक लक्ष्य रहा, खत्म किया था। वह बुजुर्ग, बुद्धिमान, व प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। हममें से बहुत से लोगों ने उनसे पूछा अब इस इमारत का काम समाप्त हो गया है, क्या आप अपनी कलीसिया में बहुतायत से आनन्द मना रहे हैं?

उन्होंने जवाब दिया नहीं, मुझे ऐसा लगता है जितना ज़्यादा हम बड़े हो जाते हैं, हमारे कार्यक्रम उतने ही उत्तम हो जाते हैं, और मैं उतना ही कम आनन्द मना पाता हूँ। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मैंने किस प्रकार की विशालकाय इमारत को बनाया है। सारे लोग रविवार की सुबह यहां आते हैं और हर एक जान अपने हित के लिए उत्तम अपेक्षा करता है: मुझे हँसना है, मुझे रोना है, मुझे कुछ इस प्रकार की बाइबल आधारित शिक्षा चाहिये जिससे मुझे महसूस हो कि मैं बढ़ रहा हूँ। पहले मेरे पास एक मण्डली थी। और अब मेरे पास केवल उपभोक्ता हैं- जो केवल धार्मिक भली वस्तुओं और सेवाओं को उपभोग करना चाहते हैं। मेरे कार्यालय के लोग अपने कार्यक्रम की सूचना देने के लिए समय को लेकर आपस में लड़ते हैं। मुझे ऐसा लगता है जैसे ये लोग मुझे अपने विज्ञापनों के साथ बाहर भेजते हैं। हमारे पास छोटे समुहों में एक सेना है, परन्तु वे अपनी ही उलझनों में फंसे हैं जो कभी उनका पीछा नहीं छोड़ती। हमने उनके लिए हर वस्तु का इन्तेजाम किया है, किस प्रकार वह अपने समुदाय में छोटे-छोटे झुण्डों के द्वारा सेवा निभा सकते हैं पर 13 सप्ताहों की शिक्षा सामग्री दी है। वे इन शिक्षाओं का इतना आनन्द उठाते हैं कि अपने समूह में रुककर अगले अध्ययन का इन्तजार तक नहीं करते। हमें सेवकाई के और अधिक कार्यों को करने में लोगों को तैयार करने के लिए दूसरों कार्यकर्त्ताओं को किराये पर लेना पड़ता और इसमें भी लोगों की अपेक्षा यह रहती है कि कार्यकर्ता उनके लिए काम करेंगे।

वह आगे कहते हैं मेरे पास उद्देश्य चालक कलीसिया, छोटे समूहों की कलीसिया स्वस्थ कलीसिया के लिए 10 कुँजियाँ, सुसमाचार प्रचारक कलीसिया के पाँच निर्माणकारी आधार, नामक सारी पुस्तक हैं। परन्तु मुझे कलीसिया में उपभोक्ता बने रहने की धारणा को हटाने वाली औषधि चाहिये। जो जज़्बा किसी कलीसिया को महान बनाता है हम उस जज़्बे को खो बैठे हैं।

इस पासबान की कलीसिया के पास में दर्शन व अगुवाई थी परन्तु इसमें छुपा हुआ प्रदूषण उस कलीसिया के स्वास्थ्य को खराब कर रहा था। उन्होंने रविवार की सभा में, बलिदान और समर्पण के बारे में प्रचार किया और बहुत सी बार आँसुओं के साथ। परन्तु उनके द्वारा सप्ताह में ढेड़ घण्टा प्रचार करना बाकी 167 घण्टों पर प्रभावशाली नहीं हो पाता था जो लोग अपने समाज में उपभोक्ता की धारणापूर्ण बातों में बिताते थे। यह सच है कि जितनी कलीसियाएं, भोगोलिक बातों व समय सीमा पर केन्द्रित तत्वों पर निर्मित हैं, और रविवार की सभा पर ही अपना ध्यान केंद्रित करती है, इसी प्रकार की विचित्र बातों का सामना करती हैं।

बहुत से लोग सोचते हैं कि वह कम्पैशन सेवकाई का इस्तेमाल शहर में प्रसिद्ध होने के लिए, गरीबों को भोजन कराने हेतू यीशु की आज्ञापालन करने के लिए नंगों को वस्त्र पहनाने, कैदियों से मिलने जाने के लिए, आस पड़ोस के क्षेत्रों में लोगों के जीवन में शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक अर्थपूर्ण परिवर्तन लाने के लिए कर सकते हैं फिर भी, जहाँ तक कम्पैशन सेवकाइयों ने देखा है; अधिकतर कलीसियाओं में, जो बाहर जाकर लोगों को लाभ पहुँचाती हैं, हमेशा ऐसा स्थान होगा जहाँ पर अपेक्षा करने वाले लोग आनन्द मनाते हैं, परन्तु कुछ बातें ऐसी होंगी जिससे कलीसिया हमेशा वंचित रहती हैं।

फिर भी जब वरिष्ट पासबान और कलीसिया के अगुवे समझ जाते हैं कि कम्पैशन सेवकाई कलीसिया के लोगों में पूरे सप्ताह 24 घण्टे शिष्यता को ले जाने का एक गुप्त हथियार बन सकती है जिसके द्वारा कलीसिया के बाहर युद्ध किया जाये, तो जो उपभोक्ता रुपी स्वभाव लोग कलीसिया में लेकर आते हैं तथा कम्पैशन सेवकाइयों के प्रति उनकी सोच बिल्कुल अलग होती है। इससे पहले वह कार्यक्रमों कुछ और कार्यक्रम जोड़ता था। अब, यह कलीसिया की संस्कृति, व उसके तैयार करने की रीति को अगले स्तर पर ले चलता है।

यह शिक्षाएं केवल नये लोगों के आने व जाने के लिए कलीसिया का पिछला दरवाज़ा बन्द करना ही नहीं, केवल बच्चों की रविवारीय कक्षाओं को अध्यापकों से भरना ही नहीं; परन्तु यह शिक्षाएं शिष्य बनाने के लिए हैं। उपभोक्तावाद की समस्या से कम्पैशन सेवकाइयों को लेकर युद्ध करने में आत्मिक वरदानों और सेवकाई के कार्यों पर मात्र संदेशों से ज़्यादा काम करने की दरकार है। पिछले कुछ दशकों में, आत्मिक वरदानों को खोजने तथा उन्हें सेवकाई में इस्तेमाल करने के विषय पर दी जाने वाली शिक्षाओं में खासी बढ़ौतरी आयी है। फिर भी, ज़्यादातर कलीसियाओं में सुनने वाले लोगों के मात्र 10 प्रतिशत इन बातों को अपने जीवन में लागू करते हैं तथा स्वयं कार्यों में खुद को शामिल करते हैं।

इस सन्दर्भ में पासबानों की सर्वप्रथम प्रतिक्रिया खुद को दोष लगाना होती है। शायद मेरे द्वारा दिया गया संदेश 90 प्रतिशत लोगों को उत्साहित करने में अप्रभावशाली रहा है। ज़्यादातर संदेश इफिसियों 4, रोमियों 12 या 1 कुरिन्थियों 12 से लिए गये थे। हाल ही में कलीसियाओं के अन्दर वेदी की पुकार द्वारा सेवा करने का समर्पण माँगा जाने लगा है। इस प्रकार के प्रयासों को संदेश दिये जाने वाले दिन लगभग 50 प्रतिशत परिणाम प्राप्त होता है परन्तु यदि इन प्रयासों के प्रभाव को लम्बे समयकाल में देखा जाय तो केवल 10 प्रतिशत लोग ही ऐसे बचते हैं जिनका जीवन किसी भी तरीके से प्रभावित हुआ हो। रविवार की एक छोटी सी सभा, समाज में बिताये रखने में कामयाब साबित नहीं हो सकती है।

तैयार तथा कम्पैशन सेवकाई पर अधिक ज़ोर दिये जाने वाले कलीसिया के इस समय को सशक्तिकरण की बुनियाद डाले जाने के नाम से जाना जाता है- जहाँ पर उन लोगों को सेवा के लिए स्वतन्त्र किया जाता है जो खुद को अयोग्य व अपर्याप्त समझते हैं। और वास्तव में, यह पासबानों को सशक्तिकरण करना है- पासबानों को उनकी अवास्तविक अपेक्षाओं व उनके प्रति कलीसिया की असम्भव अपेक्षाओं से आजाद करना है।

सैकड़ों प्रभावशाली ढंग से तैयारी करने वाली कलीसियाओं के अध्ययन करने के पश्चात् हर एक कलीसिया में तीन मुख्य सिद्धान्त उभरते नज़र आये और वे कम्पैशन सेवकाई की रीति पर लोगों को तैयार करना और फैलाना था।

## लोगों को सेवा के प्रति उत्साहित करने के लिए कलीसिया के अगुवों का प्रत्यक्ष सहयोग।

संदेश लोगों को यह याद दिलाता है कि परिपक्वता बिना सेवा के कार्यों के नहीं आती। इसके अन्तर्गत बुलाहट, वरदान, तथा सेवा जैसे विषयों संदेशों की श्रृखंला शामिल है। जो भी कोई इन संदेशों में शामिल होता है चाहे वह कभी कभार ही क्यों न हो, यह सामान्य बात होती है कि आत्मिक परिपक्वता या प्रभावशाली शिष्यता के लिए केवल रविवार की सभा में शामिल होना ही काफी नहीं है। परन्तु इसमें पूरे हफ्ते सेवा करने की भी आवश्यकता पड़ती है।

इसके अलावा यहाँ पर विशेषकर एक आन्तरिक संस्कृति का निर्माण करने का प्रयास किया जाता है जिसके तहत कलीसिया के प्रत्येक सदस्य की चाह सेवा करना बन जाती है। कलीसिया के अगुवे जाँच करते हैं कि आखिर वे लोग ऐसा क्या कर रहे हैं जिसके द्वारा मिश्रित संदेश लोगों तक पहुँचता है और निरुत्साह को उत्पन्न करता है; फिर वे खुद आदर्श के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं कि समाज में सेवकाई किस प्रकार होती है। वे अपने संदेशों में प्रचार के दौरान, दृष्टान्तों, कलीसिया के समाचार पत्र में कहानियों के द्वारा, नये सदस्यों की कक्षा में उदाहरणों के द्वारा बताते हैं कि कौन परिपक्व मसीही के समान आदर्श के रूप में कार्य कर रहे हैं।

लिटिल रॉक की एक कलीसिया ने एक क्रिसमस कार्ड भेजा जिसमें उनके कार्यालय के लोगों ने अपने ऊपर कप्तान के साथ खिलाड़ियों के एक दल की फोटो बनी हुई पोशाक को पहन रखा था जिसमें खिलाड़ी झण्डा फहरा रहे थे। जब आप सेवा का कार्य करते हैं हम आपको प्रोत्साहित करना चाहते हैं। लॉस ऐन्जलस की एक कलीसिया में, न केवल संसार के मिश्नरियों के लिए, बल्कि अध्यापकों, पुलिसकर्मियों, किसानों और मज़दूर मिस्त्रियों के लिए आज्ञा रूपी सभा का आयोजन जिसके तहत उन्हें कलीसिया में प्रशिक्षित करके समाज में उनके कार्य स्थानों में मिश्नरी के रूप में भेजा गया। अन्य कलीसियाएं इस बात का ख्याल रखती हैं कि नये विश्वासियों का स्वागत, घर का दौरा और उसे उत्साहित करने का काम किसी पासवान या अन्य अगुवे के द्वारा न किया जाये, बल्कि एक सामान्य विश्वासी के द्वारा किया जाये। जब नये विश्वासियों के पास दौरा करने वाले यह सदस्य पासबान के प्रति वफ़ादार होंगे और स्पष्टता से कलीसिया के दर्शन और मिशन को बताता है, तो वह आगन्तुक के लिए बड़ा ही स्पष्ट व उच्च ध्वनि में संकेत भेज देते हैं कि यह

एक ऐसी कलीसिया है जहाँ पासबान ज़िम्मेदारियों को बाँटने वाले हैं, खुद सारे अधिकारों को नियन्त्रण करने वाले नहीं।

## एक स्वच्छ ( बेजोड़ ) जो लोगों को सेवा में आगे बढ़ाती है

बहुत से अन्य व्यवसायों में पासबान की तुलना में कहीं अधिक उत्तम प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। एक किसान इस बात को अच्छी तरह समझता है कि फसल की कुँजी मात्र बोना या काटना ही नहीं है, बल्कि इस प्रकृिया में जमीन को तैयार करना, अच्छे बीज का चुनाव करना, खाद्य पदार्थों को डालना, वातावरण को नियन्त्रित करना, तथा लोगों को कटाई के लिए कार्य वितरित करना इस पूरी पद्धति का हिस्सा है। किसान जानता है कि खेती के सभी क्षेत्रों में (स्तर के काम को करना उत्तम है बजाय इसके कि किसी एक क्षेत्र में अति उत्तम कार्य करके बाकी क्षेत्रों को नजर अन्दाज कर दिया जाये।) यह एक स्वच्छ (बेजोड़) पद्दति है तो सफलता प्रदान करती है, कुछ क्षेत्रों में तारे प्राप्त कर लेने से इसे हासिल नहीं किया जा सकता।

यही बातें उन्नति करने वाली कलीसियाओं के लिए भी सच है। इस पूरी पद्धति के कुछ विशेष बुनियादी भाग हैं और किसी भी भाग को नज़र अन्दाज नहीं किया जा सकता है। रिक वारन ने अपनी पुस्तक द परपस ड्रिवन चर्च में बेसबॉल की आकृति के हीरे का इस्तेमाल एक उन्नत पद्धति को विस्तृत विवरण पत्थरों के सम्बन्ध को जान सकते हैं। हर एक साधारण बात के अन्दर कुछ ऐसे भाग हैं जिसके द्वारा यह कार्यान्वित होता है।

**परिपाक या तुलना करना :** यह प्रक्रिया आगन्तुक की कलीसिया के बारे में सीखने तथा इस कलीसिया से जुड़ने का निर्णय लेने में सहायता करती है। यह किसी नये चेहरे को पहचानने तथा उसका अभिवादन करने जैसा साधारण हो सकता है- जैसे web आधारित लक्ष्यपूर्ण मार्केटिंग, विशेष पार्किंग स्थल, रविवार की सुबह स्वागत कक्ष, दौरा करने वाला दल, परिचय देने वाली वीडियो और नियुक्त परिपाक करने वाला।

**बाइबल आधारित नींव :** नये विश्वासियों को वरदान बुलाहट और सेवा का मतलब समझाया जाता है। प्रारम्भ में लोग समझते थे कि स्वेच्छा से सेवा करने का अर्थ है- मैं सेवा करने का चुनाव कर सकता हूँ जो कि परमेश्वर के वचन से बाहर मतलब है। हमें सेवा करने के लिए बनाया गया है। जिसके तहत और भी बुनियादी तत्व रोमियों 12:3-8; इफिसियों 4:11-16; 1 कुरिन्थियों 12, याकूब 1:22-27 से, शिष्यता, बढ़ौतरी तथा कलीसिया के मुख्य कार्यक्रम और सिद्धान्तों के सन्दर्भ में सिखायी जाती हैं।

**खोज :** लोग अपनी बुलाहट व आत्मिक वरदानों के बारे में सीखते हैं। क्योंकि इसे सालों तक अलग अलग स्तर पर दोहराया जाता है, वरदानों की इस प्रारम्भिक कक्षा का मुख्य बिन्दू सेवा के प्रति चाहत पर ज़ोर देगा। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि किस शिक्षा सामग्री का इस्तेमाल किया गया, परन्तु जिस छोटे समूह या उससे सम्बन्धित किसी भी स्थान में जहाँ, वरदानों की खोज होती है महत्वपूर्ण है। वरदानों को सिखाया जाता है परन्तु इस धारणा वालों को नहीं (यह तो मेरी सन्तुष्टि पर निर्भर करता है, और मैं windows पर काम नहीं करता बल्कि यह सारी बातें हैं जो परमेश्वर ने मुझे दूसरों की खोज करने के लिए दी है वाली धारणा वालों को सिखाया जाता है।)

**मिलाना और नियुक्त करना :** यह प्रक्रिया व्यक्ति वरदानों और बुलाहट तथा उस स्थान के बीच जहाँ वे अपनी सेवा करने कह संभावनाओं को प्रगट करते हैं, आपसी सम्बन्धों को जोड़ती है। इस भाग को बनाना पद्धति के लिए सबसे भारी काम होता है। छोटी कलीसियाओं में, जो व्यक्ति वरदानों की खोज में अगुवाई करने वाला है और सेवकाई के मुख्य अगुवे, उस व्यक्ति को सौंपे जाने का कार्य फोन पर या किसी पार्क में हाथ मिलाने के द्वारा कर लिया जाता है। बड़ी-बड़ी कलीसियों में यही चुनाव कम्प्यूटर के डाटाबेस में चला जाता है। सेवकाई के प्रत्येक क्षेत्रों में एक व्यक्ति नियुक्त किया जाता है जिसे सेवकाई को जोड़ने वाला कहा जाता है, (बहुत कम मात्रा में सेवकाई के मार्गदर्शक इस ज़िम्मेदारी को लेते हैं) जो किसी भी उस नये व्यक्ति को बुलाने के लिए ज़िम्मेदार है जिस ने उनकी सेवकाई में अपनी रुचि प्रगट की हो। जोड़ने वाला व्यक्ति उस क्षेत्र में चल रहे चालू प्रशिक्षण और बाद में लोगों से मुलाकात करने का भी ज़िम्मेदार होता है और बाकी सारे मध्यस्थों (जोड़नेवालों) के साथ तिमाई सभा भी आयोजित करता है।

**प्रशिक्षण व मान्यता :** लोगों को बेहतर शिक्षा, कक्षाओं में बैठकर सीखने के बजाय, सेवा करने के दौरान दी जा सकती है। फिर भी, प्रशिक्षण और शिक्षा को ज़ाहिर करने के लिए निर्धारित समय होना चाहिए। इसके साथ-साथ परमेश्वर ने लोगों के भीतर ऐसी प्रवर्ति को डाला है कि उसे सराहना की ज़रूरत पड़ती है। और यदि अगुवों की सराहना नियमित रूप से की जाए तो उसका परिणाम अति सुखद होता है।

जितनी कलीसियाए छोटे-छोटे झुण्डों में बँटी है उन्होंने इन कदमों को, अन्दरूनी व व्यक्तिगत ज़रुरतों पर आधारित मसलों के द्वारा छोटे समूहों के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले तत्वों के खिलाफ, मुख्य अवरोधक कुँजियों के रूप में सहायक पाया है। जब कम्पैशन सेवकाइयों की तैयारी करना किसी छोटे समूह का मुख्य उद्देश्य बन जाता है, तो वह स्थान स्वयं ही ऐसे नियमित शिष्यताकेन्द्र के रूप में तब्दील हो जाता है जहाँ पर बाइबल अध्ययन व संगति बलिदान चढ़ाने वाले व जीवन बदलने वाली सेवा में परिवर्तित हो जाते हैं। फिर भी जब तक अगुवाई के प्रशिक्षण तथा निर्माणकारी पद्धति छोटे समूहों को कोई उत्तरदायित्व नहीं दे देते, वे अपनी व्यक्तिगत ज़रुरतों से आगे कभी नहीं देख पाते हैं।

**विस्तार व परिवर्तन करना :** क्योंकि बहुत से चाहते हैं कि उन्हें पहचाना जाये और कलीसिया के भीतर पहली बार काम किया जाये, इसलिए इस प्रक्रिया में विशेषकर इन लोगों को ध्यानपूर्वक कलीसिया के बाहर किये जाने वाले कामों से जोड़ने की आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य के लिए हमें एक ऐसे दल की ज़रुरत होती है जो समाज में प्राप्त संगठनों, ऐजन्सियों से लगातार सम्बन्ध बनाता है, और लोगों के लिए कार्यालयों और समुदाय के अन्दर कार्य करने के स्थानों को ढूँढ़ते हैं।

यह छठा कदम वह सिद्धान्त है जो इस निर्माणकारी पद्धति को कलीसिया में धार्मिक भलाईयों और धार्मिक उपभोक्ताओं के लिए अतिरिक्त सेवाएं उपलब्ध करवाने से बचाता है। कलीसिया के भीतर एक निर्माणकारी पद्धति का निर्माण करने के चार या पाँच वर्षों के पश्चात् समाज और कलीसिया के बीच विभिन्न क्षेत्रों में सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं। जैसे जैसे नये लोगों का साक्षात्कार होता जाता है पता चलेगा कि बहुत से लोग कम्पैशन सेवकाई को करने के लिए बुलाये गये हैं। यदि तैयार करने वाली पद्धति सही ठंग से कार्य कर रही है तो साक्षात्कार के पश्चात् नये सदस्य को कोई टेलिफोन नम्बर या पता नहीं दिया जाता है जो पहले से ही कम्पैशन सेवकाई के साथ कार्य करता है और उस व्यक्ति को फोन करके उसे पहली सभा तक अपने साथ लेकर जाता है। जब वे सभा में पहुँचते हैं तो वे वहाँ मैत्रिपूर्ण कम्पैशन सेवकाई को पाते हैं- जो कि अपने वरदान पहचान कर आये हुए स्वयं सेवकों के लिए सेवा है। प्रशिक्षण और नियुक्ति अति आवश्यक है। शिष्यता का प्रगट होना एक नियम है। अपेक्षाएं व भूमिकाएं स्पष्ट हों।

लेकिन, यदि इस प्रक्रिया में 4 से 5 साल का समय लग जाता है तो फिर आप अपनी विस्तार करने की प्रक्रिया को सार्थक कैसे बनाते हैं, विशेषकर तब जब आप एक छोटी सी कलीसिया हो ? यदि आपके 15 लोग 15 अलग अलग जगहों पर कम्पैशन सेवकाइयों को कर रहे हैं, तो वह अपनी शिक्षाओं को अवसर पाने पर भी एक साथ मिलकर प्रस्तुत करने से वंचित रह जायेंगे और उनके द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का प्रभाव मण्डली के दूसरे लोगों को कम्पैशन सेवकाई के प्रति जागरूक या उत्साहित करने के लिए ना काफी होगा।

शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम कलीसिया द्वारा सहायता प्राप्त सेवकाई को अपना लक्ष्य करके चुनो याद रखें, कि आप एक सीमित समय काल के लिए कलीसिया के लोगों से – कलीसिया की एक मुख्य बुलाहट जो कि कम्पैशन सेवकाई के कुछ क्षेत्र हैं, के लिए अपने व्यक्तिगत भेटों व बुलाहट को बलिदान करने के लिए आगृह कर रहे हैं।

प्रारम्भिक कालों में लक्ष्यपूर्वक सेवकाई के द्वारा कम्पैशन सेवकाई में शामिल होने के कार्यों को कुछ विशेष उद्देश्यों द्वारा किया जा सकता है, जिसमें आठ मुद्दे शामिल है:

*(1) क्या यह कोई ऐसा कार्य है जिसे कम्पैशन सेवकाई में सेवा प्रारम्भ करने वाला व्यक्ति जल्दी से सीख सकता है?* जवानों को शिक्षा देना आसान-प्रारम्भिक सेवकाई है। व्यस्कों का प्रशिक्षण या बन्दीगृह की अधिकतम सुरक्षा का प्रशिक्षण देना आसान काम नहीं।

*(2) क्या यह ऐसा कार्य है जो बिना विशेष योग्यता प्राप्त लोगों को बड़ी संख्या में शामिल कर सके?* पुरानी लकड़ी के सामान वाले घर में बहुत से भिन्न-भिन्न व सामान्य वरदानों की ज़रुरत हो सकती है परन्तु एक चिकित्सालय में गिने चुने और विशेष प्रकार के लोगों की ज़रुरत होगी।

*(3) क्या वह स्थान आपकी कलीसिया के लिए लाभदायक है?* बहुत से शहरों में, आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों में बड़ी-बड़ी इमारतें व अपार्टमेन्ट्स पाये जाते हैं। प्रारम्भिक स्तर पर, कम्पैशन सेवकाई के लिए नजदीक स्थान होना फायदेमन्द हैं क्योंकि इसमें ज़्यादातर आपकी कलीसिया के सदस्यों की भागीदारी की ज़रुरत पड़ेगी।

*(4) क्या यह ऐसा स्थान है जहाँ से पहले ही परमेश्वर ने हमारी कलीसिया के अन्दर मिश्रित-संस्कृति की चाहत रखने वाले, सम्बन्ध तथा अनुभव रखने वाले अगुवों को खड़ा किया है?* विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों के बीच उस भरोसे को कायम करने में कम से कम 5 वर्ष को समय लग जाता है, जिसके द्वारा अपनी योजनाओं को वहाँ कार्यान्वित किया जा सके।

कम्पैशन सेवकाई को गृहण करने वाले लोगों ने सभ्य लोगों के कार्यों को पहले ही देखा है कि वे किसी सेवा स्वीकार करनेवाले व्यक्ति की योग्यता, वरदानों, क्षमताओं को पहचाने बगैर ही अपनी सेवाएं उपलब्ध करा देते हैं। भरोसा केवल लोगों के लिए अतिरिक्त साधनों का इन्तेज़ाम करने से नहीं बल्कि लोगों की उनके वरदानों, दर्शन, तथा उनमें छुपे गुणों को इस्तेमाल करने के द्वारा बनता है। ध्यान दें कि परमेश्वर ने आपको कहाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों वाले सम्बन्धों में शामिल कलीसिया के लोगों के बीच में रखा है, जिन के बारे में शायद आपको ज़्यादा जानकारी न हो। उनके उदाहरणों से तरस व सशक्तिकरण सेवकाईयों के बारे में सीखने के लिए समय अलग करें। जिन एक या दो लोगों को परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से तरसपूर्ण सेवकाई के लिए आज्ञा दी हो और उसके द्वारा परमेश्वर जो मार्गदर्शन आपको देना चाहता है उसे तुच्छ न जाने।

*(5) क्या जिस ज़रुरत या मुद्दे को हम उठा रहे हैं, उससे उस जगह में कोई प्रत्यक्ष फर्क आ सकता है?* पूरे शहर के अपराधों के मुद्दे पर चर्चा करना, एक बड़ी कलीसिया के लिए भी बड़ा मुद्दा है। लोगों के बीच में तीसरे दर्जे के बच्चों की बराबर शिक्षा के स्तर वाले लोगों को अपना लक्ष्य बनाना बेहतर परिणामों को देगा।

*(6) क्या जिस ज़रुरत पर हम अपना ध्यान लगा रहे हैं वह आलोचनात्मक, व शायद हमारे समुदाय में कभी तबज़्जों न दी गयी ज़रुरत है?* पूरी न हो सकी ज़रुरतों तथा उन प्रयासों की खोज करें जिन पर काम चल रहा है ताकि आप उनके साथ जुड़ सकें।

*(7) क्या हम इस कम्पैशन सेवकाइयों की कहानी को कलीसिया में इस तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे हमारी कलीसिया की अन्दरुनी संस्कृति लगातार प्रभावित हो सके?* किसी भी कलीसिया में कम्पैशन सेवकाई के प्रारम्भिक काल में, यह अति महत्वपूर्ण है कि कलीसिया के लोग सामाजिक ज़रुरतों व जिन लोगों में सेवा निभाई जा रही है उनसे खुद को आसानी से जुड़ा हुआ महसूस कर सकें। नशीले पदार्थों के बीच सेवा या वैश्यावृत्ति के पेशे में पड़े लोगों को बाहर निकालने की सेवा के लोगों को समझाना थोड़ा मुश्किल काम होगा।

बच्चों तथा बुजुर्गों के बीच सेवा करना या लोगों का इसमें भावनात्मक रूप से जुड़ना आसान काम है।

*(8) क्या जिस कम्पैशन सेवकाई पर हम अपना पूरा ध्यान लगा रहे हैं वह हमें दूसरी कलीसियों के साथ सहभागिता करने के लिए प्रेरित करेगी?* कम्पैशन सेवकाई अति उत्तम सेवा है: जिसके साथ एक सम्पूर्ण कलीसिया होने में कोई खतरा नहीं है, जो कलीसिया अपनी पूर्ण सामर्थ में जाकर पूरे शहर को जीत ले। अपनी समानता की कलीसियाओं से भागीदारी करने में समय व साधनों की बचत होती है। आर्थिक रूप से पिछले क्षेत्रों में कलीसियाओं के साथ सहभागिता का निर्माण करना चाहिये जहाँ पर वे कुछ ऐसा कार्य कर रहे हैं जो सेवा करने के लिए अति आवश्यक है।

कलीसिया के इस निर्माणकारी पद्धति के छः भाग (परिपाक करना, नींव, खोज, नियुक्ति, प्रशिक्षण और विस्तार), अगुवाई प्राधिकरण दल के द्वारा और प्रशासनिक कार्यालय के द्वारा सहायता किये जाते हैं। बड़ी कलीसियाओं में शायद हर भाग के लिए अलग दल हो और उन पर एक मुख्य दल उन कार्यों पर नज़र रखता हो। एक छोटी कलीसिया शायद वह काम केवल एक तौर वेतन भोगी व्यक्ति का हो सकता है जो हमेशा पद्धति तथा लोगों को उनका बढ़ौतरी के अगले स्तर तक पहुँचाने वाले कार्यक्रम के बनाये जाने के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ व्यक्ति हो।

## पूरी पद्धति का निर्माण करने व तैयार करने के महत्व को बताने वाला एक मुख्य व ज़िम्मेदार व्यक्ति

निर्माणकारी पद्धति को तैयार करने वाला सर्वोत्तम मुख्य व्यक्ति अगुवाई के गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति है। जब भी कभी कोई काम करने के लिए होता है, तो उसकी सर्वप्रथम प्रतिक्रिया उसे खुद करना नहीं परन्तु मिश्रित गुणों वाले लोगों को दल के रूप में उस कार्य को करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य व भमिकाओं के साथ नियुक्त करना होगा। वह व्यक्ति लगातार दलों को बनाता व उन्हें स्पष्ट अपेक्षाओं और आवश्यक सहायता व साधनों के साथ सफलता प्राप्त करने के लिए भेजना है। यहाँ तक कि 50 लोगों की कलीसिया में भी, यदि केवल एक ऐसा व्यक्ति हो जिसे स्पष्ट अधिकार ज़िम्मेदारियां दी जाये, जिसके पास दूसरों से उनके वरदानों, बुलाहट, व नियुक्त स्थान के बारे में पूछने के लिए जहाँ वह व्यक्ति सेवा करेगा, वरदान हो, तो कलीसिया में ज़्यादा से ज़्यादा लोग कार्यों में शामिल होंगे। वे लोग सेवकाई को बनाने वाले बन जाते हैं जो लोगों के वरदानों को संदेश की ज़रुरत तथा संदेश के शब्दों को संदेश की जीवन शैली से जोड़ देते हैं।

जब यह तीनों निर्माणकारी सिद्धान्त उचित तरीके से कार्य करते हैं, तब कम्पैशन सेवकाई केवल पुलपिट तक ही सीमित नहीं रहती, परन्तु लोगों के जीवन में मुख्य केन्द्र बन जाती है। जब सेवकाई समुदाय और कलीसिया के भीतर परिवर्तन लाती है और वे लोग अपने आराम को छोड़कर बाहर कार्य करते हैं वहाँ कम्पैशन सेवकाई मौजूद होती है। हाँलाकि यह कार्य रविवार सुबह की सभा के द्वारा प्रारम्भ और सहायता किया जाने वाला कार्यक्रम है, फिर भी वह अकेले उसको नहीं सम्भाल सकती। इसके लिए धारणाओं को बदलने, पद्धतियों को तैयार करने, काम करने के लिए अगुवों में ऊर्जा भरने, तथा चेलों का विस्तार करने की ज़रुरत पड़ती है जो कलीसिया के भीतर व बाहर जाकर अपना प्रभाव डालते हैं। ■

**ब्राड स्मिथ.** डालास थिओलोजिकल सेमिनरी से स्नातक, जो डालास, टेक्सास में अगुवों के नेटवर्क के अध्यक्ष थे, और जिन्हें पासबान और कलीसिया स्थापित करने का अनुभव है।

## प्रचार कार्य व शिष्यता का चक्र

# एक अनन्त प्रक्रिया

**रैन्डी हर्सट के द्वारा**

जब प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को महान आज्ञा दी तो वह उनके लिए कोई नई बात नहीं थी। उसकी अपनी शिक्षाओं और उदाहरण के द्वारा यीशु मसीह अपने शिष्यों को उनके मकसद के लिए तैयार कर रहे थे।

उनके सामने मिशन केवल किसी दूसरे धार्मिक सामाजिक आन्दोलन को शुरू या एकत्र करना नहीं था। बल्कि वे परमेश्वर की ईश्वरीय गतिविधियों में शामिल होने जा रहे थे, जो मनुष्य जाति का खुद परमेश्वर से मिलाप था। जिस प्रकार से चेलों ने रोटी व मछली को गुणान्तर होते हुए देखा था उसी प्रकार अब उसके चेले उस सन्देश को फैलाने के कार्य में लग गये, जिसे प्रभु यीशु ने उनके हाथों में सौंपा था।

चारों सुसमाचारों में से प्रत्येक सुसमाचार उस मिशन पर ज़ोर देते हुए खत्म होता है जिसे यीशु मसीह ने अपने चेलों को इस दुनिया में अपनी सेवकाई के अन्त में सौंपा था। तीनों सुसमाचारों और फिर यूहन्ना रचित सुसमाचार में स्पष्ट तौर पर एक विस्तृत मिशन को प्रगट किया गया है जिसमें प्रचारकार्य व शिष्यता शामिल हैं।

विलियम टैम्पल के द्वारा एक सटिक व विस्तृत प्रचार की परिभाषा दी गयी थी, जो इस शताब्दी 98वें (1942-44) आर्चबिशप थे: ''प्रचार का अर्थ, इस तरह से परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रस्तुत करना है, कि मनुष्य उस पर परमेश्वर के रूप में भरोसा करने लगे, और कलीसिया की संगति में परमेश्वर मानकर उसकी सेवा करने लगे।''

प्रचारकार्य और शिष्यता को अलग-अलग रूप में प्रगट करना बेहद मुश्किल काम है, जिस प्रकार से मेघ धनुष के रंगों के बीच में एक रेखा को अलग से नहीं खींचा जा सकता ठीक उसी प्रकार से बाइबल के अन्दर प्रचार कार्य और शिष्यता किसी प्रगतिशील कार्य के दो भाग नहीं हैं, जो प्रचार से शुरू होकर शिष्यता पर खत्म होता हो। बल्कि वे मिलकर एक चक्र का निर्माण करते हैं। प्रचारकार्य, शिक्षा की विषय वस्तुओं के साथ करना चाहिये, तथा शिष्यता के दौरान विश्वासियों को प्रचारकार्य के लिए तैयार किया जाना चाहिये।

## शिष्यता पूर्व प्रचार कार्य

बीज बोने वाले दृष्टान्त में यीशु मसीह ने शिक्षा दी कि बीज - परमेश्वर का वचन, या संदेश - अलग-अलग प्रकार की भूमि पर गिरेगा। बहुत से लोग जो वचन को सुनेंगे वे प्रति उत्तर नहीं देंगे और जो प्रतिउत्तर देंगे वे बने नहीं रहेंगे। बहुत से लोग इस दृष्टान्त का नकारात्मक अर्थ निकालते हैं! क्योंकि तीन या चार प्रचार की भूमि अनन्त जीवन का उत्पादन करने में असफल रहीं। परन्तु यह दृष्टान्त बाधाओं से परे परमेश्वर के वचन की विजय द्वारा परमेश्वर के राज्य को उत्पन्न करने की बात कहता है। हालाँकि इसका अधिकतर भाग उन तीन प्रकार की भूमियों की चर्चा करता है जो फल देने वाली भूमि नहीं है केवल थोड़ी ही मात्रा में बीज उस भूमि पर गिरता है जो असल में अच्छी भूमि है। इस दृष्टान्त का अर्थ यह नहीं है कि अधिकतर बोने वालों की मेहनत बेकार हो जाती है।

बीज बोने वाले के दृष्टान्त का अधिकतर विवरण चार प्रकार के भूमि होने के बारे में बोलता है; लेकिन इस दृष्टान्त को दो प्रकार की भूमि प्रगट करने के दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है: फलदायक व फलहीन। दोनों ही प्रकार की भूमि को लेकर तीन उदाहरण दिये गये हैं। हर एक व्यक्ति इस से एक भाग की दो बातों तक अवश्य पहुँचता है। प्रचार कार्य का परिणाम, अच्छी भूमि पर निर्भर करता है- ऐसी भूमि जिसमें जीवन केवल प्रारम्भ ही नहीं होता बल्कि फलता फूलता और बढ़ौतरी करता है।

बहुत से लोगों का प्रचारकार्य से केवल इतना ही मतलब होता है कि एक अविश्वासी, पाप क्षमा के लिए प्रार्थना कर ले। परन्तु सुसमाचार प्रचार का मकसद किसी के द्वारा उद्धार के निमित्त निर्णय ले लेने से कहीं अधिक बढ़कर है। सुसमाचार प्रचार का मकसद, लोगों के जीवन में परिवर्तन है- जब एक व्यक्ति मसीह की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार आज्ञाकारिता से मसीह का अनुसरण करता है। जिसका अन्तिम लक्ष्य शिष्य बनाना है- समर्पित और विश्वास योग्य मसीह का अनुयायी।

दुर्भाग्य से, यदि कोई व्यक्ति बिना अच्छे से मसीह का अनुसरण करने का मूल्य जाने बगैर ही उसका अनुसरण करने का निर्णय ले लेता है तो, वह अच्छी शुरुआत तो ज़रुर करेगा परन्तु लगातार उसका अनुसरण करने तथा उसकी सेवा करने में असफल रहता है। इस प्रकार की परिस्थिती दृष्टान्त में दर्शायी गयी प्रथम तीन प्रकार की भूमियों में दिखायी गयी हैं। लोग सन्देश का सुनते हैं परन्तु चिड़िया बीज उठा ले जाती है, सूरज उसे जलाता है या काँटे उसकी बढ़ौतरी के मार्ग को रोक लेते हैं। यीशु ने बताया कि चिड़ियाऐं, सूरज, और काँटे लोगों के आत्मिक जीवन में बाधाओं को प्रगट करते हैं। इसमें सताव व धनी होने की इच्छा भी शामिल है। ये बातें संदेश के प्रभाव को लम्बे समय तक आगे जाने में बाधा डालते हैं।

अगर हम लोगों द्वारा यीशु को प्रभु करके गृहण करने के निणर्य को लेकर उतावली करते हैं तो यह सम्भव है कि लोग पवित्र आत्मा के साथ

सहयोग करके पहले उसके प्रति निर्णय लेने तथा बाद में चेला बनने में अनुसरण करने के बजाय, वे अपने जीवन में यीशु को स्वीकार करने का दबाव महसूस कर सकते हैं।

यह समझना कि शिष्यता को सुसमाचार प्रचार के विषयपूर्वक होना है, हमारे प्रचार करने की शैली को प्रभावित करेगी। यीशु ने शिक्षा दी कि उसके चेलों ने चेले होने का मूल्य अवश्य जानना चाहिये: ''जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता वह मेरा चेला नहीं है। क्योंकि तुम में से कौन ऐसा है, जो एक इमारत बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर हिसाब न लगाये कि वह उस काम को पूरा कर पायेगा या नहीं?'' (लूका 14:25, 27)।

एक अविश्वासी ने मसीही की ओर से क्षमा प्राप्त करने तथा उसका अनुसरण करने के लिए निर्णय लेने के महत्व को समझना अति आवश्यक है। विश्वासी लोग सावधान रहें और अविश्वासियों पर निर्णय लेने के लिए कोई भावनात्मक दबाव बनाने की ज़रुरत नहीं है, क्योंकि इस दशा में न तो वह कुछ समझ पाते हैं और न निर्णय लेने के लिए तैयार होते हैं। जब हम किसी व्यक्ति के साथ मसीह को ग्रहण कराने में प्रार्थना कर रहे हों, तो हमें निश्चय करना चाहिये कि जो वह कर रहा है उसे वह समझे। इसके लिए बुद्धि और अनेकों बार खुद को सीमित करने की आवश्यकता पड़ती है।

हम लोगों को मसीह को अपना जीवन समर्पित कराने के निमित्त निरुत्तर कराने के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। सुसमाचार प्रचार मात्र कोई मानवीय धारणा नहीं है। यह एक पवित्र आत्मा का कार्य है। यीशु ने यह वायदा किया कि पवित्र आत्मा संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा (यूहन्ना 16:8)। हम लोग केवल संदेश को स्पष्ट रूप से सुनाने के लिए ज़िम्मेदार है। परन्तु पवित्र आत्मा लोगों को कायल करता और उनके दिलों को समझाता है। जब हम इस बात को समझ जाते हैं कि परमेश्वर सुसमाचार प्रचार के कार्य में पहला कदम बढ़ाता, और सक्रिय रहता है, तो इससे हमें हिम्मतवाला, तथा उसके कायल करने के कार्य पर निर्भर होने में सहायता मिलती है। इसके साथ-साथ हम धीरज के साथ उसके समय का इन्तज़ार करने वाले बन जाते हैं बजाय इसके कि हम लोगों पर असिद्ध निर्णय लेने का दबाव डालें। इससे अपनी गवाही में न तो हिचकने और न ही जल्दबाज़ी करने की ज़रुरत पड़ती है।

## सुसमाचार प्रचार पूर्व शिष्यता

सुसमाचार प्रचार व शिष्यता का चक्र तब सम्पूर्ण हो जाता है तब चेले ऐसे संदेश वाहक बन जाते हैं जो खुद प्रचार करते हुए और अधिक चेले बनाते हैं।

इस क्षेत्र में अमेरिका व अन्य पाश्चात्य देशों की कलीसियाएं संसार के अन्य देशों की कलीसियाओं से सीख सकते हैं। पिछले 50 वर्षों के अन्दर संसार के अनेकों देशों की असेम्बली ऑफ गॉड कलीसियाओं के अन्दर पाश्चात्य देशों की तुलना में कहीं अधिक बढ़ौतरी हुई है। यह बात विशेष कर लैटिन अमेरिका, अफ्रिका और एशिया के देशों में सत्य है। तीसरे संसार के देशों की कलीसियाओं इतनी ज़बरदस्त विस्फोटक बढ़ौतरी का एक मात्र कारण यह है कि वहाँ विश्वासियों को सिखाया व उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे सुसमाचार प्रचार करें। अमेरिका में बहुत से विश्वासी अपेक्षा करते हैं कि वेतन भोगी व प्रशिक्षित कलीसिया के कार्यकर्ता ही सुसमाचार प्रचार करें। जिन देशों में वेतन भोगी कलीसिया के कर्मचारी कम हैं उन्हीं देशों में मण्डली के लोग सुसमाचार प्रचार करने में अधिक क्रियाशील हैं।

एक प्रभावशाली गवाह होना कभी भी इस बात पर निर्भर नहीं करता कि व्यक्ति लम्बे समय से मसीह का अनुसरण कर रहा है या वह कितना अधिक आत्मिक परिपक्व है। हज़ारों कलिसियाओं की गहन खोज बीज के परिणाम यह बताते हैं कि अधिकतर व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार उन लोगों के द्वारा किया गया है जो एक वर्ष से भी कम समय से मसीही हैं।

व्यक्तिगत तौर पर सुसमाचार प्रचार करना मसीह का अनुसरण करने का एक हिस्सा है। यह हर एक विश्वासी के जीवन में एक ज़िम्मेदारी है कि वह अपने आस पड़ोस में रहने वाले अविश्वासी के जीवन में अपना प्रभाव डाले।

## विषय वस्तु

पौलुस द्वारा लिखित कुलुस्सियों की पत्री में सुसमाचार प्रचार व शिष्यता की विषयवस्तु स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी है: उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे - ''यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो'' (कुलुस्सियों 1:22, 23)। पौलुस लगातार सुसमाचार प्रचार करने के मुख्य कारण को और आगे बताता है कि ''जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें'' (कुलुस्सियों 1:28)।

देखिये हर एक शिष्य के लिए लक्ष्य के सम्मुख पवित्र, निर्दोष और निष्कलंक - धरती पर उनके जीवन के अन्त में - परमेश्वर के सम्मुख पवित्र, निर्दोष और निष्कलंक - मसीह में सिद्ध करके प्रस्तुत करें।

जैसे वे सुसमाचार प्रचार में स्थानीय कलीसिया

> ***जिस प्रकार से चेलों ने रोटी व मछलियों को गुणा होते हुए देखा था, उसी प्रकार अब उसके चेले, उसके सन्देश को फैलाने के कार्य में लग गये जिसे प्रभु यीशु ने उनके हाथों में सौंपा था।***

की अगुवाई करते हैं, पासबान को कभी-कभी निर्णय लेने की ज़रुरत पड़ेगी, कि समय और साधनों का इस्तेमाल किस प्रकार से किया जाये। हमें पौलुस के समान सुसमाचार प्रचार के लिए समर्पित होने की ज़रुरत है ''किसी भी तरीके से'' (1 कुरिन्थियों 9:22)। परन्तु हमें उन तरीकों को प्राथमिकता देनी होगी, जिसका परिणाम परमेश्वर का वह लक्ष्य हो जो उसने वचन में परिभाषित किया है - ऐसे चेले जो ''मसीह में सिद्ध हो'' (कुलुस्सियों 1:28)। इस का अर्थ बहुत सी बार ऐसे तरीकों को चुनना हो सकता है जिसके द्वारा प्रारम्भिक तौर पर हमें यीशु को स्वीकार करने वाले निर्णय प्राप्त न हों परन्तु उसका परिणाम ज़्यादा शिष्य होंगे।

यीशु का सारा ध्यान पाप के अनन्त नतीजे और प्रत्येक व्यक्ति की मंजिल पर लगा है। सुसमाचार प्रत्येक सुनने वाले को निर्णय लेने तथा परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देने के लिए बुलाता है। सुसमाचार का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति का उद्धार है जिनके समावेश से मसीह की दुल्हन तैयार होगी। कलीसिया का मकसद मसीह के मिशन में शामिल होना है जो ''बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचता है'' (इब्रानियों 2:10)। सुसमाचार प्रचार और शिष्यता एक ऐसा अनन्त चक्र है जिसके तहत उन लोगों तक पहुँचना व उन्हें प्रभु में बनाये रखना शामिल है जो मसीह के अनन्त राज्य के नागरिक बनते हैं। ■

**रैन्डी हर्सट,** स्प्रींगफील्ड, मिसोरी, असेम्बली ऑफ गॉड वर्ल्ड के कम्युनिकेशन डायरेक्टर तथा कमीशन औन इवैन्जलीज़म के कमिशन हैं।

# तरसपूर्ण सुसमाचार प्रचार

*लोगों को परमेश्वर के उद्धार की शक्ति की जानकारी में लाने के लिए आत्मा द्वारा अभिषिक्त कृपा एक अविश्वसनीय औज़ार हैं।*

**जॉन लिन्डेल के द्वारा**

**कोई मेरे कार्यालय में एक - स्प्रे ( सुगन्ध द्रव्य ) छोड़ गया।**

गालों में जीभ, उस पैकेज के विज्ञापन में लिखा था 'तुरन्त ही परमेश्वर पर विश्वास कर लो- चमत्कारी पेपरमिन्ट के जैसे विश्वास को बढ़ाने वाला स्प्रे'। क्या आप नहीं सोचते कि काश लोगों तक सुसमाचार पहुँचाना इतना आसान होता?

परमेश्वर ने हमें इसलिए बुलाया है कि हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन परिवर्तित कर देने वाले संदेशों के द्वारा चेले बनाये। परन्तु हमारे अति आधुनिक संसार में, हमें केवल सुनने से कोई फायदा नहीं पहुँचता है। यह बात विशेष कर बुज़ुर्गो के लिए सत्य है: लोगों को तब तक इस बात की कोई परवाह नहीं कि आप कितना जानते हैं जब तक वे यह जाने कि आप कितनी परवाह करते हो।

जो लोग सुसमाचार व आराधना के साजो सामान के बारे में जानकारी रखते हैं, वे आकर हमारे संदेशों को सुनना पसन्द करते हैं। लोगों को प्रतिउत्तर देने के लिए अभिषिक्त व स्पष्ट परमेश्वर के वचन के प्रस्तुतिकरण की ज़रुरत होती है। तब तक मैं, बाइबल से प्रचार करना तथा लोगों को आमन्त्रित करना नहीं छोड़ूँगा।

परन्तु लाखों लोग जल्द ही कलीसियों में जाने की योजना नहीं बना रहे हैं। वे सुसमाचार की सामर्थ्य की ज़रुरत महसूस नहीं करते क्योंकि उन्होंने सुसमाचार को प्रगट में नहीं देखा है। हमारा आधुनिक संसार बड़ा व्यवहारिक है और जो चीज़ें कार्य करती हैं वह उन्हीं में रुचि दिखाता है। फिर भी, इनके किसी कोने में, भी वही चाह पायी जाती है जिसे किसी भी आयु का व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर पाता है-सच्चा तरस तथा भलाई। हम इन दोनों शब्दों का निचोड़, लोगों के लिए सेवा करने वाले व्यक्ति के हृदय के रूप में निकाल सकते हैं। ''हमें लोगों के जीवनों की ज़रुरतों को प्रगट में पूरा करने के द्वारा अपनी तरसपूर्ण भावनाओं को कार्य में प्रगट करना है।''

प्रारम्भिक कलीसियाओं की एक मुख्य निशानी थी-एक ऐसा कारण जिसकी वजह से वह गैर-मसीही समाज पर अपना अत्यधिक प्रभाव डाल सके, जो उनसे नफ़रत करते थे, क्योंकि वे तरसखाने वाले और कृपालु थे। वे लोगों के जीवन में प्रभाव डालने के लिए कृपा व भलाई की शक्ति को समझ गये। वे भी हमारे ही समान ऐसे समाज में रहा करते थे, जिनमें जीवन का मूल्य नहीं था। लोग अपने अपंग बच्चों को शहर के कूड़ेदान में फैंक दिया करते थे। लोग अपनी अनचाही बेटियों को कचरे में फेंक देते थे। मसीहियों ने उन छोटे-छोटे बच्चों को बचाया, उन्हें भोजन दिया तथा उनके जीवन निर्वाह के लिए इन्तेज़ाम किये।

कलीसिया के भीतर गरीब व ज़रुरतमन्द लोगों के लिए इतना प्रेम था कि कलीसिया में उपवास के दौर चला करते थे। केवल गरीबों के लिए उपवास और प्रार्थना ही नहीं परन्तु वे उन पैसों को भी बचाया करते थे जो उन्होंने उपवास के दिनों में भोजन वस्तु न खरीदने के द्वारा बचाये होते थे, और वे उसे गरीबों व ज़रुरतमन्द लोगों को दे दिया करते थे। ऐसे समाज में जहाँ पर गरीबों व ज़रुरतमन्द लोगों की कोई परवाह नहीं की जाती थी, मसीही लोग उसके मार्गों में जाकर सुसमाचार सुनाते और गरीबों और ज़रुरत मन्दों की देखभाल किया करते थे।

प्रारम्भिक कलीसियाई काल के इतिहासकार हमें बताते हैं कि जब दो उजाड़ने वाली महामारियों ने अपना प्रकोप रोमन-सम्राज्य में दिखाया (165 ई० और 251 ई०), जिसमें करीब एक तिहाई लोग मर गये। लोग डर के मारे कि कहीं वह महामारी उन्हें अपनी चपेट में न ले ले, शहर छोड़कर भाग गये। उन महामारियों के दौरान मसीही लोग उन नगरों और शहरों में लोगों की सेवा करने के लिए रुके रहे। बहुत सी बार तो वे खुद ही महामारी का शिकार बन गये। जैसे जैसे वह उन कष्ट में पड़े हुए लोगों की सेवा कर रहे थे, इससे लोगों में गहरा असर पड़ा। और मसीहियों के तरसखाने व ज़रुरत के समय भलाई के कार्य करने की वजह से कुछ ही समय में एक पूरा समाज परिवर्तित हो गया।

यदि हम थोड़ा और गहराई में जाएं, तो पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसियां को पूर्व सुसमाचार के रुप में करुणा और भलाई के वस्त्र धारण करने के लिए आज्ञा दी थी (कुलुस्सियों 3:12), जिसके अन्तरर्गत कलीसिया लोगों के हृदय को सुसमाचार को सुनने के लिए, उनकी ज़रुरतों को पूरा करने के द्वारा खोलता है। लोगों को परमेश्वर की शक्ति की जानकारी में लाने के लिए आत्मा द्वारा अभिषिक्त कृपा एक अविश्वसनीय औज़ार है। प्रेरित पौलुस हमें रोमियों 2:4 में याद दिलाते हैं कि परमेश्वर की कृपा हमें मन फिराव सिखलाती है।

कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि हमने सुसमाचार प्रचार को बहुत अधिक जटिल बना दिया है। बहुत से मसीही लोग इसलिए अप्रभावशाली प्रचारक है क्योंकि वह अपने ऊपर, हर सवाल का जवाब उनके पास होने का बोझ महसूस करते हैं। मैं बहुतायत से यह विश्वास करता हूँ कि लोगों के प्रति करुणा और भलाई से भरा दिल एक ऐसे प्रकाशयान सितारे के समान चमकेगा कि जो लोग अन्धकार में डूबे हुए हैं कि वे भी अपने घर जाने का मार्ग देख पायेंगे। ■

**जॉन लिन्डेल,** जेम्स रिवर असेम्बली ऑफ गॉड, ओर्जाक, मिसूरी के पासबान हैं।

# मिश्रितकर्ता पात्र में जीवन

## मिश्रित परिवारों की ज़रुरतों में सेवा निभाना

*तैयार हो या नहीं, फिर भी सौतेले परिवार व एकाभिभावक परिवार सामने आ ही जाते हैं। ये परिवार आज आपकी कलीसिया के अन्दर अत्यधिक महत्वपूर्ण संस्कृति को प्रस्तुत करते हैं। वे अब आपका व्यापार या काम हैं।*

डोनाल्ड आर पार्टरिज के द्वारा

वे आपकी कलीसिया के नाज़ुक मुद्दे हैं। इन रीतियों ने आज लगभग हर व्यक्ति को प्रभावित कर रखा है और हो सकता है शायद आपका परिवार भी इससे प्रभावित हो।

जिन मुद्दों का इस प्रकार के परिवार अपने जीवन में महसूस करते हैं वे बहुत बड़े हैं। इस लेख में मैंने उनमें से कुछ गम्भीर मामलों पर चर्चा की है और उनका समाधान भी बताया है। आप इसके द्वारा उन बातों को सीखेंगे, जिसका आपको, शायद ज्ञान न हो, और मैं उसके लिए बाइबल के समाधान को बताऊँगा। परन्तु इस लेख के साथ-साथ एक चुनौती भी आती है। क्या आप पुन: दिशा निर्धारण के लिए तैयार हैं?

क्या आप आंकड़ों को जानते हैं: वर्तमान में लगभग आधे व्यस्क लोग अकेले (अविवाहित) हैं, या फिर उनके परिवार टूट गये हैं और वे फिर से अकेले हैं, या वे एकाभिभावक हैं। बाकि बचे हुए आधे लोग विवाहित हैं, और उन विवाहित परिवारों में से आधे सौतेले परिवारों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। तलाक के आंकड़ें हमें बताते हैं कि लगभग 43 प्रतिशत विवाह और 60 प्रतिशत पुन: विवाहित परिवार असफल हो जाते हैं। इस विषय ने समाज में इतना ज़ोर पकड़ रखा है कि लोग दूसरी, तीसरी, चौथी और उससे भी ज़्यादा बार पुन:विवाह को कर रहे हैं। बिना किसी कारण एकाभिभावक और पुन:विवाहित या सौतेले परिवारों के आंकड़े निरन्तर बड़ते चले जा रहे हैं।

पुन:विवाहित परिवारों और एकाभिभावकों के साथ काम करना आपकी कलीसिया की प्रधान सेवकाई क्यों बन जाऐगी? जब आप अपने समाज में जाते हो तो आप वहीं प्राप्त करते हो जो वहां होता है और वर्तमान में इसका सबसे बड़ा हिस्सा पुन:विवाह व एकाभिभावक वाले परिवार हैं।

कलीसिया के सिर ने कहा: प्रभु की आत्मा मुझ पर है क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ; कि बन्दियों के लिए स्वतन्त्रता का, और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूँ; कि यहोवा के प्रसन्न रहने का वर्ष और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ, कि सब विलाप करने वालों को शान्ति दूँ (यशायाह 61:1, 2)।

और भी बहुत से ऐसे तथ्य हैं जो लगातार टूटे व चोटिल पुन:विवाहित व एकाभिभावक परिवारों में उपयुक्त ठहरते हैं।

अत: आइये एक ऐसे परिवार से मिलते हैं जो आपकी कलीसिया में आया है। नामों व स्थान को छोड़कर यह कहानी बिल्कुल सत्य है।

पीड़ा दायक तलाक की परिस्थिति से गुजरने के पश्चात, बारबारा, जो विचित्ता केन्सास की निवासी है, ने अपनी दो पुत्रियों को वहाँ से लेकर कहीं दूर जाने का फैसला किया। उन्होंने सेटेल, वाशिंगटन में काम करने की बात कर ली और वहाँ जाने के लिए पैसे भी दे दिये। लेकिन उनके वहाँ से जाने से कुछ ही दिन पहले बच्चों के पिता बारबारा को कार्ट तक ले गये और उसे बच्चों को अमेरिका से ले जाने से रोक लिया। अत: बारबारा को पश्चिम अकेले जाना पड़ा। और जैसे ही बारबारा के पश्चिम कार्य का समय समाप्त हुआ वह वापस विचित्ता आ गयी।

वर्तमान समय में बारबारा का सम्बन्ध अपने बच्चों से उसकी ग़ैरमौजूदगी की वजह से खराब हो गया है क्योंकि बच्चों का पिता लगातार बारबारा के खिलाफ उनके कान भरता रहा। बच्चे अपने पिता के साथ रहते हैं परन्तु बारबारा चाहती है कि बच्चे उसके पास वापस आकर रहे, और इस बात का बहुत सी बार पिता ने विरोध भी किया है। बार-बार उन्हें न्यायालय जाने की धमकी मिलती है।

अब इस कहानी में इसे भी जोड़ें। सेटल में रहते वक्त बारबारा की मुलाकात एक विवाहित व्यक्ति जेकब से होती है, जो बारबारा के साथ विचित्ता वापस आये। बारबारा और जेकब के बीच वैसे ही बारबारा के बच्चों को लेकर झगड़ा हो जाता है। वह चाहता है कि बारबारा अपने जीवन में अनुशासन बना कर रखे, परन्तु बहुत सी बार बारबारा ऐसा करने से इनकार कर देती है। वह अपनी पुत्रियों से पुन: घनिष्ट सम्बन्ध को बनाना चाहती है और उसके सामने अपनी बेटियों से हमेशा के लिए रिश्ता टूट जाने का खतरा बना रहता है।

क्या यह कहानी और भी अधिक खराब हो सकती है? जेकब की पहले ही दो शादियाँ हो चुकि हैं और उसके तीन बच्चे भी हैं: उनकी पहली पत्नी न्यूयॉर्क में दो बच्चों के साथ रहती हैं; और दूसरी सेटल में एक बेटे के साथ रहती हैं। जेकब ने महीनों से अपने बच्चों से बातचीत नहीं की है। उसकी दोनों पत्नियों ने अपने बच्चे को जेकब के खिलाफ़ भड़का रखा है। जब वह न्यूयॉर्क में अपने पास बुलाता है तो वह उसके साथ रहते हैं। और अब वह सेटल में अपने बेटे से दूर जाकर बस गये हैं, बारबारा और जेकब रविवार की सुबह आपकी कलीसिया में बैठे हैं। वह देखने में अच्छे और बातें करने में मनभाऊ हैं। फिर भी कहीं उनके जीवन का कष्ट और उलझने सामने दिखाई पड़ती हैं। उन्हें आपकी ज़रुरत है। परन्तु आप कैसे उनकी मदद कर सकते हैं?

सर्वप्रथम, आप जो कुछ उस रविवार की सुबह कहते हैं, उस से उनकी सहायता कर सकते हैं। जैसे जैसे आप उनसे बातचीत करते हैं आप उन्हें व उनकी चिन्ताओं को समझ पायेंगे, और वे लोग आपकी कलीसिया में सही मार्गदर्शन व सलाह प्राप्त कर सकते हैं। यह दम्पत्ति अपने लिए, अपने बच्चों के लिए और दूसरे एकाभिभावक व सौतेले परिवारों के लिए स्वास्थ्य और मज़बूती बन सकते हैं।

यही वह यशायाह की सेवकाई है जिसका वर्णन यीशु मसीह कर रहे थे। क्या आप बारबारा और जेकब जैसे जोड़ों के लिए ज्योर्तिमय भवन बनना और अपनी कलीसिया को बढ़ौतरी करता हुआ देखना चाहेंगे? यदि हाँ, तो आइये हम आगे बढ़ते हैं।

## अकस्मात आराम का खतरा

हमें उन मुख्य कारणों को समझना है जिनके तहत बहुत से एकाभिभावक तिथिनिर्धारण (मिलने) तथा तत्पश्चात विवाह करने की जल्दबाज़ी करते हैं। बारबारा, और जेकब दोनों ही तलाकशुदा थे जो सेटल में बसे हुए थे। उस मिलने जुलने को देखिये जिसकी वजह से वे विवाह करने का निर्णय ले लेते हैं। इससे आपको यह समझने में आसानी होगी कि उनके प्रारम्भिक रिश्तों में क्या हुआ।

बाइबल तलाक के बारे में विस्तार से बताती है। क्योंकि विवाह के समय जोड़ा एक यूनिट बन जाता है और वे एक तन होते हैं, इसलिए जब यह जोड़ा बिछड़ता है तो यह एकता बुरी तरह से दो भागों में बट जाती है; और जिससे उनका जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। तलाक, शादीशुदा जोड़े के एक या दोनों ही हिस्सों के द्वारा किये जाने वाला शारीरिक नुकसान तथा विश्वासघात के तहत लिया जाने वाला उग्र व खतरनाक निर्णय होता है।

आइये अब हम इसके न्याय सम्बन्धि मुद्दों को जोड़ें, बच्चों को अपने पास रखना और उनसे मिलना, आर्थिक समस्या, अपने बच्चों से अलग रहने का दबाव, अब जीवनसाथी भूतपूर्व व विरोधी संगी हो जाता है, सारे पुराने मित्र व रिश्तेदार आपके विरोधी बन जाते हैं। इनकी वजह से ऐसे अवयवों का निर्माण होता है, जिनका परिणाम अति-असुरक्षित व्यक्ति होते हैं।

सोच कर देखिय टूटे दिलों, और भावनाओं के माहौल में जब बारबारा और जेकब मिले होंगे तो क्या हुआ होगा। तुरन्त ही उनके अन्दर व्यस्क सहानुभूति व शायद साथी के साथ होने का अनुभव हुआ होगा। वे भावनाएं जो सालों से दबी होंगी वे अचानक उभर कर सामने आने लगी होंगी। इन्हीं भावनाओं ने बारबारा व जेकब को बेकाबू कर दिया।

एक दम से वातावरण में बहुत से बदलाव आ सकते हैं। न तो बारबारा और न ही जेकब को पता चलता है कि उनके अन्दर उठ रही अन्दरुनी भावनाएं व एहसास उस वातावरण के बदलाव का परिणाम है। उनकी भावनाएं, जल्द ही बेकाबू होने जा रही थी। अविवाहित लोग सम्बन्ध की ओर आकर्षित होते हैं परन्तु एकाभिभावक सम्बन्धों में धकेल दिये जाते हैं। अविवाहित लोग तारीख निर्धारित करके सम्बन्धों में बड़ते हैं। एकाभिभावक भोजन के समय एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। वे एक घण्टे की बातचीत के दौरान ही "आप कैसे हैं?" से "यही वह व्यक्ति है जिसके साथ मैं अपना बाकि का जीवन बिताना चाहता हूँ" की स्थिति तक पहुँच सकते हैं।

बारबारा और जेकब के बीच पहली ही मुलाकात के दौरान उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि उन्हें जो भी कुछ एक दूसरे के बारे में जानने की ज़रुरत है वे एक दूसरे के बारे में जान चुके हैं। उन्होंने अपने साथ में रहने की योजना के चलते दिखने वाली सारी समस्याओं का ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। नीतिवचन 27:7 कहता है: "सन्तुष्ट होने पर मधु का छत्ता भी फीका लगता है, परन्तु भूखे को सब वस्तुएं भी मीठी जान पड़ती हैं।" उन्होंने इन सच्चाईयों को नज़रअन्दाज कर दिया कि जेकब के पहले से ही दो विवाह हो चुके हैं और बारबारा अपने बच्चों से दूर रह रही है। उनके सम्बन्ध में हर एक चीज़ मधुर थी।

आप एक पासबान होने के नाते उनकी मदद कैसे कर सकते हैं?

एकाभिभावक के लिए जो पुन:विवाह कर सकते हैं, उनके दिनांक निर्धारण करने से पहले उन्हें इस प्रकार के सम्बन्धों द्वारा उठने वाली भावनाओं के बारे में बताएं। उन्हें बताएं कि इस अचानक वातावरण परिवर्तन के कारण कैस कैसे भावनात्मक प्रभाव हमारे जीवन में आते हैं। उन्हें बतायें कि इस तरह आगे बढ़ने पर यह भावनाएं लगभग बेकाबू हो जाती हैं। उन्हें बतायें कि वे चाहेंगे कि उनका यह सम्बन्ध प्रकाश की गति से आगे बड़े कि परमेश्वर स्वपन में दैहिक रूप से प्रगट हो, और दर्शन तथा उनहें अनन्त पुष्टि दे; कि

वे न्याय को नज़रअन्दाज करेंगे, भूल जायेंगे कि वे कौन हैं, अपने भागीदारों की महिमा करेंगे, दिनांक निर्धारित करना भूल जायेंगे, नैतिकता को पीछे छोड़ देंगे (और इस समय के दौरान) वे अपने बच्चों को भी भूल जाएंगे।

उन्हें शिक्षा दें कि शादी केवल धैर्य रखने वाले, आराम से चलने के इच्छुक व बुद्धिमानी से तैयारी करने वाले लोगों की ही कामयाब होती है।

किन बातों की अपेक्षा की जाए के बारे में ज्ञान प्राप्त करने से, उन्हें तिथी निर्धारण के वक्त खुद को सुरक्षित होने में, अपनी भावनाओं को नियन्त्रित करने में, और उनकी ज़्यादा मिलने-मिलाने की आदत में सुधार लाने में सहायता मिलेगी।

## पारिवारिक सम्बन्ध

जितनी जल्दी पुन:विवाहित परिवार आपस में जुड़ जाते हैं, उतनी ही जल्दी उनका सम्बन्ध टूट भी जाता है। देखिये ऐसा क्यों होता है। उत्पत्ति 2:24 कहता: ''इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।''

***अभिभावक तिथी निर्धारित करके समय लेते और आपसी सम्बन्धों में बढ़ते हैं, जबकि एकाभिभावक केवल एक ही समय के भोजन करने में प्रेम करने लगते हैं***

विवाहित जोड़े को अलग व स्वाधीन रहने के लिए, और अपने परिवार की बागडोर सम्भालने के लिए बनाया गया है। आप उन समस्याओं के बारे में कल्पना करके देखिये जब कहीं विवाहित व्यक्ति के जीवन का नियन्त्रण विवाह उपरान्त भी उसके माता-पिता के हाथों में हो। अधिकारों पर अधिकार व सम्बन्धों पर अतिरिक्त दबाव पड़ने से दुविधापूर्ण स्थिति खड़ी हो सकती है। परन्तु प्रथम विवाह और पुन:विवाह के फरक को ज़रुर बताइये।

प्रथम विवाह में, जोड़ा जानबूझकर बाहरी रिश्तों व अधिकारों से बचते हैं; जबकि पुन:विवाह करने से बाहरी रिश्ते व सम्बन्ध ज़बरजस्ती अपने पैर पसार लेते हैं। प्रथम विवाह में संगी साथी स्वाधीन और धनिष्टता के साथ एक दूसरे से जुड़े होते हैं। परन्तु पुन: विवाहित लोग शादी के पहले दिन से ही अपने बच्चों से मुक्त नहीं होते इस कारण उनका अपने वर्तमान साथी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम नहीं होता है।

बाहरी अतिरिक्त सम्बन्धों से अलग रहने से शान्ति मिलती है। एक और रिश्ते के होने से अपने आप ही परेशानियाँ और कठिनाइयाँ खड़ी हो जाती हैं।

प्रथम विवाह के अन्दर पति और पत्नी ''एक शरीर होते हैं'' और उनके बच्चों में उन दोनों के जैविक गुण पाये जाते हैं, माता-पिता तथा बच्चे एक परिवार होते हैं।

इसके विपरीत पुन:विवाहित सदस्य शारीरिक व सामाजिक तौर पर आपस में जुड़े हुए प्रौढ़ होते हैं। और बच्चों के दूसरे अभिभावक और दूसरे अभिभावक, परिवार के भागीदार सब ही लोग परिवार पर अपना अधिकार जताने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के परिवार की उलझने बयान से बाहर हों सकती हैं। वे अच्छे से अच्छे परिवार की धज्जियाँ उड़ा सकते हैं।

आप अधिक संख्या में पत्नियाँ और दूसरे पिता से उत्पन्न सन्तानों की घटनाओं को बहुतायत से वचनों और इतिहास में पा सकते हैं, जिसके तहत माता और पिता आपस में लड़े और उन्होंने कभी न खत्म होने वाली लड़ाई को छेड़ दिया जैसे- सारा और हाजिरा, इश्माइल और इसहाक, लिया और राहेल, याकूब के सारे पुत्र व उनका सौतेला भाई युसुफ, दाऊद की कष्टदायक सन्तान, गिदोन के 70 पुत्र, यिप्तह व उसके आधे-भाई, हन्ना और उसकी सौत पनिन्ना के साथ समस्या और भी ऐसे नाम बाकी हैं। यदि आधे भाई और बहनों में ये सम्बन्ध कारगर साबित नहीं हुए तो हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि अनजान लोगों के बीच पुन:विवाह में यह सम्बन्ध सार्थक हो जाएंगे?

जेकब और बारबारा को भी समस्या कुछ इस ही प्रकार की थी। जेकब, बारबारा के बच्चे पालने के तरीके की आलोचना करता है। बारबारा की बेटियों ने जता दिया है कि उन्हें अपनी निजी ज़िन्दगी में कोई हस्तक्षेप नहीं चाहिये। बारबारा और उसकी बच्चियों का पिता इस लड़ाई में पड़े हैं कि उनके बच्चे आखिर किसके पास रहेंगे। और क्योंकि जेकब अपने बच्चों से काफी लम्बे समय से दूर रहा है उसकी भूतपूर्व पत्नियाँ उसके बच्चों का हृदय उसके खिलाफ भड़का रही हैं।

क्या एकाभिभावक, व पुन:विवाहित परिवारों में सुन्दर व मधुर सम्बन्ध सम्भव हैं? क्या जेकब व बारबारा की बच्चियों के बीच एक प्रेम पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो सकता है? क्या आप एक पास्टर होने के नाते उनकी सहायता कर सकते हैं? बिल्कुल! यहाँ पर सुझाव दिये गये हैं।

बाइबल हमें बताती है कि बच्चों को अपने माता-पिता का आदर करना चाहिये, कि हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है और उनके प्रति भलाई प्रगट करनी है जो हमें सताते हैं। जो एक थप्पड़ मारे उसे दूसरा गाल भी दे दो, और जो हमारे समय और ताकत को चाहता है उसके साथ एक मील फालतू चले जाओ। इसलिए हम निम्नलिखित बातें कर सकते हैं और हमें करनी चाहिये:

सर्वप्रथम, एकाभिभावक और पुन:विवाहित परिवार के प्रत्येक रिश्ते को अच्छी तरह समझा दें। जिस प्रकार से हम जानते हैं कि प्रथम विवाहित परिवार में उस परिवार के जन जीवविज्ञानिक आधार पर समानता में होते हैं। ठीक उसी प्रकार से पुन:विवाहित परिवारों में यह समानता नहीं पायी जाती, अत: एकाभिभावक व पनु:विवाहित परिवार में हर एक जैविक व गैर जैविक सम्बन्धों को पहचानना बहुत ज़रुरी है।

बारबारा और जेकब को देखिये। उनके परिवार के सम्बन्धों में नौ अलग-अलग मुख्य कुंजियाँ है: (1) बारबारा के बच्चों के साथ उनके पिता, (2) बारबारा उसके बच्चों के साथ, (3) बारबारा और जेकब खुद, (4) जेकब और उसके बच्चे, (5) जेकब के दो बच्चे जो अपनी माँ के साथ न्यूयॉर्क में रहते हैं, (6) जेकब का तीसरा बच्चा जो अपनी माँ के साथ सेटल में रहता है, (7) बारबारा और उसका जेकब के तीन बच्चों के साथ में सम्बन्ध, (8) जेकब का बारबारा के बच्चों के साथ सम्बन्ध और आखिरी सम्बन्ध, (9) उन बच्चों के बीच हैं जो अभी मिलना बाकि है।

इनमें से प्रत्येक सम्बन्धों ने कभी न कभी बारबारा व जेकब के आपसी सम्बन्धों को मज़बूत होने से रोका है। बारबारा और जेकब को अपने विवाह को शान्तिपूर्वक बनाये रखने के लिए एक दूसरे को समझना और सन्तुष्ट करना ज़रुरी है।

दूसरा, जैसे ही बारबारा और जेकब अपने पारिवारिक सम्बन्धों को समझ जाते हैं, तो ये सम्बन्ध बारबारा और जेकब के लिए विरोध करने के लिए नहीं बल्कि गृहण करने की ज़िम्मेदारी बन जाते हैं। बारबारा या जेकब को इनमें से किसी भी सम्बन्धी को अस्वीकार नहीं करना चाहिये और न ही इसका विरोध करना चाहिये। उन्हें अपने नये परिवार के प्रत्येक सदस्य का आदर करने में एक आदर्श बन जाना चाहिये।

सहमतियों व नये सम्बन्धों को स्वीकार करने का मतलब है कि अभिभावक और नये अभिभावक दूसरे अभिभावक व नये अभिभावक को उनके सम्पूर्ण अधिकार दे रहे हैं। स्वीकार करने का अर्थ है कि वे दूसरे व्यस्कों को अपनी सहूलियत के अनुसार जीवन जीने की आज़ादी देते हैं। स्वीकार करने का अर्थ पुष्टि करना नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि अभिभावकों का एक जोड़ा; दूसरे जोड़े के बच्चों को पालने की शैली को ठीक मान ले या उनकी जीवन शैली को हमेशा ठीक ही कहें। परन्तु उन्होंने और उनके बच्चों ने अपने शारीरिक माता-पिता के उस स्थान का आदर करना चाहिये, चाहे वे कमाते हो या नहीं। हर एक अभिभावक व नये अभिभावकों को महत्वपूर्ण तथा अपने बच्चों का शुभचिन्तक समझा जाये।

आप माने या नहीं आप अपने परिवार के दूसरे बच्चों के परिवार को प्रेम करते हैं, अपने बच्चों व आपके अपने नये अर्थात पुन:विवाहित परिवार की भलाई के लिए परिवार के प्रत्येक रिश्ते को पहचानना और उनका एक साथ होना बहुत ज़रुरी है।

पतरस लिखता है, ''बुराई के बदले बुराई मत करो, इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिए बुलाये गये हो'' (1 पतरस 3:8, 9) बाइबल बारबारा व जेकब से कृपालु सहायता करने वाला व एक दूसरे की चिन्ता करने वाले बनने के लिए; तथा अपने बच्चों को भी ठीक यही संस्कार बताने के लिए कह रही है।

आपकी जानकारी के लिए इस लेख के लेखक के अपने ही सौतेले या पुन:विवाहित परिवार में करीब 23 सदस्य या रिश्ते हैं जो बारबारा व जेकब के रिश्तों में पाये जाने वाले व रिश्तों से कहीं अधिक है। जब हम यह कह रहे हैं कि प्रत्येक रिश्ते का पहचानना और उन्हें स्वीकार करना ज़रुरी है जाक हम मज़ाक नहीं कर रहे हैं।

## धारणा

प्रथम विवाहित परिवार में लोग एक ही विचारधारा को बाँटते हैं- कि वे सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं।

परन्तु जो लोग एकाभिभावक व पुन:विवाहित लोग हैं, उनके विचार समान नहीं होते। यहाँ तक कि माता-पिता व उनकी खुद की सन्ताने अलग-अलग तरीके से सोचती हैं। सम्बन्ध छोड़ चुकि माँ अपने पहले पति को कोई पहचान या आदर नहीं देती हैं परन्तु उसका पुत्र अपने पिता को सम्पूर्ण आदर व महत्व देता है। नवविवाहित पति अपनी पत्नी को अपने परिवार का हिस्सा मानता है परन्तु उसकी बेटी सोचती है कि यह औरत मेरी माता नहीं है।

यही धारणाएं व्यवहार को परिभाषित करती हैं (नीतिवचन 23:7) जिस तरह बच्चे सोचते हैं, माता-पिता सोचते हैं उनके व्यवहार को निर्धारित करता है। फिर भी, माता-पिता होने के नाते हम नहीं चाहते हैं कि हमारे बच्चे हमसे अलग सोचें या व्यवहार करें। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों के विचार हमारे जैसे ही हों और जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हो वह उनके लिए भी हो। जब वे ऐसा नहीं करते, तो हम उनका विरोध करते हैं। यहाँ तक कि प्रेरित पौलुस ने अपनी एक कलीसिया से कहा ''मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हूँ। इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो'' (1 कुरिन्थियों 4:15, 16)।

## मिश्रितकर्ता पात्र में जीवन, सेवा हेतू साधन

निम्नलिखित वैब साइटस मिश्रित परिवारों के सेवकाई व साधनों को मुहैय्या कराती हैं:

*InStep Ministries*
http://www.instepministries.com/
*सफल सौतेले परिवार*
http://www.successfulstepfamilies.com/
*विस्फोटक पुन:विवाहित परिवारों का निर्माण*
http://designingdynamicstepfamilies.com/

यही समस्या यीशु मसीह व उसके माता-पिता के बीच उठ खड़ी हुई। लूका 2 में बिना मरियम व युसुफ की जानकारी के, जवान यीशु रुक गया और तब तक अपना समय मन्दिर में वार्तालाप करने में बिताया, जब तक उसके माता-पिता ने उसको ढूँढ नहीं लिया। इन शब्दों को गलत न समझें; जब उन्होंने यीशु को पा लिया, तक मरियम ने उससे कहा, ''पुत्र तूने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूँढ़ते थे?'' उसने उनसे कहा, 'तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे कि अपने पिता के भवन में होना अवश्य है?'' (48, 49 पद)

इनकी धारणाओं को देखें? और उन लोगों के व्यवहार में फरक को देखिये? मरियम कहती है कि ''तेरा पिता और मैं... ।'',

यीशु ने कहा, मुझे अपने पिता के काम या भवन में होना ज़रुरी है। देखिये यीशु और मरियम ने जब पिता शब्द का इस्तेमाल किया तो दोनों ही अलग अलग लोगों को व्यक्त कर रहे थे। मरियम युसुफ के बारे में बोल रही थीं। जबकि यीशु अपने परमेश्वर पिता के बारे में।

यदि यीशु का परिवार अलग प्रकार का विचार धाराओं और व्यवहारों के चलते अस्त व्यस्त था, तो हमारे लिए उन परिवारों की दशा को समझना मुश्किल नहीं है जो एकाभिभावक व पुन:विवाहित परिवार हैं।

लोगों के मनों के अलग-अलग विचार गम्भीर रूप से बारबारा व जेकब के नये परिवार को प्रभावित कर रहे हैं। आप एक ही परिवार में एक दूसरे का विरोध करने वाले विचारों के लोगों को देखिये: अभिभावक एक दूसरे का विरोध करते हैं; पूर्व संगी आपस में एक दूसरे का विरोध करते हैं, बच्चे अपने अभिभावकों से झगड़ते हैं। ऐसी तनावपूर्ण स्थिति ही एक जन की है विशेष करके बच्चों की।

इसका समाधान क्या है?

एक दूसरे को पहचाने और उनके विचारों का आदर करें। एक सूचि तैयार करें कि किस तरह से इस नये परिवार के सदस्यों को एक दूसरे को प्रतिउत्तर देने की ज़रुरत है। और उसके बाद व्यस्कों ने इन विचारें को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिये। यह कार्य किसी की भी सोच से ज़्यादा मुश्किल है।

उदाहरण के लिए, बारबारा और जेकब इस तथ्य को पहचानेंगे कि बारबारा के बच्चों को माता-पिता दोनों के ही प्यार करने की ज़रुरत है, और उसके साथ-साथ वे जेकब के प्रति भले हो और उनका आदर करें। इसके बाद इन विचारों को हकीकत बनाने के लिए वे भरसक प्रयास करें। बारबारा निश्चय ही अपनी बेटियों से अपने सम्बन्धों को मज़बूत बनाने का प्रयास करेंगी परन्तु उन्होंने बच्चों के सम्बन्ध को पिता के साथ मज़बूत करवाने का भी प्रयास करना है। उधर जेकब अपनी तरह से पूरा प्रयास करेगा कि बारबारा व उसकी बेटियों का आपसी सम्बन्ध फिर से घनिष्ठ हो जाये। वह अपनी सौतेली बेटियों का उनके पिता के साथ भी घनिष्ट सम्बन्ध बनाने में मदद करेगा। और बारबारा के मार्गदर्शन व जेकब के नम्र व्यवहार के कारण, शायद बेटियाँ जेकब को अपने परिवार के एक हिस्से के रूप में स्वीकार कर लें।

बारबारा को अपने आप को जेकब व उसके बच्चों के विचारों की दासी समझना चाहिये। उसे

जेकब और उसके बच्चों के बीच दूरी व नफरत को दूर करने के लिए अपनी तरफ से भरसक प्रयास करना चाहिये। उसने न्यूयॉर्क व सेटल जाने की इच्छा व्यक्त करनी चाहिये जिससे वह जेकब के बच्चों से मिल सके। वह जेकब व उसकी पूर्व-पत्नियों के बीच सम्बन्धों को पुन:स्थापित करने की लम्बी प्रक्रिया को शुरू करने में सहायता कर सकती है; या कम से कम उन्हें जानने का प्रयास कर सकती है।

दो अच्छे पालन-पोषण करने वाले (अभिभावक) एक सौतेले या पुन:विवाहित परिवार को उजाड़ सकते हैं। संगियों के बीच में, कैसे बच्चों का पालन पोषण करने के मुद्दे पर ज़्यादा सहमति को न बनाने से सम्भ्सवत:एक अच्छे पुन:विवाहित परिवार का निर्माण हो सकता है।

अभिभावक अनुशासन को अलग रखने के लिए प्रसिद्ध होते है: सौतेले अभिभावक अत्याधिक माँग करने के लिए। सही हो या गलत हो, बच्चों के अभिभावकों ने इन बातों पर नियन्त्रण करना चाहिये कि वे किस प्रकार से उसके/उसकी बच्चे को पालेंगे। यदि अभिभावकों की पालन पोषण करने की योग्यता निम्न स्तर की है और वे पालन-पोषण करने से इनकार करते हैं तो उनके पास इसे छोड़ और कोई विकल्प नहीं कि वे उस ज़िम्मेदारी को उस बच्चे के दूसरे आधे माता-पिता को सौंप दें। यहाँ पर पोषण न करने का अर्थ यह है कि वे ज़िम्मेदारियों से पीछे हटकर उस लड़के/लड़की के माता-पिता को पूरा नियन्त्रण रखने का अवसर दें।

पालन-पोषण करने में दूसरे को मौका देना सौतेले माता-पिता के बीच एक बड़ा मुद्दा है। समय समय पर हमने यह देखा है कि पुन:विवाहित लोग अपने अच्छे खासे परिवार को, लचीले न होने व दूसरे को पालन करने का अवसर न देने की वजह से, उजाड़ देते हैं।

यीशु इस प्रकार के लचीलेपन के आदर्श उदाहरण हैं। यीशु एक मसीह और एक राजा हैं: फिर भी राजा होने के अधिकारों का इस्तेमाल नहीं किया।

बल्कि उन्होंने उसका उल्टा किया। पौलुस कहता है कि यीशु ने खुद को शून्य कर दिया; और एक सेवक, मनुष्य का रूप धारण कर लिया। उसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा (मत्ती 12:20, फिलिपियों 2:7)।

क्या बाद में बने अभिभावक इस उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं? क्या इस तरह के अभिभावक पालन-पोषण करने के अपने कानूनी अधिकारों से अपने कदम पीछे हटाकर, एक दास/दासी का रूप धारण कर सकते हैं, और अपने साथी की पालन करने की योग्यताओं के प्रति खुद को समर्पित कर सकते हैं। क्या सौतेले माता-पिता अपने सौतेले बच्चों पर बजाय हुकुम चलाने के उन्हें आत्म बलिदान चढ़ाने व सेवा करने के द्वारा उनके हृदयों को जीत सकते हैं?

बारबारा और जेकब खुद को इसी घबराहट में पाते हैं। बारबारा ने अपने भीतर अच्छा पालन पोषण करने की योग्यता को उत्पन्न कर लिया है। क्या जेकब उसे यह ज़िम्मेदारी स्थानान्तरित करने के लिए तैयार होगा? जेकब के लिए क्या समाधान है?

जिस आदर्श का अनुसरण जेकब को करने की ज़रुरत है वह दादा या दादी का उदाहरण है: जहाँ पर माता-पिता सारे ज़रुरत के काम को करते हैं और दादा, दादी लोग बच्चों के साथ आनन्द मनाते हैं। जेकब एक दादा की भूमिका निभा सकता है जो पालन-पोषण की सारी ज़िम्मेदारियों से मुक्त हैं। इससे बारबारा को बिना किसी हस्तक्षेप के बच्चे पालने में सहायता मिलेगी। यदि बच्चों को लेकर कोई समस्या खड़ी होती है तो बारबारा उसकी ज़िम्मेदार होगी। दूसरी ओर जेकब अपनी सौतेली बेटियों के साथ में आनन्द मनाना सीख सकते हैं। वह उनकी बेटियों को जैसी भी वे है चाहे भली या बुरी अवस्था में स्वीकार करना, व उनकी परवाह करना सीख सकते हैं। वह बारबारा के सर्वोत्तम उत्साहित करने वाले साधन बन सकते हैं।

यीशु मसीह को उदाहरण बनाते तथा दादा या परदादा के विचार को आदर्श मानते हुए जेकब को सकारात्मक व परिवार में अनुग्रह व चंगाई लाने वाला बन जाना चाहिये।

## निष्कर्ष

पाप आज हमारे समाज के परिवारों में अपना कहर बरपा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप एकाभिभावक व पुन:विवाहित परिवार आपकी कलीसिया के मुख्य भाग बनते जा रहे हैं। आपको इस प्रकार के परिवारों में निर्माणकारी ठंग से इन बढ़ती पारीवारिक रीतियों के साथ कार्य हेतू खुद को पुन:शिक्षित करना होगा।

इस सन्दर्भ में ज्ञानपूर्वक देखभाल और बुद्धिमानी के साथ सहायता की अत्याधिक ज़रुरत पड़ती है। ये परिवार टूटे हृदयों वाले परिवार हैं: उन पर लगातार क्रूर अत्याचार होता रहा है। ये वो विशेष लोग हैं जिन पर परमेश्वर सबसे पहले अपनी करुणा प्रगट करना चाहता है, और उन्हें कभी नहीं छोड़ता। सेवकाई का यह क्षेत्र पक चुका है और कटनी के लिए तैयार है। परन्तु मज़दूर थोड़े हैं।

आओं हम चौराहों और राजमार्ग तक जाए ताकि उसकी कलीसिया भर जाए। ■

## डोनाल्ड आर पार्टरिज़

*Ph.D., प्लीसैन्टोन, कैलिफोर्निया में पारिवारिक खोज व शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण केन्द्र के संस्थापक व मार्गदर्शक हैं। वे और उनकी पत्नी जैनेटा सात बच्चों के साथ अपने सफल मिश्रित परिवार के सफल पुन:विवाहित अभिभावक हैं। उनके द्वारा लिखित नयी पुस्तकें, ''अपने नये परिवार को प्रेम करना'', ''अपने मिश्रित परिवार को कार्यरत करने की कला'' एकाभिभावक व पुन:विवाहित परिवारों के लिए जानकारी व सलाह मुहैय्या कराती है कि कैसे ये परिवार सन्तुष्ट सम्बन्धों कोस्थापित कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए www.blendingfamily.com. पर सम्पर्क करें।*

# एक बरनाबास बने, एक पौलुस को खोजें, एक तीमुथियुस को प्रशिक्षित करें

**पौल आर मार्टिन के द्वारा**

इस असम्बद्धीकरण में बड़ते व पूर्ण समय की सेवकाई में घटती संख्या के इस संसार में यदि सेवकाई विकास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों पर पुन: नजर डालें तो कोई अचम्भा नहीं होगा। प्रशिक्षक, छोटे समूह, झुण्ड, व उत्तरदायी समूह जैसे शब्द केवल अर्थपूर्व सम्बन्धों के अभाव के परिणाम स्वरुप सामने आये हुए मुद्दों के लक्षण हैं।

सेवकाई के लिए खुले तथा भरोसेमन्द सम्बन्ध की ज़रुरत पड़ती है। अनुचित एहसास, व्यवहार, बुरा स्वभाव तब प्रारम्भ होता है जब हम अपनी गुप्त बातों को छुपाने का प्रयास करते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जितना हम स्वीकार करते हैं, यह परमेश्वर के जन को आत्मिक रूप में उससे ज़्यादा अपंग बना देता है।

शायद आज परमेश्वर की कलीसिया में सारे अगुवों के लिए यह बुलाहट होगी 'जाने और पहचाने जाएं'। यीशु के तीन ज़्यादा घनिष्ठ चेले थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस के अपने सेवकाई के साथी थे। जौन वैस्ली के पास एक पवित्र क्लब था, जिसमें अनेकों तहकीकात करने वाले प्रश्न शामिल थे अत्यधिक गहराई तक जाते थे, ''आपमें से कितने दौड़ रहे हैं? आपके गौल्फ में कितने अंक हैं?'' मैं बहतु सी बार सोचता हूँ, कि मुझे वास्तव में कौन जानता है, मेरी भावनाओं, मेरे दु:खों और मेरी असफलताओं को?

बहुत से पासबान समझते हैं उनके कि पास लम्बे समय के उत्तरदायित्व का सम्बन्ध है। परन्तु ज़्यादातर मामलों में सच्चाई यह है कि जिन बातों को स्वेच्छा से बाँटा जाता है वे ही बातें सामने आती हैं। बहुत से लोग सुरक्षा के नज़रिये से बड़े मंच की चाह करते हैं, जबकि दूसरे लोग छोटे समूहों में शामिल हो जाते हैं।

जवाब देही किसी भी निश्चित सम्बन्ध पर आधारित नहीं होती, क्योंकि खुद सम्बन्धों में उत्तरदायी होने की योग्यता नहीं पायी जाती। हमें खुद को उत्तरदायी बनाना चाहिये। जब तक कि कोई स्वेच्छा से दूसरे के अधीन नहीं होता, तो छल कपट भरे जीवन की गुंजाइश बनी रहती है। पारदर्शिता, खुलापन, ईमानदारी, और इस प्रकार की बातें तब तक किसी के जीवन में नहीं आ सकती; जब तक उनके अन्दर परमेश्वर के भय का बोध नहीं होता।

इन दिनों में जबकि बहुत से मसीही अगुवे प्रबल गिरावट में हैं, शायद कुछ आधारभूत सेवकाई में सम्बन्धों के सिद्धान्त परिस्थितियों को बदलने में उनकी सहायता कर सकें। कम से कम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाये जाने वाले तीन मुख्य सम्बन्धों को अपना आधार बना सकें। शायद प्रार्थना के साथ इन आदर्शों का उपयोग करने तथा अपने सेवकाई के सम्बन्धों का आत्मविश्लेषण करने से पवित्र आत्मा हमारे जीवन की सच्चाई को ज्योर्तिमय बना सके। और परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा, मसीही अगुवों के बीच होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

## एक बरनाबास बनें

यह विचारयोग्य बात है कि बरनाबास नहीं होता तो क्या पौलुस यह सब कर पाता। अवश्य ही दमिश्क की धूल पौलुस के जूतों में ज़रुर होती। पौलुस के हत्यारे होने का भय, दमिश्क के लोगों के बीच उस समय एक हकीकत था जब बरनाबास, पौलुस को प्रेरितों के पास ले गया और उसकी गवाही के सच होने की ज़िम्मेदारी ली (प्रेरितों 9:26 ,27)। बरनाबास को ऐसा करने के लिए कोई मज़बूरी नहीं थी, परन्तु प्रोत्साहन के इस कार्य ने, पौलुस और

उसकी बुलाहट के पूरा होने के बीच बड़ा ज़रुरी व महत्वपूर्ण कार्य किया। कई वर्षों के पश्चात बरनाबास को पवित्र आत्मा द्वारा पौलुस को देखने के लिए उकसाया गया (प्रेरितों के काम 11:25)। इसमें कोई शक नहीं कि दमिश्क के मार्ग की गवाही बहुत से लोगों के द्वारा भुला दी गयी, परन्तु बरनाबास उसे नहीं भूला।

बरनाबास, जैसा उसके नाम का अर्थ है, हमेशा अपनी सेवकाई के अन्दर किसी न किसी को प्रोत्साहित करने की खोज में लगा रहा। तरसुस के टैन्ट बनाने वाले को स्थापित कलीसियाओं द्वारा नज़रअन्दाज किया गया और उसे सेवकाई के कार्य के लिए तुच्छ जाना गया। परन्तु बरनाबास ने उसे स्मरण रखा। और बरनाबास के प्रभाव के कारण ही, अन्ताकिया की कलीसिया ने पौलुस को स्वीकार करके, भरोसेमन्द सम्बन्ध बनाने तथा आदरणीय शिक्षा की सेवकाई प्रारम्भ करने में सहायता की (प्रेरितों 11:26, 13:1, 2)।

यही ही केवल एक घटना नहीं है जब बरनाबास ने अपनी तरफ से पहल की। क्या आपको मरकुस यूहन्ना (प्रेरितों 15:37) याद है? अपने नाम की या भूतकाल में असफलताओं की परवाह किये बगैर, बरनाबास वहाँ मौजूद था।

आज कितने ही ऐसे सेवकों को आधुनिक बरनाबासों की ज़रुरत है जो उनके साथ खड़े हो और उन्हें सेवकाई के अवसर प्रदान करें? आज कितने सेवक असफलता के कारण उदास होकर सेवा से बाहर बैठे हैं? उनकी कलीसियाएं नहीं बड़ीं। उनको वहाँ पर बनाये रखने के लिये पर्याप्त वोट नहीं मिले। उनका कार्यक्रम बहुत खराब था। विवाह या पारिवारिक सम्बन्ध टूट गये। प्रथम शताब्दी के बरनबास के जैसे भाई और बहन कहाँ हैं जो भूले हुओं पर ध्यान दें, जो परमेश्वर की बुलाहट पर विश्वास कर सके, और हमेशा अच्छे परिणाम की आशा कर सके?

21वीं शताब्दी को बहुत से बरनबास की मानसिकता वाले लोगों की आवश्यकता है। बुलाहट को त्याग देना सार्वभौमिक समस्या है। एक बरनबास बने। दूसरों की सफलता की परछाई में, चुपचाप कार्य करने वालों का बलिदान छुपा है। ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़े जो असफल हो गया हो या निराश हो। एक बरनाबास बने। हमारे प्रभु के सेवकों को बनाए रखने से निश्चय ही सम्पूर्ण समय की सेवकाई करने वालों की संख्या की कमी को उलटने में सहायता मिलेगी।

## पौलुस की खोज करे

आज प्रशिक्षण देने के बारे में बहुत सी बातें कही जा चुकीं हैं। परन्तु ज़रुरत निसन्देह ही, 21वीं शताब्दी की सामाजिक सच्चाइयों से रुह-ब-रुह होने की है। टूटे हुए घरों में जहाँ पर पुत्र और पुत्रियों का सम्बन्ध अपने पिता से दूर है, या न के बराबर है, निश्चय ही उन पर अगुवाई का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पुराने ज़माने में पुत्र अपने पिता के साथ-साथ कार्य किया करते थे, केवल अलग-अलग गुणों को सीखना ही नहीं बल्कि व्यवहार व रिश्तों के मूल्यों को भी सीखते थे। आज यह सब कहाँ होता है? बच्चे केवल कक्षा में सिद्धान्तों को सीख रहे हैं?

असली जीवन प्रयोगशाला के लिखित सिद्धान्तों से अलग होता है। केवल शिक्षा किसी को उसके जीवन के लिए तैयार नहीं करती। जिस प्रकार से एक हवाई जहाज के दो पंख होते हैं उसी प्रकार से ज्ञान और उसके प्राकृतिक उपयोग में सन्तुलन होना चाहिये।

नये नियम में उन लोगों की सूचि के बारे में सोचें जो प्रेरित पौलुस के द्वारा प्रभावित हुए। क्या यह कार्य तीतुस, ओनिसियम, लूका और सिलास के लिए पाठशाला की कक्षाओं में हुआ था? शायद नहीं। बल्कि उनको बुनियादी वचन की सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक शिक्षा तब दी गयी जब प्रेरितों का दल एक शहर से दूसरे शहर में प्रचार करने के लिए गया।

21वीं शताब्दी के वह पौलुस कौन हैं जिस पर आप काम कर रहे हैं? आकड़े बताते हैं कि औपचारिक कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षण का कार्य ठंग से नहीं किया जाता। प्रशिक्षण तब बेहतर ठंग से कार्य करता है जब शिक्षा जीवन के भीतर प्रगट रूप में कार्य करती है।

''क्या आप मुझे सिखायेंगे?'' शायद यह सही सवाल नहीं है। शिक्षा का कार्य तब होता है जब हम देखते, सुनते, सेवा करते, अनुसरण करते, सीखते, पढ़ते और ग्रहण करते हैं।

एलिशा के समय में इस प्रक्रिया ने अपना स्थान लिया जब ''वे दोनों साथ-साथ चले'' (2 राजा 2:6)। ''यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे नहीं छोड़ने का,'' एलिशा के भीतर एलिय्याह का अनुसरण करने का दृढ़ संकल्प था।

हर एक सेवक को किसी न किसी व्यक्ति का अनुसरण करने की ज़रुरत है जो उसके जीवन या सेवकाई के क्षेत्र को उत्तम बनाता है। 21वीं शताब्दी को तकनीक तथा यातायात साधनों के लिए धन्यवाद जिसके तहत लिपी मीडिया-पुराने या नये- टेप, साक्षात्कार के सी.डी, इन्टरनेट, सम्मेलनों, और नेटवर्किंग के द्वारा कोई भी सेवक चाहे वो जहाँ भी रहता हो किसी भी जगह पर दूसरे मसीही अगुवे से सम्पर्क कर सकता है।

शिक्षा देना या प्रशिक्षित करना कोई ऐसा काम नहीं है जो कोई एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए कोई काम करता है; परन्तु यह तो दूसरे के जीवन व सेवकाई को ध्यान और नज़दीक से देखने या खोजे जाने का परिणाम है। अत: किसी पौलूस को खोजें। अपने चारों ओर देखें। किसी ऐसे व्यक्ति पर, जिसका आप आदर करते हैं उसके साथ जुड़ जायें। प्रार्थना में परमेश्वर से कहें कि वह आपकी अगुवाई किसी ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति के पास करे जो आपके औपचारिक जीवन पर प्रभाव डाल सकें। किसी का अनुसरण करना या पीछे पड़ना केवल छोटी उम्र के सेवकों का कार्य ही नहीं है। जीवनभर सीखने के द्वारा हर एक व्यक्ति लाभ उठा सकता है। एक पौलुस की तलाश करें। शायद इससे सेवकों की गिरावट दर समान्य दशा में आ जाए।

## एक तीमुथियुस को प्रशिक्षित करें

हम नये नियम के अन्दर मुख्य सेवकाई-विकास सम्बन्ध को देखते हैं जो प्रशिक्षण में शामिल होना है। जब एक सेवक के तौर पर आप, किसी इच्छुक व प्रेरणा प्राप्त अनुयायी को पाते हैं तो, समय निकालकर उस व्यक्ति के साथ समय बिताए व उसे प्रशिक्षित करें।

प्रशिक्षण एक चक्र के समान प्रक्रिया है जिसमें निर्देश, उनका इस्तेमाल किया जाना, ध्यान से देखना, तथा मूल्याँकन शामिल होता है। प्रशिक्षण हमें आगे अवसर प्रदान करता है ताकि हम मूल्याँकन करते हुए शिक्षाओं का अवलोकन व इस्तेमाल कर सकें, तथा जिसके बाद इस चक्र को निरन्तर आगे बढ़ाने के लिये आवश्यक निर्देश दिये जाते हैं।

आज सेवकों के लिए एक उद्देश्यपूर्ण प्रशिक्षण की अति आवश्यकता

## शिक्षकों की क्षमताशाली खोज

हो सकता है कि आप सोच रहे हों कि आपको एक व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए अलग कर दिया गया है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें जो आपकी स्वयं अपना मूल्याँकन करने में सहायता करेंगे:

- क्या आप एक धीरजवान व्यक्ति है? क्या आप चीज़ों को दूर के नज़रिये से देखते हैं?
- आपकी क्षमता का क्षेत्र क्या है? आप किन-किन कार्यों को कर सकते हैं और आप किन कामों में निपुण हैं?
- आप आन्तरिक मामलों में कैसे हैं? क्या आपका दूसरों से सम्बन्ध हमेशा स्वस्थ रहता है?
- क्या आप किसी प्रक्रिया के तहत कार्य करने वाले व्यक्ति हैं? जब लोग लम्बे समय में विकास करते हैं तो क्या आप उनके साथ बने या जुड़े रहते हैं?
- क्या आप जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं?
- क्या आप दूसरों की बढ़ौतरी के लिए ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हैं?
- क्या आपका चरित्र आदर्श चरित्र हैं? क्या परमेश्वर किसी और से आपके चरित्र, व्यवहार, स्वभाव, मूल्यों भाषा तथा आपकी तमीज़ का अनुसरण करने के लिए कह सकता है?
- क्या आप दूसरों के लिए समय निकालने हेतू इच्छुक हैं?
- क्या आपके जीवन में कोई ऐसा पाप या परिस्थिति है जिसे आपने नहीं बताया है और जिसके कारण आपका सम्बन्ध दूसरों से खराब हो सकता है?
- क्या आपने अपने जीवन का सारा अधिकार यीशु को दिया है? क्या आप बुनियादी तौर पर अपने जीवन के हर क्षेत्र में उसका आदर करने के लिए समर्पित हैं?

*यह लेख हौवार्ड व विलियम हैंडरिक द्वारा लिखित 'लोहा, लोहे का तेज़ करता है' से (मूडी प्रेस 1995) अनुमति प्राप्त करने के बाद लिया गया है।*

है। अतिरिक्त गुणों को सीखने तथा क्षमताओं को और अधिक चमकदार बनाने की ज़रुरत है। बहुत से तीमुथियुसों को वर्तमान में बहुतायत से उनके प्रभाव में बढ़ौतरी करने की आवश्यकता है। उन्हें उत्तम स्तर पर-प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है।

प्रारम्भिक परिणाम शायद यह हो कि जवान सेवक प्रशिक्षित व अधिक प्रभावशाली होगा, और बहुत सी बातें इसके द्वारा फलों के रुप में अपने आप होगी। इसका फायदा प्रशिक्षण देने वाले व्यक्ति को भी पहुँचता है। जैसे जैसे अध्यापक सिद्धान्तों को बाँटते हैं, उन अध्यापकों के मन और हृदय में यह सारी बातें और अधिक प्रकाशित होती हैं, अत: सिखाने वाले का विश्वास और अधिक मज़बूत होता है। इसके अलावा, उन सिद्धान्तों को सिखाने वाले के लिए खुद उन्हें अपने जीवन में लागू करना एक उत्तरदायित्व बन जाता है; ''ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ'' (1 कुरिन्थियों 9:27)।

उससे भी बढ़कर जब शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात परमेश्वर के कार्यों में प्रभावशाली ढंग से कार्य करेंगे तो प्रशिक्षक का हृदय जिसने अपना समय और ताकत उनमें लगायी है, अति आनन्द से भर जाएगा। बुज़ुर्ग प्रेरित यूहन्ना अपने मित्र गायुस को लिखता है ''मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि मैं सुनूँ कि मेरे बच्चे सत्य पे चलते हैं'' (3 यूहन्ना 1:4)।

जिस प्रकार से एक प्रशिक्षित मैराथन के घातक से दौड़ को पूरा करने की अधिक उम्मीद होती है उसी प्रकार एक प्रशिक्षिण सेवक के पास लम्बे समय तक सेवकाई में बने रहने का अधिक मौका होता है। इसलिए एक तीमुथियुस को प्रशिक्षित करें। इसके अतिरिक्त दूसरों को अनुशासित जीवन का प्रशिक्षण देने की प्रक्रिया से अपने जीवन में उन सच्चाईयों को लागू करने के क्षेत्र में फायदा हो सकता है। इससे हमारी सेवकाइयों में उत्तरदायित्व व आनन्द जुड़ जाता है।

### निष्कर्ष

यदि प्रत्येक सेवक एक बरनबास बने पौलुस के पीछे जाये और तीमुथियुस को तैयार करे तो जितने भी सेवक निराश होकर सेवकाई से अलग हो गये हैं पुन: सेवा के कार्य में लग जायेंगे। लोगों को शिक्षा देने हेतू पीछे पड़ते समय सेवक खुद भी एक विद्यार्थी के रूप में लम्बे काल की सेवा के लिए उपयुक्त तौर से तैयार होंगे। जब जवान सेवकों को प्रशिक्षण दिया जायेगा तो वह और प्रभावशाली ढंग से सेवा के लिए तैयार होंगे। और जो स्वेच्छा से प्रशिक्षण प्रदान कर रहे होंगे वे उत्साहित होंगे व अपने लिए भविष्य में पुरस्कार को इकट्ठा कर रहे होंगे ''ताकि वह ईनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:14)।

जितने ज़्यादा हमारे पास तैयार व लम्बे समय की सेवा करने वाले सेवक होंगे, उनका गिरती हुई सेवकों की संख्या पर उतना ही सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसलिये एक बरनबास बने पौलुस का पीछा करे व तीमुथियुस को प्रशिक्षण करें। ■

*पौल आर मार्टिन, असेम्बली ऑफ गॉड, रौकफोर्ड, इलिनोइस के मुख्य पासबान तथा असेम्बली ऑफ गॉड इलिनोइस जिले के पूर्व सुपरिटेन्डेन्ट रह चुके हैं।*